मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 64 | अंक : 04 | अक्टूबर, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

"विभागीय नवाचार फ्लैगशिप कार्यक्रम Mission START 2023-24 का आगाज 05 सितम्बर 2023 को हो चुका है। यह कार्यक्रम कक्षा 9 से 12 में उन विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है जहाँ शिक्षकों के पद रिक्त है अथवा शिक्षक किसी कारण से लम्बे अवकाश पर है। ऐसे विद्यालयों में विद्यार्थियों को संबंधित विषय के ई-कॉन्टेंट का उपयोग लेते हुए अध्यापन, डिजिटल संसाधन यथा स्मार्ट टीवी, स्मार्ट बोर्ड आदि की उपलब्धता का आंकलन कर किया जा रहा है।"

सकारात्मक चिन्तन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को मैंने बहुत पढ़ा और सुना है। वह बहुत ही सरल और निश्चल प्रवृत्ति के इंसान थे। वह हर परिस्थति में संयमित, अनुशासित एवं सादगी का पयार्य थे। उनके व्यक्तित्व की हर विशेषता हमारे लिए अनुकरणीय एवं आत्मसात करने योग्य है। अक्सर हम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपनी संपूर्ण ताकत लगा देते हैं। आवश्यकता होने पर यदि किसी का हम सहयोग लेते हैं तो यह हमारी मानसिक क्षमता का परिचायक है। शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के संयोग से आगे बढ़ा जा सकता है। हमारे प्रयास हमारी क्षमताओं का हिस्सा है। लेकिन सम्पूर्ण क्षमता नहीं है। किसी की मदद लेना व्यक्ति की सकारात्मक सोच का अंश है। यह एक मूक शक्ति है, इसका उपयोग प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

ईमानदार व्यक्तित्व के धनी पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी, गाँधी वादी विचारधारा के थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता को समर्पित रहा। उन्होंने देश के जवान एवं किसानों को उनके दायित्त्वों के प्रति उत्साहित करने के लिए "जय जवान-जय किसान" का नारा दिया। शास्त्री जी ने अपने आदर्शों एवं कार्यशैली से देश का मान बढ़ाया जिसके कारण आज हम सब गर्वित हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि यदि व्यक्ति ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठ भावना से काम करे तो साधनों के अभाव में भी उन्नति कभी बाधित नहीं होती। स्पष्टवादी एवं दृढ़निश्चयी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधकर समस्याओं के व्यवहारिक समाधान का प्रयास किया। अनगिनत युवाओं के आदर्श भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम का असाधारण व्यक्तित्व था। उनका मानना था देशवासियों को मिलकर मन की एकता को बनाए रखने के प्रयास करने होंगे इसके लिए आपस में विचारों की सहिष्णुता एवं मतान्तरों का सम्मान करना आवश्यक है। ऐसा करके ही प्रत्येक नागरिक के अधिकारों की रक्षा की जा सकती है। यदि आमजन इस सोच के साथ व्यवहार एवं कार्य करें तो निसंदेह राष्ट्र के एकत्व को संजीवनी मिलेगी और समाज के लोकतांत्रिक मूल्य सशक्त होंगे। भारतीय इतिहास के महापुरुषों के आदर्शों को व्यवहार में आत्मीकरण करके ही जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

अध्ययन में बेहतर करने का बोझ और तनाव आज हर विद्यार्थी पर भारी है। कई बार सफल होने के लिए किए गए प्रयासों में कुछ कमियां रह जाती है। ऐसे में व्यक्ति स्वयं को कमजोर समझता है। सुधार की संभावनाओं पर ईमानदारी से प्रयास करना होगा। विद्यालय में बच्चे पाठ्यक्रम पढ़ने के साथ-साथ व्यवहारिक अनुभवों से जिदंगी के पाठ भी पढ़ना सीखते हैं। यह बात अभिभावकों को भी समझनी जरूरी होगी। विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा ताकि युवा पीढ़ी हर प्रतिकूल परिस्थिति का सामना सकारात्मक चिन्तन के साथ कर सके।

विभागीय नवाचार फ्लैगशिप कार्यक्रम Mission START 2023-24 का आगाज 05 सितम्बर 2023 को हो चुका है। यह कार्यक्रम कक्षा 9 से 12 में उन विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है जहाँ शिक्षकों के पद रिक्त है अथवा शिक्षक किसी कारण से लम्बे अवकाश पर है। ऐसे विद्यालयों में विद्यार्थियों को संबंधित विषय के ई-कॉन्टेंट का उपयोग लेते हुए अध्यापन, डिजिटल संसाधन यथा स्मार्ट टीवी, स्मार्ट बोर्ड आदि की उपलब्धता का आंकलन कर किया जा रहा है। स्कूल आफ्टर स्कूल कार्यक्रम के तहत मिशन ज्ञान के साथ संयुक्त प्रयास करते हुए ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से बोर्ड कक्षाओं के महत्त्वपूर्ण विषयों का शिक्षण करवाया जा रहा है। मेरा विश्वास है शिक्षा विभाग के इन प्रयासों से विद्यार्थियों का विषय शिक्षण निरंतर जारी रहेगा। विद्यार्थियों की शंकाओं के समाधान से उनके अधिगम स्तर एवं परीक्षा परिणाम में भी गुणात्मक सुधार होगा।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

शब्द साधना

शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान कराना नहीं, बल्कि बालक को शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक रूप से सुदृढ़ बनाते हुए सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को स्पष्ट करते हुए कहा है- ''जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही शिक्षा वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है'' आशा है सभी गुरुजन शिक्षा के इस उत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कार्य कर रहे हैं।

युगपुरुष महात्मा गाँधी का जन्म दिवस 2 अक्टूबर सम्पूर्ण विश्व में अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। गाँधी जी ने अपने कथन-''सत्य और अहिंसा मेरे ईश्वर है।'' को वास्तव में जीया भी। उनका मानना था कि जहाँ सत्य है वहाँ ईश्वर है तथा नैतिकता इसका आधार है। अहिंसा का अर्थ है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। उनके अनुसार अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को कभी भी मानसिक व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुँचाता है। अपरिग्रह, सर्वोदय, स्वराज, ट्रस्टीशिप या न्यासिता के संबंध में दिए गए उनके सिद्धान्तों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में और बढ़ गई है।

2 अक्टूबर को लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्मदिवस है जिन्होंने सत्य की साधना को पद और प्रतिष्ठा से उच्च स्थान देकर शाश्वत नैतिक मूल्यों को स्वयं के जीवन में अवधारित ही नहीं किया अपितु मूल्यों के संरक्षण में अपने जीवन को न्यौछावर भी किया, ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व के सत्कार्यों को हमें अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। उनके समय में अकाल की स्थिति में प्रभावित आबादी को खिलाने के लिए देश में चल रही भोजन की कमी पर चर्चा करते हुए लोगों को स्वेच्छा से एक समय का भोजन छोड़ने की सलाह दी, लेकिन राष्ट्र से अपील करने से पहले उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सबसे पहले यह व्यवस्था अपने घर में लागू की जाए। उनकी इस सलाह का भारतीय जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ा तथा अधिकांश लोगों ने सप्ताह में एक दिन उपवास रखना शुरू कर दिया। शब्द को साधने की शक्ति उन्हीं लोगों में निहित होती है जो अपने जीवन में भी उसको चरितार्थ करते हैं। शास्त्री जी ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी थे।

05 सितम्बर, 2023 को शिक्षक दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय द्वारा ''मिशन स्टार्ट कार्यक्रम 2023-24'' का शुभारम्भ किया गया है जिसके अन्तर्गत दूरस्थ इलाकों के ऐसे विद्यालय जिनमें शिक्षकों के पद रिक्त है या विषयाध्यापकों की कमी है, उन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के अध्यापन के लिए आईसीटी लैब, कम्प्यूटर, स्मार्ट टीवी, इन्टरेक्टिव पैनल का उपयोग कर विभाग द्वारा निर्मित डिजिटल कंटेंट के द्वारा पढ़ाई करवाई जाएगी ताकि विद्यार्थियों की अध्ययन की निरन्तरता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़े।

इसी प्रकार विभाग द्वारा ''स्कूल आफ्टर स्कूल कार्यक्रम 2023-24'' का भी शुभारम्भ किया गया है, जिसमें बोर्ड कक्षा 10 व 12 के लिए विद्यालय समय पश्चात ई-कक्षा यूट्यूब चैनल द्वारा विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों का गुणात्मक शिक्षण करवाया जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यार्थी इससे लाभान्वित होकर अध्ययन में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करेंगे।

Zahida
(जाहिदा खान)

“स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को स्पष्ट करते हुए कहा है- ''जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही शिक्षा वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।'' आशा है सभी गुरुजन शिक्षा के इस उत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कार्य कर रहे हैं।”

सत्यमेव जयते

काना राम
आई.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

विद्यार्थी हित में नवाचार

त्सव धर्मी भारतीय संस्कृति में व्याप्त त्योहार समाज में चेतना स्फुरण के माध्यम है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के श्रेष्ठ शिखर की ओर अग्रसर होने के लिए शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि नवरात्र के अवसर पर समस्त शैक्षिक जगत शक्ति का आराधना कर शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा के साथ नौनिहालों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के पुनीत कार्य में अर्जित शक्ति का सदुपयोग करेगा।

महापुरुषों का जीवन मानव के कर्त्तव्य-पथ पर फैले निविड़ अंधकार को चीर कर आगे बढ़ने की दिशा में प्रकाश-पुंज का कार्य करता है। देश की युवा पीढ़ी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री के आदर्शों पर मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में धारण करे इस हेतु समस्त विद्यालयों में उनके जीवन से संबंधित प्रेरक प्रसंगों से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाए। मैं उम्मीद करता हूँ कि भावी पीढ़ी उनके जीवन-दर्शन व सिद्धांतों को आत्मसात कर आध्यात्मिक व मानसिक धरातल पर समृद्ध होकर सच्चरित्रता के साथ आगे बढ़ सकेगी।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान समारोह में राजस्थान के अलवर से आशारानी सुमन और जोधपुर से शीला आसोपा चयनित हुई। सम्मानित शिक्षिकाओं ने गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावशाली शैक्षिक वातावरण हेतु नवाचारी क्रियाकलापों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी हितार्थ सकारात्मक प्रेरणादायी प्रयास किए हैं जो अत्यन्त सराहनीय है। इस उपलब्धि के लिए सम्मानित शिक्षिकाओं को बधाई देने के साथ मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं मिशन ज्ञान के संयुक्त प्रयास से शिक्षक दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में ''स्कूल आफ्टर स्कूल'' द्वारा कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य को सुगम बनाने हेतु सप्ताह में 5 दिवस (सोमवार से शुक्रवार) प्रतिदिन सायं 4 बजे से 9 बजे तक ऑन-लाइन कक्षाओं का आरम्भ किया गया है। इसी प्रकार ब्लेंडेड मोड ऑफ लर्निंग के प्रयोग से Mission START 2023-24 कार्यक्रम के क्रियान्वयन से ऐसे विद्यालय जहाँ कक्षा 09 से 12 के विषयाध्यापकों के पद रिक्त हैं अथवा विषयाध्यापक लम्बे अवकाश पर हैं, वहाँ विद्यार्थियों को डिजिटल कॉन्टेंट के माध्यम से अध्ययन करवाया जाएगा।

"इसी प्रकार ब्लेंडेड मॉड ऑफ लर्निंग के प्रयोग से Mission START 2023-24 कार्यक्रम के क्रियान्वयन से ऐसे विद्यालय जहाँ कक्षा 09 से 12 के विषयाध्यापकों के पद रिक्त हैं अथवा विषयाध्यापक लम्बे अवकाश पर हैं, वहाँ विद्यार्थियों को डिजिटल कॉन्टेंट के माध्यम से अध्ययन करवाया जाएगा।"

प्रदेश के 300 महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल के विद्यार्थी ए.आई. की तकनीक से रूबरू होंगे। इसके लिए स्कूल में रोबोटिक्स लैब स्थापित की जाएगी। चयनित स्कूलों में विद्यार्थियों को रोबोटिक्स लैब में इलेक्ट्रोनिक्स, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और आई.टी. संबंधी उपकरणों एवं सेंसर्स के उपयोग के बारे में नयी तकनीक की जानकारी दी जाएगी।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाए। अस्तु! बुराई पर अच्छाई विजय प्राप्त करें, ऐसी विजयादशमी हम सभी के जीवन में प्रतिदिन आए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

आपका अपना

(काना राम)

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 64 | अंक : 4 | आश्विन-कार्तिक २०७९-८० | अक्टूबर, 2023

प्रधान सम्पादक
काना राम

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- सकारात्मक चिन्तन 2

मेरा संदेश
- शब्द साधना 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- विद्यार्थी हित में नवाचार 4

रपट
- राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2023 7
  सुनीता चावला
- 27वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2023 12
  सीमा शर्मा

आलेख
- गाँधी के सपनों का भारत 16
  डॉ. डी.डी. गौतम
- कविता : गाँधी जयन्ती 18
  शमीम अहमद
- गाँधी : एक जीवन्त विचार 19
  आशीष जिन्दल
- महान व्यक्तित्व : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 20
  राहुल परमार
- सपनों को नए आयाम देती बालिकाएँ 22
  मोहर सिंह मीना 'सलावद'
- सादगी के प्रतीक 'शास्त्री जी' 23
  सुनीता रेवाड़
- जेंडर समानता : हेल्थ एंड वेलनेस 24
  दिलीप कुमार प्रजापति
- कविता : एकता के प्रतीक सरदार वल्लभ भाई पटेल 24
  जगदीश चन्द्र शर्मा
- अन्तरिक्ष में भारत के कदम 32
  सोहनराम
- स्वास्थ्य और मोटा अनाज 34
  विमलेश चन्द्र
- शिक्षा के विकास में योगा का महत्त्व 35
  राजेन्द्र कुमार व्यास
- मिशन एजुकेशन : एक नवाचार 37
  डॉ. कोमल कांत शर्मा
- वैचारिक चिंतन : रविवार की छुट्टी 38
  सचिन ओझा
- भविष्य की शिक्षा पद्धति : ब्लेन्डेड एजुकेशन 40
  डॉ. तमन्ना तलरेजा
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति : भित्ति पत्रिका 42
  संजय कुमार

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2023 25-31
- शिविरा पञ्चाङ्ग : अक्टूबर, 2023 31
- बाल शिविरा 45-46
- शाला प्रांगण से 47-48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 49-50
  सुनीता मल्होत्रा
- हमारे भामाशाह 50-52

पुस्तक समीक्षा 43
- अड़तालीस कदम
  सम्पादक : डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी
  समीक्षक : **डॉ. संगीता पुरोहित**
- तरुशिखा
  कथाकार : कांता मीना
  समीक्षक : **राजेंद्र यादव आजाद**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary
मुख्य आवरण : आशीष राजोरिया

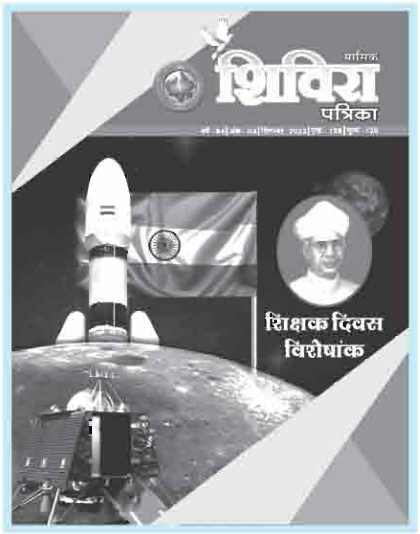

▼ चिन्तन

सर्वार्थसंभवो देहो जनितः पोषितो यतः।
न तयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मर्त्यः शतायुषा।।

-एक सौ वर्ष की आयु प्राप्त हुआ मनुष्य भी अपने माता पिता के ऋणों से मुक्त नही हो पाता है। जो देह चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्राप्ति का प्रमुख साधन है उसका निर्माण तथा पोषण जिनके कारण हुआ है, उनके ऋण से मुक्त होना असंभव है। इसलिए माता-पिता का कभी दिल न दुखाकर सर्वप्रकारेण उनकी सेवा-सुश्रुषा करनी चाहिए।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का सितम्बर अंक शिक्षक दिवस विशेषांक के रूप में हमें पढ़ने को मिला। पत्रिका का कवर पेज पसंद आया। राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का संदेश, माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला के विचार, राज्यमंत्री जाहिदा खान का मेरा संदेश और निदेशक महोदय काना राम का दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ, शासन सचिव स्कूल शिक्षा श्री नवीन जैन की पाती शिक्षकों के नाम पढ़ कर नई जानकारी मिली। शिविरा पत्रिका का यह अंक पढ़ कर अपार खुशी हुई। हमें विश्व पटल पर हिन्दी, बाल संसद, हिन्दी दिवस, गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन, रक्तदान महादान, कहानी बालमन लेखिका डॉ. संगीता पुरोहित की रचना बहुत पसंद आयी। बाल शिविरा सबसे ज्यादा मन मोहक लगी। शिविरा पत्रिका पढ़ कर हमारा ज्ञान, चिन्तन और जिज्ञासा बढ़ती है इसलिए मैं शिविरा पत्रिका नियमित पढ़ना चाहता हूँ। आप हमारी रचनाएँ प्रकाशित कर हमारा उत्साह बढ़ाते रहे। पत्रिका की संपादक डॉ. संगीता पुरोहित को इस विशेषांक के लिए साधुवाद देता हूँ।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गोरखपुर (उ. प्र.)

- शिविरा का सितम्बर 2023 का अंक शिक्षक दिवस विशेषांक के रूप में मिला। विशेषांक को गागर में सागर भरने का प्रयास देख शिविरा के आदेश परिपत्र संग शासन सचिव श्री नवीन जैन का लेख-पाती संस्था प्रधानों के नाम बार-बार पढ़ने व दिल में उतारने वाला, वहीं नैतिक व चारित्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना लेख भी युग की आवश्यकता सा लगा। सभी रचनाएँ शिक्षक को कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती हुई लगी। राज्य के साथ नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश राज्यों के कवियों की रचनाएँ देखकर लगा-'कितना लगाव है, राजस्थान की इस शिविरा से, शिविरा विशेषांक से।

छगन लाल व्यास, बालोतरा

- शिविरा का सितम्बर 2023 का अंक शासन सचिव शिक्षा श्री नवीन जैन के आलेख पाती संस्था प्रधानों के नाम के कारण न केवल संग्रहणीय हो गया है बल्कि नए संस्था प्रधानों के लिए अमृत कलश का समुच्चय बन गया है। महज 20 सूत्रों की इस गागर में उनके लिए प्रेरणा का सागर समाया है। संस्थाप्रधान जो मोटे-मोटे पोथे पढ़ कर हासिल नही कर सकते वे केवल इस सूत्र संहिता की सहायता से न केवल सफल हो सकते हैं अपितु आदर्श स्वरूप को अर्जित कर सकते हैं। श्री जैन ने शासन प्रशासन के नवाचारों के साथ यहाँ अपने जीवन का अनुभव सिंचित किया है। आपका आलेख किसी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी की कलम का निष्पादन नही है अपितु एक शिक्षाविद, चिन्तक और वैदिक ऋषि का सूत्रबद्ध संचय है। आशा है हमारे शिक्षक मित्र और संस्थाप्रधान इस अमृत का पान कर अपने योगदान से कीर्ति पताका फहराएँगे और राजस्थान का नाम रोशन करेंगे। ऐसे आलेख से शिविरा की गरिमा को भी चार चांद लग गए हैं। श्री नवीन जैन साहब को इस शानदार आलेख के लिए जितनी बधाई दी जाए कम हैं। शिविरा के इसी अंक में श्री ओम प्रकाश सारस्वत, श्री भगवती प्रसाद गौतम सहित अनेक अन्य उत्तम आलेख हैं उन्हें भी पुनः हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र मोहन, जयपुर

- शिविरा पत्रिका के सितम्बर, 2023 अंक में प्रकाशित शासन सचिव श्री नवीन जैन द्वारा लिखी पाती संस्था प्रधानों के नाम समसामयिक प्रेरणास्पद आलेख था। डॉ. संगीता पुरोहित की कहानी बाल मन बहुत अच्छी लगी। यह कहानी हर अभिभावक को पढ़नी चाहिए। संक्षित में ही सही पर यह कहानी बहुत बड़ा संदेश देती है। इसके लेखन हेतु आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ व धन्यवाद।

अशोक चौधरी, जोधपुर

रपट

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह -2023

❒ सुनीता चावला

शिक्षकेण शोभते छात्रः,
छात्रेणापि शिक्षकस्तथा।
उभाभ्यां शोभते राष्ट्रः,
तस्मात्राष्ट्रं प्रपूजयेत्।।

शिक्षक की छत्रछाया में निर्माण और प्रलय दोनों पलते हैं। शिक्षक ही एकमात्र वह व्यक्ति है जो अपने विद्यार्थियों को आने वाले समय की चुनौतियों के लिए तैयार कर उन्हें एक अच्छा समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है। भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति महान दार्शनिक, चिंतक, आदर्श शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिवस 5 सितंबर को कृतज्ञ राष्ट्र शिक्षक दिवस के रूप में हर वर्ष मनाता आ रहा है। इस अवसर पर शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजकीय शिक्षक सम्मान समारोह 5 सितंबर, 2023 एवं 4 सितंबर 2023 को पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर में किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह की पूर्व संध्या पर शिक्षकों के सम्मान में आयोजित सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री नवीन जैन, तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री सुभाष गर्ग, राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् डॉ. टी. शुभमंगला एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्री कानाराम, सम्मानित होने वाले शिक्षक वृन्द एवं शिक्षा विभाग राजस्थान के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित थे।

गुलाबी नगरी में गुलाब की भीनी-भीनी सुगन्ध से सराबोर भव्य बिड़ला सभागार में कार्यक्रम का प्रारंभ माँ वीणापाणी के पूजन और अतिथियों के सम्मान के साथ हुआ। तत्पश्चात सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए। उसके बाद राजस्थान प्रान्त के विभिन्न संभागों के शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए लोकनृत्य, लोक संगीत, कव्वाली एवं भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत किए गए। 'सुरक्षित स्कूल सुरक्षित राजस्थान' थीम पर जयपुर संभाग के शिक्षकों द्वारा 'गुड टच बेड टच' विषय पर श्री राजेश आचार्य द्वारा लिखित एक भावप्रवण नाटिका का मंचन किया गया।

कार्यक्रम में अंत में निदेशक महोदय श्री कानाराम द्वारा अपने भाषण में सम्मिलित होने वाले शिक्षकों को बधाई देते हुए कार्यक्रम के आयोजन में लगे हुए समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

शिक्षकों के सम्मान में 5 सितंबर को प्रातः ग्यारह बजे राजस्थान प्रदेश में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, अध्यक्ष माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला तथा विशिष्ट अतिथि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री जाहिदा खान थी। माननीय तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री सुभाष गर्ग, शिक्षा सचिव श्री नवीन जैन, आयुक्त स्कूल शिक्षा डॉ. टी शुभमंगला, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्री काना राम कार्यक्रम में उपस्थित रहें।

गत पाँच वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के आधार पर 149 शिक्षकों को राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। इनमें पाँच विशिष्ट शिक्षक भी शमिल थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। उसके बाद वंदे मातरम का सुमधुर गान हुआ, तत्पश्चात शिक्षक सम्मान गीत से कार्यक्रम आगे बढ़ा।

इस अवसर पर माननीय शिक्षा राज्य

मंत्री जाहिदा खान ने सम्मानित होने वाले शिक्षकों को बधाई देते हुए विभाग की योजनाओं की जानकारी दी। शासन सचिव स्कूल शिक्षा श्री नवीन जैन ने विभाग की उपलब्धियाँ बताई। साथ ही vision 2030 के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में ई-एजुकेशन की गतिविधियों के साथ अनेक नवाचारों के बारे में भी बताया।

तत्पश्चात माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा शाला दर्पण ऐप तथा शाला सम्बलन 2.0 ऐप की विधिवत लॉन्चिंग की गयी। साथ ही साथ स्कूल आफ्टर स्कूल नवाचार का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री महोदय ने किया। 'मिशन ज्ञान' एप का भी मुख्यमंत्री महोदय के कर कमलों द्वारा शुभारंभ किया गया। महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षा के क्षेत्र में रोबॉटिक प्रयोगशाला स्थापित कर रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए तथा तकनीकी कौशल विकसित करने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

इसी क्रम में वेदांतु इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड एवं एल ई ए डी (लीड) से निःशुल्क कोचिंग हेतु एमओयू किया गया तथा मिशन स्टार्ट 2023 का लोकार्पण किया गया। उसके बाद राजस्थान स्टेट ऑपन स्कूल का कम्प्यूटरीकरण प्रोग्राम भी लॉन्च किया।

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने अपने उद्बोधन में सम्मानित होने वाले शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि देश के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की तरह सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली अपनानी चाहिए। उन्होंने राजस्थान प्रदेश मे शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी नवाचारों की जानकारी दी और नवीन योजनाओं की अनुमति के लिए मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दिया।

इसी क्रम में सम्मानित होने वाले शिक्षकों के परिचय देने वाली प्रशस्ती पुस्तिका का विमोचन मंच द्वारा किया गया जिसमें माननीय राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्यमंत्री महोदय सहित अन्य विशिष्ट जनों से प्राप्त संदेशों एवं सम्मानित होने वाले शिक्षकों की उपलब्धियों का प्रकाशन किया गया है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने अपने उद्बोधन में सम्मानित शिक्षकों को हार्दिक बधाई दी। साथ ही राजस्थान बदल रहा है के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अंग्रेजी भाषा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए ही प्रदेश में महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोले जा रहें हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी भी आगे बढ सकेंगे। ग्रामीण ओलम्पिक खेलों की बात करते हुए मुख्यमंत्री महोदय ने कहा कि इन खेलों में तीन-तीन पीढ़ियाँ एक साथ खेल रही हैं। इन खेलों के माध्यम से आगे आने वाले बच्चों को खेलों की कोचिंग करवायी जाएगी। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में राजस्थान आगे बढ़ रहा है। अपने भाषण में जब मुख्यमंत्री महोदय ने ओ.पी.एस. की चर्चा की तब शिक्षकों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। मुख्यमंत्री महोदय ने यह विश्वास दिलाया कि शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्त किया जाएगा। अन्त में 'पानी बचाओ, बिजली बजाओ, सबको पढ़ाओ' के आह्वान के साथ अपने उद्बोधन का समापन किया।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी राज्य स्तरीय सम्मान हेतु शिक्षकों के चयन में पूर्ण पारदर्शिता एवं गोपनीयता बरती गयी। इसके लिए शिक्षकों से ऑनलाइन आवेदन मांगे गए एवं निर्धारित मानदण्डानुसार शिक्षकों का चयन किया गया। प्रत्येक जिले से तीन-तीन शिक्षकों के हिसाब से पचास जिलों के 149 शिक्षकों को 21000 नकद, ताम्र पत्र, प्रमाण पत्र एवं शॉल प्रदान कर सम्मानित किया गया। शिक्षक दिवस के इस समारोह मे भोपाल में हुई 66 वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल प्रतियोगिता मे स्वर्ण पदक विजेता छः खिलाड़ियों का भी

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 05 सितम्बर, 2023 हेतु सम्मानित शिक्षकों की सूची

1. कैलाश चन्द शर्मा, अध्यापक
कमलादेवी गीगालाल रा.उ.मा.वि.
झीरोता अरांई, अजमेर
2. शिवराज चौधरी, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. कोटड़ी, अरांई, अजमेर
3. मलका बक्ष, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. बूबानी, अजमेर ग्रामीण,
अजमेर
4. ब्रजमोहन मीना, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. रामसिंहपुरा, राजगढ़,
अलवर
5. भीमराज, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बीदूका, गोविन्दगढ़,
अलवर
6. बिरेश कुमार शर्मा, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. दुब्बी, राजगढ़, अलवर
7. नासिर अहमद अंसारी, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि.2 एल.सी. विजयनगर,
अनूपगढ़
8. लक्ष्मण दास, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि.-67, आरबी, रायसिंहनगर,
अनूपगढ़
9. कृष्ण लाल, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि.-59 जीबी, रामसिंहपुर,
अनूपगढ़
10. मुकेश कुमार, अध्यापक
रा.बा.उ.मा.वि. पादरू, सिवाना,
बालोतरा
11. योगेश किनिया, वरिष्ठ अध्यापक
स्वामी विवेकानंद रा. मॉडल स्कूल,
सिवाना, बालोतरा
12. धर्मिष्ठा पंड्या, प्रबोधक
रा.प्रा.वि. भूतिया डूंगरी बाँसवाड़ा,
बाँसवाड़ा
13. पंकज द्विवेदी, अध्यापक
श्रीमती फूलकंवर बा रा.बा.उ.मा.वि.
गढ़ी, बाँसवाड़ा
14. विनोद पानेरी, वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
रा.बा.उ.मा.वि. बागीदौरा, बाँसवाड़ा
15. रामरतन मालव, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. ठूँसरा, बाराँ, बाराँ
16. बालमुकुंद नागर,
रा.उ.मा.वि. किशनगंज, बाराँ
17. मुकेश कुमार, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. सांसियों का तला, बाड़मेर,
बाड़मेर
18. मुकेश कुमार यादव, अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. लालासर, गडरा
रोड, बाड़मेर
19. पबू प्रकाश पूनड़, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. निम्बला, शिव, बाड़मेर
20. संगीता उपाध्याय, अध्यापक
रा.प्रा.वि. नयागाँव बाबरा, रायपुर,
ब्यावर
21. शैलेन्द्र कुमार, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बाजून्दा, बदनोर, ब्यावर
22. लक्ष्मण सिंह, उप प्रधानाचार्य
शहीद भंवर रा.उ.मा.वि. बोरवा,
जवाजा, ब्यावर
23. रेखा कुमारी, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बसैया अभय, नदबई,
भरतपुर
24. ममता, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. आमौली, वैर, भरतपुर
25. राकेश कुमार, प्राध्यापक
शहीद सतपाल सिंह रा.उ.मा.वि.
इकरन, सेवर, भरतपुर
26. रोशन लाल सेन, प्रबोधक
रा.प्रा.वि. बलाई खेड़ा रामपुरिया,
सुवाणा, भीलवाड़ा
27. दिनेश चंद्र व्यास, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. देवरिया, रायपुर, भीलवाड़ा
28. जयपाल सोनी, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. लाखनसर, श्री डूँगरगढ़,
बीकानेर
29. लेखराम, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. डेलवां, श्रीडूँगरगढ़,
बीकानेर
30. सत्यवान, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. रीडी, श्रीडूँगरगढ़, बीकानेर
31. महावीर प्रसाद, अध्यापक
रा.प्रा.वि. बंजारा बस्ती कैथुदा, तालेड़ा,
बूँदी
32. मनीषा कुमावत, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. राज राजेश्वर,
केशोरायपाटन, बूँदी
33. धर्मवीर सिंह, वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. नमाना, बूँदी
34. रमेश चन्द्र गवारिया, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. सोलिया, राशमी,
चित्तौड़गढ़
35. सुरेन्द्र कुमार ढाका, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. कदमाली, निम्बाहेड़ा,
चित्तौड़गढ़
36. अजय सिंह राठौड़, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. पारसोली, बेगूं, चित्तौड़गढ़
37. रितेश शर्मा, अध्यापक
रा.प्रा.वि. समरपुरा, राजगढ़, चूरू
38. सुखदेव बीहड़ा, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बिलंगा, सुजानगढ़, चूरू
39. ओमनाथ सिद्ध, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. ईंयारा, बीदासर, चूरू
40. भागीरथ मीना, अध्यापक
रा.प्रा.वि. झण्डू की ढाणी, बसवा, दौसा
41. सुनीता कुमारी मीना, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. ढाणी रैगरान, दौसा
42. विनोद बिहारी मीना, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. चौरड़ी, दौसा, दौसा
43. राजेश यादव, अध्यापक
रा.प्रा.वि. मालीवास, नगर, डीग
44. जल्लाराम, प्राध्यापक
अनार देवी रा.उ.मा.वि. नगर, डीग
45. परवेश खाँ, प्रबोधक
रा.प्रा.वि. रामधन का पुरा, विरौधा,
धौलपुर
46. बिजेन्द्र सिंह, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. गढ़ीखिराना, बाड़ी, धौलपुर
47. अशोक कुमार, उप प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी रा.वि. मनियाँ, धौलपुर
48. सुभाष चन्द, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. सिरसी, नावां, डीडवाना
49. हनुमान राम, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. भरनावाँ, लाडनूं, डीडवाना
50. महेन्द्र सिंह यादव, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. गोविन्दी, नावां, डीडवाना-
कुचामन
51. रामपाल चौधरी, अध्यापक
रा.प्रा.वि. मालियों की ढाणी,
मौजमाबाद, दूदू

52. विनोद शर्मा, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. भगवतसिंहपुरा, मौजमाबाद, दूदू
53. हीरालाल चौधरी, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. लदेरा, दूदू
54. रविन्द्र कुमार कोठारी, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बड़लिया, आसपुर, डूँगरपुर
55. महेश कुमार व्यास, प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. धाणी घटाऊ, दोवड़ा, डूँगरपुर
56. हर्षित व्यास, प्राध्यापक
सुखदेव भाई रा.उ.मा.वि. पुनाली, दोवड़ा, डूँगरपुर
57. गजेन्द्र सिंह, अध्यापक
रा.प्रा.वि. क्यारा ढाणी, जीवद बामनवास, गंगापुर सिटी
58. मुकेश बैरवा, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. बरदाला, नादौती, गंगापुर सिटी
59. सुल्तान सिंह मीना, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. बडी उदेई, गंगापुर सिटी
60. ऊषा बब्बर, प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि.-2 एस.एन.एम.,हनुमानगढ़
61. राजकुमार, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. डाबड़ी, भादरा, हनुमानगढ़
62. ममता चौधरी, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. कमाना, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
63. कपूर चंद महर्षि, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि., पिंडोलाई, झोटवाड़ा ग्रामीण, जयपुर ग्रामीण
64. डॉ. विक्रम सिंह शेखावत, वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. फतेहपुरा, झोटवाड़ा ग्रामीण, जयपुर ग्रामीण
65. नवल किशोर सिंघल, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. वाटिका, सांगानेर ग्रामीण, जयपुर ग्रामीण
66. बीना जैन, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा. विद्यालय नवीन ज्योति नगर, जयपुर पश्चिम, जयपुर
67. पूनम भाटिया, प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बम्बाला, सांगानेर शहर, जयपुर
68. पुष्प भूषण शर्मा, प्राध्यापक
शहीद अशोक कुमार यादव रा.उ.मा.वि. गोपालपुरा देवरी, जयपुर पश्चिम, जयपुर
69. रनवीर, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बाम्बू सवाईराम की ढाणी जेठनगर पदमपुरा, भणियाणा, जैसलमेर
70. दीना राम, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. पाबनासर, फतेहगढ़, जैसलमेर
71. नवीन सिंह, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. देवीकोट, फतेहगढ़, जैसलमेर
72. जसाराम विरास, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. थूर, जसवंतपुरा, जालोर
73. प्रताप दास संत, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. तवाव, जसवंतपुरा, जालोर
74. गोरधन राम, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. नन्दपुर, डग, झालावाड़
75. कृष्णा वर्मा, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.प्रा.वि. गोडिया, मनोहरथाना, झालावाड़
76. दिलीप कुमार शर्मा, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. रटलाई, बकानी, झालावाड़
77. अनुकम्पा अरड़ावतिया, प्रधानाचार्य
रा.बा.उ.मा.वि. खानपुर मेहराणा, सिंघाना, झुंझुनूं
78. कैलाश चन्द्र, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बामनवास, सूरजगढ़, झुंझुनूं
79. अंजु कुमारी, प्राध्यापक
शहीद कर्नल जे.पी. जानू राउमावि, झुंझुनूं, झुंझुनूं
80. हेमा रानी गुलाटी, प्रधानाध्यापक
आचार्य हस्ति विशेष आवासीय विद्यालय जोधपुर
81. अकमल नईम, वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. जालौरी गेट, जोधपुर, जोधपुर
82. दिलीप कुमार मीना, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. नारखा का पाना, देवराजगढ़, शेरगढ़, जोधपुर ग्रामीण
83. धमेन्द्र सिंह जाट, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. घुड़ियाला, बालेसर, जोधपुर ग्रामीण
84. चुतराराम, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. धवा, जोधपुर ग्रामीण
85. राजवीर सिंह गुर्जर, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. भोडेर, करौली
86. मनीष कुमार शर्मा, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. पांचौली, मण्डरायल, करौली
87. कृष्ण बिहारी पाठक, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी, करौली
88. दिनेश कुमार वैष्णव, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. मण्डा, केकड़ी, केकड़ी
89. मीनाक्षी माहेश्वरी, प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. खाती का मोहल्ला, केकड़ी
90. विष्णु शर्मा, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. निमोद, केकड़ी
91. सुखीराम, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. शेखपुर, किशनगढ़ बास, खैरथल-तिजारा
92. सलामुद्दीन, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. सियाखोह, मुण्डावर, खैरथल-तिजारा
93. डॉ. कोमल कान्त शर्मा, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. भजेड़ा, किशनगढ़बास, खैरथल-तिजारा
94. रेवती रमण नागर, अध्यापक
रा.प्रा.वि. लालाहेड़ा, सांगोद, कोटा
95. जगदीश प्रसाद आर्य, प्रबोधक
रा.बा.उ.मा.वि. नीमोदा, हरिजी, सुल्तानुपर, कोटा
96. रजनी शर्मा, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. नायसराना, नीमराना, कोटपूतली-बहरोड
97. राम किशन गोठवाल, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. सिलारपुर, नीमराना, कोटपूतली-बहरोड
98. दिनेश कुमार मुण्डेल, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. संख्या 03, मूण्डवा, नागौर
99. नृसिंह राम जाट, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. टांकला, खींवसर, नागौर
100. मनीष पारीक, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. दुकोसी, नागौर, नागौर
101. महेन्द्र प्रसाद सैनी, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. जगदीशपुरी मानगढ़, अजीतगढ़, नीम का थाना
102. पूजा कुमारी जाखड़, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. मेहाड़ा जाटूवास, खेतड़ी, नीम का थाना

103. करण सैनी, प्राध्यापक
श्री जगन्नाथ दीवान रा. अंग्रेजी मा.वि. पाटन, नीम का थाना
104. जगदीश चन्द्र, अध्यापक
रा.प्रा.वि. सरलीनाड़ा, गुडा एंदला, पाली
105. किशन लाल मेवाड़ा, प्रबोधक
रा.उ.मा.वि. चाटेलाव, रोहट, पाली
106. सुरेश कुमार जांगिड़, उप प्रधानाचार्य
सेठ मुकनचन्द बालिया रा.बा.उ.मा.वि. पाली
107. शिवलाल देवासी, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. गुमानपुरा, देचू, फलोदी
108. अकतर हुसैन, प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. हाजीपुरा ननेऊ, फलोदी
109. विशम्भर थानवी, प्राध्यापक
स्वामी विवेकानन्द रा. मॉडल स्कूल, फलोदी
110. सोनिया नाई, अध्यापक
रा.प्रा.वि. गौतमेश्वर, अरनोद, प्रतापगढ़
111. मीनाक्षी पिंगल, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. रंभावली, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़
112. भूपेन्द्र तिवारी, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. अमलावद, प्रतापगढ़
113. सरिता कुमारी, अध्यापक
रा.प्रा.वि. काड, राजसमंद
114. विक्रम सिंह चौहान, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. कागमदारड़ा, देलवाड़ा, राजसमंद
115. दूल्हे सिंह झाला, उप प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. आमेट, राजसमंद
116. डिगम्बर सिंह शर्मा, अध्यापक
रा.प्रा.वि. बोरज तवरान, झल्लारा, सलूम्बर
117. चन्द्र पाल, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बोबडी, लसाडिया, सलूम्बर
118. महिमा अग्रवाल, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बगुरुवा, जयसमंद, सलूम्बर
119. हरि राम सारण, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बागोडा, सांचोर
120. हरी राम बिश्नोई, वरिष्ठ प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि. डीगाँव, सरनाऊ, सांचोर
121. किशनलाल सारण, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. विरोल बडी, सांचोर
122. बालकृष्ण मालू, अध्यापक
शहीद काना रा.उ.मा.वि. बावड़ी, जहाजपुर, शाहपुरा
123. हनुमान प्रसाद शर्मा, अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. कनेछन कलां, शाहपुरा
124. मुकेश कुमार प्रजापत, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बल्दरखा, बनेड़ा, शाहपुरा
125. राज कमल, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. उजीन सिंह का नाडा बेरी, पिपराली, सीकर
126. मदन सिंह महला, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. डिंगली जोहड़ी बेरी, पिपराली, सीकर
127. हेमलता वर्मा, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. बिडोली, धोद, सीकर
128. उका राम कुम्हार, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. मोरली, शिवगंज, सिरोही
129. ओम प्रकाश, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. गोडाणा, शिवगंज, सिरोही
130. धर्मेन्द्र कुमार गहलोत, शारीरिक शिक्षक
महात्मा गाँधी रा.वि. शिवगंज, सिरोही
131. अनिता, अध्यापक
महात्मा गाँधी रा.वि. 2 एम एल, नाथावाला, श्रीगंगानगर
132. प्रीति बाला, वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. मिर्जेवाला, श्रीगंगानगर
133. डॉ. जगदीश, उप प्रधानाचार्य
शहीद रामेश्वर लाल रा.उ.मा.वि. राजपुरा, 46 RB पदमपुर, श्रीगंगानगर
134. चन्द्रकला गुप्ता, अध्यापक
रा.प्रा.वि. हीरामन की ढाणी, श्यामपुरा, सवाई माधोपुर
135. हंसराज मीना, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. कोड्याई, बौंली, सवाई माधोपुर
136. नेमीचंद मीना, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. धौराला, बौंली सवाई माधोपुर
137. राकेश कुमार जैन, अध्यापक
रा.उ.मा.वि. कांटोली, मालपुरा, टोंक
138. बनवारी लाल सैनी, अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. रतनपुरा, उनियारा, टोंक
139. हिमांशु सोगानी, उप प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. कोठीनातमाम, टोंक
140. सुभाष कुमार, अध्यापक
रा.प्रा.वि. सुरासेमल, ऋषभदेव, उदयपुर
141. विजय लाल मेनारिया, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.प्रा.वि. बामणिया, भीण्डर, उदयपुर
142. गणपत सिंह झाला, शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि. भलों का गुड़ा, कुराबड़, उदयपुर
143. डॉ. विभा पुरोहित, प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. निचला घंटाला, बाँसवाड़ा
144. करनी दान कच्छावा, प्राध्यापक
सेठ भैंरुदान चौपड़ा रा.उ.मा.वि. बीकानेर
145. भरत जोशी, प्रधानाचार्य
सेठ आनन्दीलाल पोद्दार बधिर रा.उ.मा. वि. जयपुर
146. डॉ. वर्तिका गुलाटी, अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि. टूमली का बास, चाकसू, जयपुर
147. मेमुना खान, प्रबोधक
रा.उ.प्रा.वि. कावर चौकी, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़

माननीय मुख्य मंत्री महोदय, शिक्षामंत्री एवं मंच पर विराजमान अतिथियों द्वारा समस्त चयनित शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

अंत में निदेशक स्कूल शिक्षा श्री काना राम ने सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान अग्रणी रहेगा। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ। इस गरिमामय समारोह का संचालन डॉ. ज्योति जोशी एवं राजेन्द्र शर्मा 'हंस' ने किया।

वरिष्ठ संपादक 'शिविरा'
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (राज.)

रपट

27 वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह - 2023

❐ सीमा शर्मा

मातृभूमि के लिए अगाध प्रेम व महाराणा प्रताप के सहयोगी, विश्वास पात्र सलाहकार तथा लोकहित व आत्मसम्मान के लिए सर्वस्व दान करने वाले दानवीर भामाशाह की स्मृति में विद्यालयों में कार्य करवाने वाले दानदाताओं के सम्मान हेतु शिक्षा विभाग द्वारा इस वर्ष दिनांक 11 सितम्बर, 2023 को 27वाँ राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2023 का आयोजन बिड़ला सभागार जयपुर में किया गया। प्राचीन काल से ही राजस्थान के गाँव-गाँव में शिक्षा की अलख जगाने, शिक्षा की गुणवत्ता एवं विद्यार्थियों के नामांकन बढ़ाने में भामाशाह ने मुक्त हस्त से दान दिया है। शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा आयोजित भामाशाह सम्मान समारोह में इस वर्ष 142 भामाशाहों को सम्मानित किया गया, जिनके द्वारा शिक्षा विभाग को 139.06 करोड़ रुपए का सहयोग दिया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. बुलाकी दास कल्ला शिक्षा मंत्री- शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक), संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व पंचायती राज के अधीनस्थ प्राथमिक शिक्षा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार थे। श्री नवीन जैन, प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा), विभाग राजस्थान सरकार; श्री कानाराम निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा), विभाग राजस्थान सरकार; राज्य परियोजना निदेशक समग्र शिक्षा टी शुभमंगला, विशिष्ट शिक्षा सचिव श्रीमती चित्रा गुप्ता; संयुक्त शासन सचिव श्री किशोर कुमार; अतिरिक्त निदेशक प्रारंभिक शिक्षा श्री अशोक मीणा सहित अन्य अधिकारी भी समारोह में उपस्थित थे।

सर्वप्रथम अतिथियों के आगमन पर उनके स्वागत में एन.सी.सी. कैडेट्स एवं स्काउट द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। राजस्थानी

वेशभूषा धारण कर छात्राओं द्वारा अतिथियों का मुख्य द्वार पर रोली एवं अक्षत से तिलक कर स्वागत किया गया। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के गायन से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। माननीय शिक्षामंत्री महोदय द्वारा माँ सरस्वती एवं भामाशाह के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया एवं जयपुर के विभिन्न विद्यालयों की शिक्षिकाओं ने सरस्वती वंदना एवं ''धन्य देश वह माटी जिसमें भामाशाह सा लाल हुआ'' भामाशाह सम्मान गीत की मधुर प्रस्तुति दी।

हरित राजस्थान के स्वप्न को पूरा करने के लिए सभी अतिथियों को शिक्षा विभाग की ओर से पौधे भेंट कर सम्मानित किया गया।

श्री नवीन जैन प्रमुख शासन सचिव, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग राजस्थान सरकार, ने स्वागत भाषण एवं समारोह का परिचय दिया। श्री नवीन जैन ने समारोह में पधारे सभी भामाशाह, प्रेरकों एवं सभागार में उपस्थित दर्शकों का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा 27 वें राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह का परिचय देते हुए बताया कि शिक्षा क्षेत्र में 1 करोड़ रुपए से अधिक का आर्थिक सहयोग देने वाले भामाशाह

को शिक्षा विभूषण के रूप में एवं 30 लाख रुपए से एक करोड़ तक का आर्थिक सहयोग करने वाले भामाशाह को शिक्षा भूषण से सम्मानित किया गया। राजकीय शिक्षण संस्थाओं के शैक्षिक एवं भौतिक विकास के क्षेत्र में सहयोग देने वाले 142 भामाशाह को सम्मानित किया गया एवं भामाशाह को प्रेरित करने वाले 78 प्रेरकों को भी सम्मानित किया गया। राजकीय विद्यालयों को दान देकर विद्यालयों की भौतिक आवश्कताओं की पूर्ति की जिसके फलस्वरूप राजस्थान आज शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

श्री नवीन जैन ने यह भी बताया कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि भामाशाहों द्वारा प्राप्त दान का हम सदुपयोग करें। विभाग का नवाचार: मिशन स्टार्ट एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जिसमें ई-कक्षा द्वारा विद्यार्थियों को हर विषय का ई-कंटेंट उपलब्ध कराया जा रहा है। इस नवाचार के लिए उन्होंने भामाशाहों से योगदान का आह्वान किया।

भामाशाह स्मारिका पुस्तिका और ज्ञान संकल्प पोर्टल स्मारिका 2023 का विमोचन किया गया। स्मारिका पुस्तिका में भामाशाहों द्वारा किए गए योगदान और कार्यों का वर्णन किया गया है।

मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला ने कहा कि- ''मैं अभिभूत हूँ कि हमारे भामाशाहों को आज सम्मानित किया

जा रहा है, मैं नतमस्तक हूँ भामाशाहों के आगे, जिन्होंने राजस्थान की वीरोचीत, दानोचित परम्परा के क्रम में शिक्षा जगत को न केवल आर्थिक बल्कि मानसिक, भावनात्मक, विचारात्मक संबल प्रदान किया। इन सभी सम्मानित होने वाले भामाशाहों को मैं हृदय के अंत:करण से बधाई देता हूँ जिन्होंने भामाशाह की इस जन्म भूमि में अपने कर्म से शिक्षा जगत को लाभान्वित ही नहीं किया वरन् समाज में सकारात्मक सोच और सहयोग की प्रेरणा भी स्थापित की।''

उन्होंने आगे कहा कि आज का यह कार्यक्रम इस तथ्य का साक्षी है कि यह समर्पण, यह भाव और यह पवित्रता की उसी डोर के साथ अगर आज हमारा शिक्षा विभाग समृद्ध है तो आपके ही सहयोग की बदौलत है। इन्हीं भामाशाह-दानदाताओं की भावना एवं मंतव्य से विद्यार्थी तकनीकी, उद्योग और खेल जगत में निरंतर प्रगति कर स्वावलंबी हो रहे हैं। इस हेतु अधिक से अधिक जन सहभागिता बढ़ाने का प्रयास जारी है। इस वर्ष राजस्थान शिक्षा विभाग ने शिक्षा विभूषण, शिक्षा भूषण जैसे पुरस्कार शुरू किए जो जन समुदाय द्वारा अधिकाधिक सहयोग के लिए प्रेरित करेंगे।

भामाशाह सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए शिक्षामंत्री महोदय ने कहा कि शिक्षा विभाग भामाशाहों द्वारा प्राप्त दान का उपयोग स्कूलों के गुणात्मक सुधार और विस्तार के लिए कर रहा है। उन्होंने निर्देश दिया कि हर विद्यालय की मैनेजमेंट एंड डवल्पमेन्ट कमेटी में भामाशाहों के प्रतिनिधि का होना अनिवार्य हो। उन्होंने कहा कि हर वर्ष शिक्षा विभाग की ओर से लगभग 400 करोड़ का व्यय शिक्षण संस्थानों की आधारभूत संरचना के लिए किया जाता है, जिसमें भामाशाहों का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

माननीय शिक्षामंत्री ने कहा कि मैं इस वर्ष सम्मानित होने वाले सभी भामाशाहों, प्रेरकों तथा संस्था प्रधानों को नमन करता हूँ और अपील करता हूँ कि आप इसी तरह समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रियता बनाए रखें ताकि राजस्थान के बच्चों का जीवन संवर सकें। राजस्थान की तकदीर और तस्वीर बदल सकें तथा राज्य शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित कर सकें।

सम्मानित होने वाले समस्त भामाशाह और प्रेरकों को ताम्रपत्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस सम्मान कार्यक्रम के दौरान स्क्रीन पर भामाशाहों द्वारा किए गए कार्यों को प्रदर्शित भी किया जा रहा था।

शिक्षा विभूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

क्र.स.	भामाशाह	राशि लाख रुपये में
1.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, चित्तौड़गढ़	1126.08
2.	न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि., रावतभाटा, कोटा	1025.50
3.	श्री बजरंगलाल सूरजमल तापड़िया, नागौर	922.30
4.	चम्बल फर्टिलाइजर्स एण्ड कैमिकल्स लिमिटेड, कोटा	795.61
5.	वंडर सीमेंट लिमिटेड, चित्तौड़गढ़	530.87
6.	नाथद्वारा मंदिर मंडल, नाथद्वारा, राजसमंद	460.00
7.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, राजसमंद	424.04
8.	आईसीआईसीआई फाउंडेशन फॉर इनक्लूसिव ग्रोथ, जोधपुर	374.77
9.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर	364.57
10.	एच.जी. इन्फ्रा इंजीनियरिंग लिमिटेड, जयपुर	325.45
11.	डीसीएम श्री राम फाउंडेशन, कोटा	278.54
12.	हल्दीराम एज्यूकेशनल सोसायटी, नई दिल्ली	255.59
13.	श्री कालूराम कानाराम विश्नोई, सांचौर, जालोर	250.07
14.	श्री महेन्द्र नथमल सोमानी, अहमदाबाद, गुजरात	228.58
15.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, अजमेर	209.84
16.	स्वधर्म फाउंडेशन, जयपुर	200.08
17.	श्रीमती सी.एम. मूंधड़ा मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट ईस्ट मुम्बई	187.21
18.	एचडीएफसी बैंक लिमिटेड, मुम्बई	183.85
19.	जिंक स्मेल्टर देबारी, उदयपुर	182.34
20.	रवीन्द्र हेरियस प्राइवेट लिमिटेड, उदयपुर	178.89
21.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, भीलवाड़ा	177.60
22.	इंडिया इन्फोलाइन फाउण्डेशन, मुम्बई	165.10
23.	होंडा इंडिया फाउण्डेशन, गुड़गांव, हरियाणा	156.39
24.	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, जावर माइंस, उदयपुर	147.73
25.	डीएक्ससी टैक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई, तमिलनाडु	147.00
26.	जंवरीलाल चैनरूप बैद चैरीटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी, असम	142.24
27.	जयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, जयपुर	140.00
28.	एस.एम. सहगल फाउण्डेशन, गुरुग्राम, हरियाणा	133.91
29.	हनीफ खान, चूरू	120.00
30.	श्रीमती गीता देवी, सिरोही	117.76
31.	श्री अशोक कुमार खीचा, सिरोही	105.00
32.	गोयनका चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	104.60
33.	मोजैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुड़ग्राम, हरियाणा	103.88

34. साउथ वेस्ट माइनिंग लिमिटेड, बाड़मेर 100.23

शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

35. चोकसी हेरियस प्राइवेट लिमिटेड, उदयपुर 87.30
36. जे आर आर टी चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर 84.80
37. मयूर यूनिकोटर्स लिमिटेड, जयपुर 71.69
38. जुबिलेंट भरतिया फाउण्डेशन, चित्तौड़गढ़ 71.32
39. सिगवर्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, अलवर 68.58
40. एस आर एफ फाउण्डेशन, अलवर 60.44
41. प्रभुसर फाउण्डेशन, नई दिल्ली 59.11
42. जे.के. सीमेण्ट, चित्तौड़गढ़ 57.71
43. घरडाना खुर्द विकास समिति, झुंझुनूं 57.00
44. अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड यूनिट आदित्य सीमेंट वर्क, चित्तौड़गढ़ 56.30
45. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, बान्द्रा, मुम्बई 55.00
46. नोर्मेट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर 54.05
47. गौसेवी श्री पद्माराम कुलरिया (सुथार) चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई 54.00
48. सेंट गोबेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई, तमिलनाडु 51.97
49. नारंगी श्रीराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट, पटना, बिहार 51.50
50. जोधपुर ब्लूज राउण्ड टेबल-326, जोधपुर 50.51
51. श्री नरेश कुमार खण्डेलवाल, भरतपुर 50.51
52. जागृति, वैशाली नगर, जयपुर 50.02
53. पेर्नोड रिकार्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, अलवर 49.20
54. जयपुर हैरिटेज राउण्ड टेबल-185, जयपुर 47.63
55. जयपुर पिंक सिटी राउण्ड टेबल, जयपुर 45.83
56. अल्ट्राटेक सीमेण्ट लिमिटेड, जयपुर 45.58
57. श्रीमती शशिकला कांकानी, फरीदाबाद, हरियाणा 44.78
58. क्यू आर जी फाउण्डेशन, दिल्ली 41.63
59. सुराणा फाउण्डेशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 41.16
60. अन्त्योदय फाउण्डेशन, मुम्बई, महाराष्ट्र 40.94
61. जसरापुर ग्रामीण विकास समिति जसरापुर, झुंझुनूं 40.00
62. सी.वी.आर.टी. संस्थान चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़ 38.90
63. एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी पचपदरा लिमिटेड, बाड़मेर 38.77
64. श्री सीमेण्ट लिमिटेड, अजमेर 38.69
65. इब्तिदा, अलवर 38.14
66. श्री चंपालाल हजारीमल भण्डारी, सांचौर 38.00
67. आशियाना हाउसिंग लिमिटेड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 36.92
68. नया सवेरा सोसायटी, जयपुर 36.00
69. श्री प्रकाश भाकर, नागौर 35.55
70. स्पेक्ट्रम डाईज केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड, ईस्ट मुम्बई 35.00
71. श्री छगनी राम गहलोत, जोधपुर 35.00
72. श्री गोविन्द सिंह, नागौर 35.00
73. श्री दिनेश कुमार सैन, मुम्बई, महाराष्ट्र 35.00
74. सर्वमंगल ग्रामीण विकास संस्थान, बून्दी 34.57
75. जयपुर ज्वैलसिटी राउण्ड टेबल-191 चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर 34.51
76. आर आर मोरारका चैरिटेबल ट्रस्ट, बिजनौर, उ.प्र. 34.50
77. उदयपुर राउण्ड टेबल-253, उदयपुर 34.10
78. श्री किशन लाल सारड़ा, चूरू 33.86
79. बीकानेर राउण्ड टेबल, बीकानेर 33.50
80. बिरला कॉर्पोरेशन लिमिटेड, चित्तौड़गढ़ 33.19
81. श्री चन्द्रभान, श्रीगंगानगर 32.98
82. कोटा राउण्ड टेबल-281, कोटा 32.06
83. श्रीमती विमला देवी, श्रीगंगानगर 32.00
84. कोटा सिटी राउण्ड टेबल-358, कोटा 31.50
85. श्री शुभकरण पन्नालाल बैद, सूरत, गुजरात 31.40
86. श्री नेमीचंद तोषनीवाल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 31.39
87. बॉश लिमिटेड, जयपुर 31.37
88. अजमेर राउण्ड टेबल, अजमेर उत्तर 31.35
89. उदयपुर लेक सिटी राउण्ड टेबल ट्रस्ट, उदयपुर 31.05
90. श्री श्यामलाल नागपाल, श्रीगंगानगर 31.00
91. श्री श्याम सुंदर दरगड़, अजमेर 30.68
92. जोधपुर राउण्ड टेबल ट्रस्ट, जोधपुर 30.47
93. श्री विद्याधर, झुंझुनूं 30.40
94. कोटा यूनाइटेड राउण्ड टेबल चैरिटेबल ट्रस्ट, कोटा 30.40
95. श्री ठाकुर मान सिंह, जयपुर 30.34
96. श्री शुभकरण, झुंझुनूं 30.10
97. व्यापार मण्डल, श्री विजयनगर, श्री विजयनगर 30.03
98. श्रीमती सुमन कंवर, बाड़मेर 30.00
99. श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लिमिटेड, अलवर 28.94
100. श्री विनोद कुमार, श्रीगंगानगर 27.90
101. अल्ट्राटेक सीमेण्ट लिमिटेड यूनिट बिडला व्हाईट, मुम्बई, महाराष्ट्र 26.39
102. श्री महेन्द्र सिंह सांखला, जोधपुर 25.00
103. अपना गांव अपना विकास संस्थान, भूखा, सवाई माधोपुर 25.00
104. श्री हनुमान प्रसाद शर्मा, टोंक 24.52
105. श्री राणी भटियानी मंदिर संस्थान जसोल, बाड़मेर 22.76
106. आई आई एल फाउण्डेशन, दिल्ली 21.90
107. श्री जयराम, नागौर 21.00
108. श्री दयानाथ, सरदारशहर 20.00
109. श्री महेन्द्र सिंह रावत, अजमेर 20.00
110. श्रीमती सुंदरी देवी, जयपुर 20.00
111. आरएक्स लॉजिक्स कॉर्पोरेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 19.95
112. रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी, जोधपुर 19.76
113. श्री भरत कुमार गोगड़, पाली 19.17
114. श्री सरजीत सिंह, अलवर 19.00
115. पॉलि मेडिक्योर लिमिटेड, फरीदाबाद, हरियाणा 18.74
116. समर्पण, कोटा 18.57
117. श्री नरसिंह राम, जोधपुर 18.00
118. कम्प्यूकॉम सॉफ्टवेयर लिमिटेड, जयपुर 17.63
119. श्री देवी सिंह दुगड़, भीलवाड़ा 17.50
120. श्री नरपत सिंह, सीकर 17.00
121. श्री हजारी लाल, जयपुर 17.00
122. श्री मादा नाथा रेबारी, डूँगरपुर 16.80

123. श्री दलाराम, जालोर	16.50	133. श्री भंवरलाल, नागौर	15.50
124. श्री जयप्रकाश मीना, सवाई माधोपुर	16.50	134. श्री ज्योति प्रसाद तापड़िया, मुम्बई, महाराष्ट्र	15.41
125. श्री भंवरलाल तापड़िया, वेस्ट मुम्बई, महाराष्ट्र	16.46	135. श्री राजेन्द्र सिंह, झुंझुनूं	15.19
126. श्री रामेश्वर लाल, बीकानेर	16.22	136. श्री मदनगोपाल माहेश्वरी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	15.05
127. श्री सियाराम मीना, सवाई माधोपुर	16.13	137. श्री राकेश कुमार पी, जालोर	15.00
128. श्री कान्ता प्रसाद चन्गोईवाला, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	16.00	138. श्रीमती गुलाब देवी, झुंझुनूं	15.00
129. श्री संजय अग्रवाल, मुम्बई, महाराष्ट्र	16.00	139. श्री जीवाराम एच जायलवाल, जालोर	15.00
130. बी.एल. इन्फ्रा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड, दिल्ली	15.90	140. श्री महेन्द्र सिंह, झुंझुनूं	15.00
131. श्री अशोक सराफ, गुवाहाटी, असम	15.70	141. श्री सुरेश कुमार, झुंझुनूं	15.00
132. श्री अरूण कुमार अजीतसरिया, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	15.70	142. श्री जालु राम सिंवर, नागौर	15.00

प्रेरकों की सूची

1. राजबीरी देवी, चित्तौड़गढ़
2. जगमाल गुर्जर, अजमेर
3. वीरेन्द्र सिंह यादव, उदयपुर
4. मोइनी फाउंडेशन, जयपुर
5. सुदर्शन सिंह शेखावत, बिजनौर, झुंझुनूं
6. रमेश कुमार अग्रवाल, बीकानेर
7. रामगोपाल जाट, नागौर
8. कुलदीप कुमार व्यास, चूरू
9. राजू खिलेरी, जालोर
10. लक्ष्मणसिंह गहलोत, जोधपुर
11. एच जी फाउण्डेशन, उदयपुर
12. द्वारका प्रसाद पचीसिया, बीकानेर
13. प्रमोद कुमार, भरतपुर
14. विमल कोठारी, चूरू
15. उदय सिंह कुंतल, जयपुर
16. दीपचंद, झुंझुनूं
17. शशि चौधरी, जोधपुर
18. रियाजत अली खान, चूरू
19. करण सिंह बालोत, सिरोही
20. धर्मेन्द्र कुमार गहलोत, सिरोही
21. सुशीला कुमारी दूत, सीकर
22. राजेश कुमार, अलवर
23. करण सिंह यादव, अलवर
24. ऋतु रानी शर्मा, जयपुर
25. अशोक कुमार यादव, अलवर
26. प्रमोद कुमार दशोरा, चित्तौड़गढ़
27. विक्रम अहीर, निम्बाहेड़ा
28. सूरज भान सारस्वत, चित्तौड़गढ़
29. रामचन्द्र मीणा, जयपुर
30. तुलसीराम प्रजापत, चित्तौड़गढ़
31. रेनू लमोरिया, श्रीगंगानगर
32. कोमल कांत शर्मा, अलवर
33. किरण चौधरी, नागौर
34. चैनरूप दायमा, चूरू
35. सत्तार खान, नागौर
36. अश्विनी कुमार शर्मा, जयपुर
37. किरण, अलवर
38. लोकेश नारायण शर्मा, चित्तौड़गढ़
39. भीकम चंद, पाली
40. द्वारका प्रसाद सुथार, बीकानेर
41. गोरधन लाल पाटीदार, निम्बाहेड़ा
42. गुमान सिंह जादोन, अजमेर
43. राजीव उपाध्याय, चूरू
44. अरविन्द कुमार मुंदड़ा, चित्तौड़गढ़
45. कुमुद शर्मा, जयपुर
46. रक्षा चौधरी, सीकर
47. सरोज यादव, अलवर
48. अनिल कुमार झंवर, चित्तौड़गढ़
49. अनिल कुमार सोमानी, निम्बाहेड़ा
50. लीला चतुर्वेदी, चित्तौड़गढ़
51. आशीष जिंदल, भरतपुर
52. बुध राम भादू, जालोर
53. डॉ. सुरेश गुलिया, जयपुर
54. हेमेन्द्र कुमार सोनी, चित्तौड़गढ़
55. दिनेश पीपलावा, सुजानगढ़
56. महेश चन्द शर्मा, अलवर
57. श्रीमती संतोष, झुंझुनूं
58. दमन त्रिपाठी, बालोतरा
59. सत्यनारायण वैष्णव, पाली
60. गैंदा राम जाट, जयपुर
61. दिनेश कुमार गुप्ता, सवाई माधोपुर
62. सरोज सुमेर, जयपुर
63. यश वीर सिंह, नागौर
64. महेन्द्र रुस्तगी, नोएडा, उ.प्र.
65. रेणु व्यास, जोधपुर
66. ओम प्रकाश प्रजापत, पाली
67. लक्ष्मीपाट सुराणा, चूरू
68. पुष्पा कुमारी, जयपुर
69. श्री राम, श्रीगंगानगर
70. राम फूल रछोया, जयपुर
71. अर्पणा शर्मा, कोटा
72. पूनम, श्रीगंगानगर
73. मदन लाल चौधरी, नागौर
74. मधुमती वैष्णव, अजमेर
75. सुशीला कुमारी, झुंझुनूं
76. लादु राम, पाली
77. सुरेन्द्र सिंह पूनिया, चूरू
78. भँवर लाल, श्रीगंगानगर
79. मनसुख लाल वैध, बाड़मेर

इस कार्यक्रम के अन्त में श्री कानाराम, निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा), विभाग राजस्थान सरकार ने समारोह में पधारे मुख्य अतिथि तथा अन्य सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि भामाशाह सम्मान समारोह, शिक्षा के क्षेत्र में उदारता पूर्वक सहयोग करने वालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का विनम्र प्रयास है। सभी उपस्थित महानुभावों का बहुत-बहुत आभार, साधुवाद। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयसिंहपुरा,
सांगानेर, जयपुर (राज.)
मो.न.: 9460069730

गाँधी के सपनों का भारत

❒ डॉ. डी.डी. गौतम

महात्मा गाँधी महापुरुष होने के साथ-साथ सत्यपुरुष (संत) भी थे, ये मात्र भारत के ही नहीं अपितु विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक थे। यह जन्म से सामान्य थे पर अपने कर्मों से महान बने। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा इन्हें एक पत्र में महात्मा गाँधी कह कर संबोधित किया गया। तब से संसार इन्हें मिस्टर गाँधी के स्थान पर महात्मा गाँधी कहने लगा। भारत को आजादी मिलने के बाद जब सारा देश जश्न मना रहा था, तब गाँधीजी साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे। उन्हें आजादी मिलने की खुशी से कहीं अधिक बिखरते भारत की चिन्ता थी। वे चाहते थे देश का प्रत्येक नागरिक समान रूप से आजादी और समृद्धि को प्राप्त करे। महान विचारक, दार्शनिक, कुशल राजनेता एवं दूरद्रष्टा महात्मा गाँधीजी ने जिस भारत की कल्पना की थी, 75 वर्ष बाद हम उनके सपनो का भारत बनाने के लिए आज देश में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में अपने राष्ट्र के विकास के लिए कर्मशील और प्रयत्नशील है।

महात्मा गाँधी के सपने

- मैं भारत को स्वतन्त्र और बलवान देखना चाहता हूँ।
- वे ऐसे संविधान की रचना करवाने के प्रयासरत थे जो भारत को गुलामी और परावलम्बन से मुक्त कर सके।
- पाश्चात्य सभ्यता की विचारहीन और विवेकहीन नकल व दुष्प्रभावों का विरोध।
- भारत के मूल स्वरूप को कर्मभूमि के रूप में देखना चाहते थे ना कि भोग भूमि में, क्योंकि भोगवादी संस्कृति पतन का मार्ग प्रशस्त करती है।
- ऐसे भारत निर्माण का संकल्प जिसमें ऊँच और नीच के वर्गों का भेद नहीं हो।
- राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक समान हो साथ ही स्त्री पुरुष दोनों के समान अधिकार हो।
- सर्व समाज में न कोई शोषक हो और न कोई शोषित। ऐसा भारत जिसमें अस्पृश्य और नशीली चीजों के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो।
- स्वराज जो सभी के लिए हो, जिसमें किसान, विकलांग और मेहनतकश लाखों लोग शामिल हो।
- स्वच्छता में भी ईश्वरीय वास होता है। अतः

इसमें हमारी सर्वोच्च भागीदारी हो।

- भारतीय समाज में उच्च और निम्न वर्ग का भेद नहीं हो अपितु समाज में समरसता, समानता और समभाव हो। सभी देशवासी राष्ट्रहित व राष्ट्र विकास के लिए एक जुट होकर प्रयास करे।

महात्मा गाँधी विश्व के ऐसे व्यक्तियों में से हैं जिनके विचारों और कार्यों ने देश, समाज ही नहीं अपितु विश्व स्तर पर वैचारिक परिवर्तन का सूत्रपात किया। उन्होंने मानव जीवन के मौलिक सिद्धांतों में दृढ़ विश्वास रखते हुए समाज को नया मार्ग दिखाया। आज हम नए युग में प्रवेश कर चुके हैं। जब से हमने स्वतंत्रता हासिल की, तब से हमारे ऊपर बड़ी जिम्मेदारियों का पहाड़ आ खड़ा हुआ है। ऐसे समय में हमें एक सशक्त विचारधारा के मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। आज के परिदृश्य में देश और दुनिया के सामने गाँधी के सपनों के भारत की तस्वीर रखना एक शुभ विचार है। आइए हम महात्मा गाँधी के विचारों पर जरा गौर करते हैं। गाँधी जी कहते थे भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है सर्वोच्च आकांक्षाएँ रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिए, वह सब भारत में मिल सकता है, क्योंकि भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है, भोग भूमि नहीं।

यह सच भी है कि अपने राष्ट्र के विकास के एक कर्मयोगी ही सपने देखता है। अकर्मण्य व भोगी कभी विकास के सपने नहीं देख सकता। बापू ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अहिंसा, आत्मबल व सत्याग्रह रूपी हथियारों का उपयोग किया और सफलता भी हासिल की। उनके सपनों के भारत का एक स्वरूप यह भी है कि भारत का ध्येय दूसरे देशों से कुछ पृथक है। भारत को फौलाद के हथियारों की आवश्यकता नहीं है। उनका मानना था कि पश्चिमी देशों के पशुबल की अपेक्षा, आत्मबल से सबको जीता जा सकता है, क्योंकि आत्मबल की तुलना में पशुबल नगण्य है।

महात्मा गाँधी के बहुत से क्रांतिकारी विचार जिन्हें उस समय नकारा जाता था। आज न केवल स्वीकार किए जा रहे हैं बल्कि अपनाए भी जा रहे हैं, आज की पीढ़ी के सामने यह स्पष्ट हो रहा है कि गाँधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे, वर्तमान राजनीतिक तंत्र के लिए गाँधीगीरी आज के समय का मंत्र बन गया है। यह सिद्ध करता है कि महात्मा गाँधी के विचार इक्कीसवीं सदी के लिए भी सार्थक और उपयोगी है। सादा जीवन उच्च विचार अर्थात गाँधी जी सरल जीवन के पक्षधर थे। उनका मानना था कि जीवन में जितनी अधिक आवश्यकता बढ़ेगी उतनी ही अधिक लालसाएँ बढ़ती जाएगी और जीवन दुखमय हो जाएगा।

पूज्य बापू भारत का उज्ज्वल भविष्य पश्चिम के इस रक्त रंजित मार्ग पर चलने में नहीं मानते थे जिस पर चलते-चलते वह स्वयं हाँफ रहा है। वह मानते थे कि भारत की मजबूती शांति और अहिंसा के मार्ग पर चलने में ही है। सांप्रदायिक ताकतों से नफरत करने वाले गाँधी ने हमेशा ही द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म का ही पालन किया। उनका मानना था कि भारत द्वारा अहिंसा का पालन करके स्वराज्य को जल्द ही प्राप्त किया जा सकता है। वे चाहते थे कि हम पश्चिम से विकास एवं ज्ञान-विज्ञान लें और इसे आत्मसात करें लेकिन हमें उनके विचारहीन और विवेकहीन नकल से बचना है, अन्यथा हमारा पतन संभव है। उनके शारीरिक सुख सुविधाओं वाले सुनहले मायामृग से बचकर उनका विज्ञान हमें स्वीकारना है। इस विश्वास के साथ कि सादा जीवन उच्च चिन्तन, हमारा प्रथम और अंतिम

ध्येय है।

गाँधी जी भारत को पहचानते थे एवं उनका मानना था कि वास्तविक भारत गाँवों में बसता है शहरों में नहीं। इसलिए उन्होंने भारत को किसान देश कहा। उनका विचार था कि गाँव के विकास में ही देश का विकास निहित है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था जितनी सबल होगी देश उतना ही अधिक सुखी एवं सम्पन्न होगा। उनका विचार था कि प्रत्येक गाँव को स्वयं में सम्पन्न एवं आत्मनिर्भर होना चाहिए। गाँधी जी का सबसे महत्त्वपूर्ण सपना यह भी था जिस पर अभी बहुत अधिक सोचना है और वह है जिन गाँवों को सियोनेल लियोनेस ने कूड़े का ढेर कहा : हमें उन्हें आदर्श बस्तियों में बदलना है। ग्रामवासियों का पुनरुत्थान होना चाहिए। भारतीय गाँव भारतीय शहरों को सारी जरूरतें पूरी करते हैं और इन्हें पोषित करते हैं। इस प्रकार शहरों का भी कर्त्तव्य बोध हो कि इन्हें अपने स्वार्थ के लिए गाँवों का शोषण नहीं पोषण करना है। गाँवों और शहरों के बीच स्वस्थपूर्ण और नीतियुक्त संबंधों का निर्माण होना चाहिए।

बापू के उपर्युक्त विचारों पर गौर करेंगे तो हम पाएँगे कि वे सशक्त भारत में लिए स्वराज को प्रथम आवश्यकता मानते हैं। उनके अनुसार स्वराज का अर्थ यह बनता है कि लोक-सम्मति के अनुसार होने वाला भारतवर्ष का शासन जिसमें सभी बालिग स्त्री-पुरुष शासन में अपना सजग उत्तरदायित्व निभाएं। हमारा स्वराज्य देश का बहुसंख्यक जनता का शासन हो। सबके कल्याण का शासन हो। गाँधी के सपनों का स्वराज्य तो गरीबों का स्वराज्य है जो सत्य-अहिंसा के शुद्ध साधनों से प्राप्त होगा। अहिंसा आधारित स्वराज्य में कोई किसी का शत्रु नहीं होगा। देश का प्रत्येक नागरिक जनता की भलाई के लिए हर एक अपना अभीष्ट योगदान देगा। गाँधी जी का देशप्रेम भी स्वयं में अल्हदा है वे कहते हैं कि भगवान ने मुझे भारत में जन्म दिया है और इस तरह मेरा भाग्य देश की प्रजा के साथ बाँध दिया है। इसलिए मैं इसकी सेवा नहीं करता हूँ तो मैं अपने विधाता के सामने अपराधी ठहरूँगा, गाँधी आगे कहते हैं कि इसलिए मेरा देशप्रेम और मानव प्रेम एक ही है। मैं देश प्रेमी हूँ, क्योंकि मैं एक मानव प्रेमी भी हूँ।

जब राष्ट्र या व्यक्ति की अर्थ व्यवस्था पर गाँधी बात करते थे तो सीधे-सीधे कहते थे कि मैं अहिंसक अर्थ व्यवस्था का हामी हूँ अर्थात् इसे हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि किसी वस्तु की मुझे तत्काल आवश्यकता नहीं है और मैं उसे रख लेता हूँ तो यह एक तरह से दूसरे के हक की चोरी कर रहा हूँ। मेरी राय में न सिर्फ भारत बल्कि, सारी दुनिया की अर्थ रचना ऐसी होनी चाहिए कि किसी को भी अन्न और वस्त्र का अभाव न रहे। अमीरों में संरक्षकता का भाव विकसित हो वे गरीबों तथा मजदूरों को संरक्षण मुहैया करवाएं। आजादी से महात्मा गाँधी का अर्थ केवल अंग्रेजी शासन से मुक्ति का नहीं था बल्कि वह गरीबी, निरक्षरता और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों और कुरीतियों से मुक्ति का सपना देखते थे। वे चाहते थे कि, देश के सारे नागरिक समान रूप से स्वाधीनता और समृद्धि के सुख भोगें। वे केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं चाहते थे अपितु जनता की आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति भी चाहते थे। इसी भावना ने उन्हें ग्राम उद्योग संघ तालीमी संघ और गो रक्षा संघ स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

ग्राम स्वराज्य गाँधी जी के स्वयं भारत के लिए पूर्ण प्रजातंत्र का एक संपूर्ण उपकरण है। जिस देश में 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। उस देश के ग्रामवासियों का शासन उनके स्वयं के हाथों में होना अतिआवश्यक है। उनकी अपनी चुनी हुई ग्राम सरकार होगी जिसमें पंच बिना जाति, वर्ग, धर्म के भेद बिना चुने जाएंगे। वे अपने ग्राम व ग्रामवासियों की मूल आवश्यकताओं का ध्यान रखेंगे जिसे हम ग्राम पंचायत कहेंगे। बच्चों के लिए पाठशाला, सभा भवन की व्यवस्था करेंगे। पानी के इंतजाम के लिए वाटर वर्क्स होंगे जिससे लोगों को पीने का शुद्ध पानी मिलेगा। चिकित्सालय की व्यवस्था करेंगे। सरकारी सार्वजनिक योजनाओं को लागू करेंगे तथा बिना किसी भेदभाव के ग्रामवासियों को लाभान्वित कराएं। इस तरह के गाँवों में पुनर्रचना का काम आज से ही शुरू हो जाना चाहिए। यह अभियान तब तक चलते रहना है जब तक देश के प्रत्येक गाँव में ग्रामस्वराज्य पूर्ण ढंग से स्थापित न हो जाए। इसके लिए पंचायती राज की आवश्यकता है।

गाँधी जी का एक महत्त्वपूर्ण सपना था- 'पंचायती राज' इसे हमारे देश में सबसे पहले राजस्थान के नागौर जिले से आरंभ किया गया। 2 अक्टूबर, 1959 को पं. जवाहर लाल नेहरु द्वारा विधिवत उद्घाटन किया गया। पूज्य बापू का मानना था कि आजादी नीचे के स्तर से शुरू होनी चाहिए। प्रत्येक गाँव में अपनी सत्ता, अपनी पंचायत या अपना राज होना चाहिए। तभी उनके पास अपनी ताकत होगी। पंचायत राज में केवल पंचायत की आज्ञा मानी जाएगी और पंचायत अपने बनाए कानून के द्वारा अपना काम करेगी। गाँधी जी ने समाज में व्याप्त शोषण की नीति को खत्म करने के लिए भूमि एवं पूंजी का समाजीकरण न करते हुए आर्थिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण को महत्त्व दिया, उनके विचारों में लघु एवं कुटीर उद्योग से ही देश की सही उन्नति हो सकती है।

गाँधी जी के सपनों के भारत में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य था स्वदेशी। वे कहते थे कि स्वदेशी की भावना का अर्थ है-हमारी वह भावना जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है। दूसरे शब्दों में वे मानते थे कि हमें हमारे धर्म, राजनीति, समाज व अर्थव्यवस्था को ही स्वीकारना है। यदि इनमें कुछ दोष हैं तो उन दोषों को दूर कर पूर्ण सक्षम बनाकर इनकी सेवा करनी चाहिए। इस प्रकार स्वदेशी को व्यवहार में उतारा जाए तो मेरे देश में मानवता के स्वर्णयुग का अवतरण किया जा सकता है।

बापू के सपनों के भारत में शिक्षा के स्वरूप को पूर्णतया वे मात्र किताबी ज्ञान ही नहीं स्वीकारते हैं। वे आगे कहते हैं कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बालक के शरीर, मन और आत्मा की उत्तम क्षमताओं को उद्घाटित किया जाए, विकसित किया जाए और बाहर प्रकाश में लाया जाए उनका मानना है कि बालक को अक्षर ज्ञान से पूर्व श्रम शिक्षा या हस्त कौशल विकास सिखाया जाना होगा। बच्चे के मस्तिष्क का ठीक और चतुर्मुखी विधाएँ तभी हो सकती है जब वह बच्चे की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की शिक्षा भी साथ-साथ होगी। केवल अक्षर ज्ञान शिक्षा का लक्ष्य नहीं है और न ही प्रारम्भ। यह मनुष्य की शिक्षा में से कई साधनों में से एक साधन मात्र है। इसके साथ वे अपने राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण के इस विचार को भी दृढ़तापूर्वक मानते थे कि भारत में निःशुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धान्त का पक्षधर हूँ। भारत के प्रत्येक बालक को अनिवार्य रूप से प्राथमिक शिक्षा मिले। कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में बापू का चिंतन

- विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। उनका कहना था कि शिक्षा में भावना व संवेदना नही है तो ज्ञान के परिणाम अलग ही होंगे।
- शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी को आदर्श नागरिक, देशभक्त और परिवार समाज तथा राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्ति बनाना है।
- शिक्षा का आशय केवल अंक अक्षर के ज्ञान से नहीं अपितु व्यक्ति के समग्र विकास में लक्षित हो।
- व्यक्तित्व विकास और चारित्रिक संस्कारों को निर्मित करना है। इनमें परिवार से बेहतर कोई पाठशाला नहीं है और गुणवान माता-पिता से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं है।
- उच्च शिक्षा वही है, जिसे पाकर इंसान विनम्र, परोपकारी, सेवाभावों और कार्य तत्पर बन जाए।

भारतीय शिक्षा के लिए उनका बुनियादी शिक्षा का सिद्धान्त स्वयं में सार्थक उद्देश्य लिए हुए हैं। बुनियादी शिक्षा में बालक-बालिकाएँ एक साथ रहकर अक्षर ज्ञान के साथ हस्तकला, दस्तकारी शारीरिक बौद्धिक व नैतिक ज्ञान भी प्राप्त करें। जिससे भावी नागरिकों में सद्नागरिकता के साथ स्वावलम्बी बनने का जज्बात उत्पन्न हो। उनका कहना था कि शिक्षा कौशल उद्योग आधारित होनी चाहिए अर्थात शिक्षा, कौशल विकास की फैक्ट्री बने, जहाँ से स्किल्ड युवा बाहर निकले। उच्च शिक्षा को लेकर महात्मा गाँधी अति उत्साही व महत्वाकांक्षी सोच लेकर चलते थे।

यह देश व दुनिया बापू को सदियों तक याद करती रहेगी व इनके आदर्श सभी युगों में प्रेरणास्पद रहेंगे। धन्य है हम और हमारा भारत देश जहाँ गाँधी जी जैसे महापुरुष ने जन्म लेकर हमें सफल जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। गाँधी जी सार्वकालिक है और सार्वभौमिक भी। हमें आज अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए बापू के आदर्शों को आत्मसात करने के साथ इनके सपनों को भी साकार करना होगा। हमने बापू को तो खो दिया, लेकिन हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम उनकी विरासत और आदर्शो को जीवंत रखें।

हमारे देश में स्वच्छता अभियान महात्मा गाँधी के सपनों से ही प्रेरित है। बापू ने अपने आस-पास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश देने का प्रयास किया। उन्होंने 'स्वच्छ भारत' का सपना दिया था। इसी प्रेरणा को लेकर आज राष्ट्र कृत संकल्प हैं तथा स्वच्छता के प्रति सजगता, यह जन मानस का ध्येय बन चुका है। वर्तमान परिदृश्य में स्वच्छ भारत अभियान, राष्ट्रीय ई-शासन, जनधन योजना, गैर सरकारी संगठनों का सशक्तीकरण, शिक्षा का अधिकार कानून 2009, नई शिक्षा नीति 2020, सूचना प्रौद्योगिकी तथा MSME के अन्तर्गत स्वरोजगार एवं स्वावलम्बन इत्यादि योजनाएँ बापू के भारत के सपनों को साकार करने हेतु प्रयासरत हैं।

मैं अपनी बात समेटते हुए इतना ही कहना चाहता हूँ कि नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत बुनियादी शिक्षा, उच्चशिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, स्वावलम्बी शिक्षा जैसे अध्याय वर्तमान की आवश्यकता है, यह सारी बातें बापू ने अपनी शिक्षा नीति में उसी समय उद्भारित कर दिया था। कमोबेश वर्तमान शिक्षा जगत बापू के इन सपनों को साकार करने में भारत का प्रत्येक नागरिक लगा हुआ है। जिसमें ऊँच-नीच का भेद न हो, सभी समान हो, देश का प्रत्येक नागरिक स्वाभिमान से अपने लिए रोटी और रोजगार प्राप्त करें, पश्चिम का अंधानुकरण न करके आत्मनिर्भर भारत बने।

बापू द्वारा दिए गए सत्य और अहिंसा के सन्दर्भ इतने व्यापक है कि आज न केवल हमारा देश अपितु सम्पूर्ण विश्व उनके द्वारा सुझाए इस मार्ग से अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। एक अहिंसक आत्मबल युक्त भारत बने, भारत के अंतिम व्यक्ति तक का हित रक्षक भारत बने, और कर्म योग का सार्थक भारत बने। इसी में हमारी राष्ट्र की प्रगति निहित है। गाँधी के सपनों का भारत में अनेक विद्वान् लेखकों ने गाँधीजी के सिद्धांतों और जीवन-मूल्यों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि हम सब अगर गाँधीजी के बताए रास्ते पर चलें तो एक सशक्त लोककल्याणकारी और गाँधीजी के सपनों के भारत का निर्माण कर सकते हैं। आओ, हम सब भारतवासी इस पुनीत कार्य में भागीदार बनें।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
ब्लॉक- कुम्हेर, भरतपुर (राज.)
मो.न.: 9413671118

गाँधी जयन्ती

A B C D E F - G
G में विराजमान हैं गाँधी जी
गाँधीजी के हाथ में पोथी
पोथी में हैं, ज्ञान की ज्योति
गाँधी जी के हाथ में लाठी
जरा सजग होकर रहना मेरे साथी
कहीं डूब न जाए नाव-नैया हमारी
एकजुट होकर पार लगाओ
कश्ती हमारी
तन पे लंगोट-धोती और
पाँव में खड़ाऊँ
कदम से कदम बढ़ाते चलो
मेरे महानुभावों
अंधेरे को दूर भगाकर उज्ज्वल
भविष्य बनाओ
देश की राह बनाकर हौसला बुलन्द
तूफानों से टकराओ
गाँधीजी का एक ही नारा चुनौतियों
भरा सफर हमारा
स्वदेशी भाषा - हाथ करघा
उद्योग हमारा
भारत प्यारा - देश हमारा
तभी होगा हमारे देश में उजियारा
भारत राष्ट्र देश हित में - शमीम
तन-मन और धन सब न्योछावर सारा

शमीम अहमद
मालियों की बगेची के पास, विनोबा बस्ती,
बीकानेर (राज.)-334001
मो.न.: 8104848380

गाँधी : एक जीवन्त विचार

❒ आशीष जिन्दल

गाँधीजी के देहावसान के लगभग 75 साल बाद भी गाँधी दर्शन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व अंतर्राष्ट्रीय आदि क्षेत्रों में मानव जाति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है। समकालीन समाज में कुछ विचारक गाँधी दर्शन को प्रतिकूल मानकर उसे अप्रासंगिक करार देते हैं किंतु गहराई से विश्लेषण किया जाए तो यह तथ्य किसी से छुपा हुआ नहीं है कि समकालीन समाज में भी गाँधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने स्वतंत्रता के समय। आज के परमाणु युग में जब हम यूक्रेन और रूस जैसे देशों के लंबे चलने वाले युद्ध को देखते हैं तो समझ में आता है कि समस्या किसी देश की विजय या पराजय की नहीं है बल्कि समस्या संपूर्ण मानव जाति या सभ्यता को बचाने की है क्योंकि हिंसा केवल प्रति हिंसा को जन्म देती है। हिंसा के द्वारा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। ऐसे में गाँधी का अहिंसा का सिद्धांत नायाब तोहफा है। संपूर्ण विश्व में स्थाई रूप से शांति केवल अहिंसा के द्वारा ही संभव है।

जब हम दिन प्रतिदिन समाचार पत्रों और विभिन्न चैनलों के माध्यम से देखते हैं कि समाज में दुराचार और भ्रष्टाचार अपनी सीमाएं लांघ रहा है। अपराधी और समाज विरोधी तत्वों का पोषण आम बात हो गई है। ऐसे वातावरण में नैतिक मूल्यों को जीवन में जीवंत करने वाले गाँधी प्रासंगिक ही नहीं प्रकाश पुंज के रूप में आवश्यक बन गए हैं।

वर्तमान आर्थिक और भौतिक युग में यह सामान्य मानव प्रवृत्ति हो गई है कि व्यक्ति येन केन प्रकेरेण अपनी सभी आवश्यकताएँ पूरा करना चाहता है। इनकी पूर्ति के लिए उसके द्वारा पृथ्वी का तीव्र गति से अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। इसी कारण प्राकृतिक पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है और दूसरी ओर व्यक्ति की मानसिक शांति भी भंग हो रही है।

गाँधी जी का स्पष्ट मत था कि जितना हम भौतिक आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास करते जाएँगे उतनी हमारी लालसा बढ़ती जाएगी। पृथ्वी के पास सब की आवश्यकता पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन है परंतु किसी के लालच पूर्ति के लिए नहीं। ऐसे में गाँधीजी का सादा जीवन उच्च विचार और संयम की व्यवस्था अपनी उपादेयता सिद्ध कर रही है।

देश में शिक्षा का दायरा दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है और साक्षर लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि

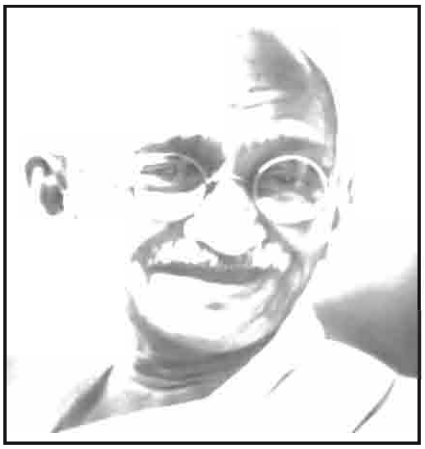

हो रही है परंतु युवा वर्ग विभिन्न डिग्रियाँ लेने के बावजूद भी रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता है। तीव्र मशीनीकरण के युग में युवा उच्च शिक्षित होने के बावजूद एक ओर अपने को कुंठित, हताश और निराश महसूस करता है और दूसरी ओर स्वयं मशीनों का दास बन रहा है। गाँधीजी ने भविष्य में आने वाली चुनौतियों को शुरू में ही पहचान लिया था। ऐसे में गाँधीजी का रोजगार उन्मुख शिक्षा का सिद्धांत और शिक्षा के साथ ही हस्तशिल्प, दस्तकारी इत्यादि का प्रशिक्षण एक नई राह खोल सकता है।

विश्व में विभिन्न देशों के द्वारा संसाधनों पर कब्जा करने की होड़ प्रारंभ हो गई है। इससे मानवता को केंद्रीय बिंदु बनाए रखने की बजाय सभी देश स्वकेंद्रित और स्वार्थी होते जा रहे हैं। विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों और परमाणु बम के युग में मानव भय का अनुभव कर रहा है और अनेक देशों में मानव को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रखकर शस्त्रों के निर्माण पर संसाधनों का अपव्यय किया जा रहा है। इन परिस्थितियों में गाँधीजी का विश्व बंधुत्व का सिद्धांत अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है।

गाँधीजी पर यह दोष आरोपित किया जाता है कि उन्होंने राजनीति में धर्म का उपयोग किया जिसके कारण से सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला किंतु यह एक सीमित व्याख्या है क्योंकि गाँधीजी के धर्म का मतलब किसी संप्रदायवादी हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई इत्यादि से न होकर मानवतावादी धर्म से है। गाँधीजी का धर्म जाति, मत, रूढ़ियों से मुक्त है। आज जिस प्रकार धर्म का विकृत रूप समाज में प्रयुक्त किया जा रहा है और पवित्र साधनों की बजाय अनैतिक संसाधनों का प्रयोग किया जा रहा है, उसमें गाँधी जी का राजनीति में आध्यात्मीकरण का सिद्धांत अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है। जिसमें नैतिक मूल्य और आदर्शों को समाहित करने की बात कही गई है।

आज पूंजीवादी युग में कुछ व्यक्तियों के द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की तीव्र होड़ हो रही है। वह किसी भी प्रकार धन कमाना चाहता है। उसकी लाभ प्राप्त करने की तीव्र इच्छा ने पूंजी को कुछ एक हाथों में सीमित कर दिया है। यद्यपि आज सर्वत्र आर्थिक विकास दिखाई देता है परंतु गरीब और अमीर के मध्य आर्थिक विषमता की खाई बढ़ती जा रही है। जिसका स्वाभाविक परिणाम है विभिन्न वर्गों में संघर्ष की भावना का उदय। ऐसे में गाँधीजी का सर्वोदय का विचार, ट्रस्टीशिप का सिद्धांत और श्रम की गरिमा का सिद्धांत अपनी सार्थकता सिद्ध कर रहे हैं।

वर्तमान समाज में झूठ फरेब हिंसा का बोलबाला है। दिन प्रतिदिन नैतिक मूल्यों का स्तर गिरता जा रहा है। ऐसे में गाँधी जी का साध्य के साथ साधन की पवित्रता का सिद्धांत उपयोगिता लिए हुए हैं।

गाँधीजी के विचार किसी देश काल परिस्थिति से बंधे हुए नहीं हैं। उनके विचार सर्वदेशीय और सर्वकालिक है। आज समाज के सर्वांगीण विकास के लिए इस भागदौड़ वाले वातावरण में गाँधीजी की भौतिकता पर नैतिकता, हिंसा पर अहिंसा, केंद्रीकरण पर विकेंद्रीकरण की नीति समाज को उचित दिशा प्रदान कर सकती है परंतु उसके लिए गाँधीजी के मंतव्य को केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं अपितु पूर्ण ईमानदारी के साथ अपने आचरण में समाहित करने और अनुसरण करने की जरूरत है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नदबई,
भरतपुर (राज.)
मो.न.: 9414345814

महान व्यक्तित्व : डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

❒ राहुल परमार

इतिहास साक्षी है कि विश्व की कितनी बड़ी-बड़ी हस्तियां छोटी-छोटी झोपड़ियों में जन्मी, संघर्षों में पली, अभावों की अग्नि में तपकर खरे सोने सी चमकी। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सच्चे अर्थों में मानवीय मूल्यों की अद्वितीय प्रतिभा थे जिन्होंने राष्ट्र के सम्मुख ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिसकी प्रशंसा के लिए शब्द भी कम पड़ जाते हैं। शिक्षक, राष्ट्रपति, पीपुल्स प्रेसीडेंट, मिसाइल मैन और भी न जाने कितने-कितने आत्मीय संबोधन सही मायने में भारत रत्न युवाओं के सच्चे पथ प्रदर्शक, 2020 विजन के दिशा दर्शक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अब भौतिक रूप से भले हमारे साथ नहीं है, पर कई बातें .... पर, शेष रह जाती है। आपका संपूर्ण जीवन ही हर भारतवासी के लिए अनुकरणीय था और आगे भी रहेगा। भारतीय युवाओं के आप आदर्श बनकर रहेंगे।

प्रारंभिक जीवन- देश को परमाणु शक्ति से सामर्थ्यवान बनाने वाले वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति डॉ. कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम जिले के धनुषकोडी गाँव के मछुआरे के घर 15 अक्टूबर, 1931 को हुआ। इनके पिता का नाम जैनुलब्दीन था। डॉ. कलाम के माता-पिता धार्मिक लेकिन उदार स्वभाव के थे उनमें धार्मिक सहिष्णुता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्हीं के आचरण ने डॉ. कलाम को प्रबल धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति बनाया। आपने किशोरावस्था में समाचार पत्र वितरक के रूप में समाचार पत्र बेचे। अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण था। डॉ. कलाम ने मद्रास इंस्टीयूट ऑफ टेक्नोलॉजी से वायु इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता प्राप्त की। इसके बाद उन्हें रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में नियुक्ति मिली।

डॉ. कलाम सन् 1963 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में शामिल हो गए। यहाँ रहकर आप स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यंत्र निर्माण के हर पक्ष से जुड़े रहे। सन 1980 में आप विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में ऐरोस्पेस

डायनेमिक एवं डिजाइन प्रभाग के निदेशक बने। आपकी जिंदगी में महत्त्वपूर्ण पड़ाव उस समय आया जब 1982 में आपको डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन डीआरडीओ में लेबोरेट्री निदेशक के रूप में नियुक्त किया। यहीं आपने इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल प्रोग्राम की परिकल्पना की। इस परियोजना को अमल में लाने का कार्य भी आपको ही सौंपा गया। इसी दौरान रक्षा सेवा की आवश्यकताओं की पूर्ति की और कलाम साहब का ध्यान गया। यहीं रहकर आपने पृथ्वी, त्रिशूल, आकाश, नाग और अग्नि मिसाइल का सफल परीक्षण किया। आप मिसाइल मैन के नाम से जाने गये। आपको मिसाइल मैन का न सिर्फ खिताब मिला बल्कि भारत को भी गिने-चुने उच्च प्रौद्योगिकी संपन्न देशों में स्थान मिला। सन् 1992 में आप रक्षा मंत्रालय से सीधे जुड़ गए और आपको रक्षा मंत्री का वैज्ञानिक सलाहकार बनाया गया साथ ही आपको डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट का सचिव और डीआरडीओ का महानिदेशक भी बनाया गया। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. कलाम को समय-समय पर सम्मानित किया गया। कई विश्वविद्यालयों ने आपको डॉक्टर ऑफ साइंस और डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि प्रदान की। आपको 1981 में पद्म भूषण तथा 1990 में पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। वर्ष 1997 में देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया। सन 1998 में एक बार पुनः आपको राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गाँधी अवार्ड से सम्मानित किया गया। रक्षा के क्षेत्र में डॉ. कलाम का योगदान सर्वोपरि था।

नवंबर 1999 में आपको कैबिनेट मंत्री का दर्जा देकर भारत सरकार का मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त किया गया। वर्ष 1998 में पोकरण परीक्षण में आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन परमाणु परीक्षणों में भारत विश्व के परमाणु शक्ति संपन्न देशों की कतार में शामिल हो गया। राष्ट्र को यह गौरवपूर्ण उपलब्धि दिलाने में डॉ. कलाम की अहम भूमिका रही। डॉ. कलाम ने राष्ट्रपति पद पर कर्तव्यनिष्ठता एवं कार्यशैली से भारतीय जनमानस में ऐसी छाप छोड़ी की आपको पब्लिक प्रेसिडेंट कहा जाने लगा। आपने अपने राष्ट्रपति काल में दुनिया के सबसे ऊँचे रक्षा क्षेत्र ग्लेशियर का दौरा किया तथा सैनिकों का हौसला बढ़ाया। आप पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने सुखोई विमान उड़ाया।

डॉक्टर कलाम ने एक स्वप्नदृष्टा के रूप में खूब ख्याति अर्जित की। आपका मानना था कि हर व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ाने के लिए सपने बुनने चाहिए। यह सपने विचारों में परिवर्तित होते हैं जिन्हें क्रियान्वित किया जाए तो सपने साकार हो उठते हैं। डॉक्टर कलाम को बच्चों से बड़ा प्रेम था। आप उन्हें देश के भावी निर्माता के रूप में देखते थे, उनके स्वास्थ्य और शिक्षा के प्रति जागरूकता को जरूरी मानते थे। आप साधारण व्यक्तियों के दुःख दर्द में हिस्सा बंटाने और उनकी सहृदयता के लिए सदा तत्पर रहते थे। आपने पोलियो ग्रस्त बच्चों के लिए हल्की धातुओं के मिश्रण से वजन में हल्के लेकिन मजबूत पैर बनाएं और डीआरडीओ की सहायता से हजारों जरूरतमंदों को इनका वितरण कराया।

सपनों के पंचतत्व- डॉ. कलाम का सपना था कि भारत 2020 तक या इससे पहले

विकसित देश बने इसका जिक्र आपने अपनी पुस्तक भारत 2020 में किया। आपका मानना था कि उनके इस सपने को भारत का हर नागरिक मिशन के तौर पर ले, जीवन को बेहतर बनाने के लिए वह तकनीक को अहम मानते थे। उनके नेतृत्व में 500 विशेषज्ञों की एक टीम ने डिपार्टमेंट आफ साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के तहत इंडिया विजन 2020 के नाम से पहला दस्तावेज तैयार किया था, इसमें उन्होंने मुख्यतः पांच बातों पर जोर दिया-

1. कृषि और खाद्य प्रसंस्करण- आपका मानना था कि देश की खेती और खाद्य प्रसंस्करण को दुगुना करने की जरूरत है।

2. इंफ्रास्ट्रक्चर- देश को विकसित बनाने के लिए आपने देश के हर एक गांव में विद्युतीकरण को जरूरी बनाने के साथ ही सौर ऊर्जा के इस्तेमाल पर जोर दिया।

3. शिक्षा और स्वास्थ्य- देश में अशिक्षा को समाप्त करना, सामाजिक सुरक्षा के साथ ही हर इंसान तक स्वास्थ्य संबंधी सूचना, सुविधा आसानी से पहुंचना जरूरी बताया था।

4. तकनीक- आपने सूचना एवं प्रसारण तकनीक पर जोर देने की वकालत की थी। इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में ई गवर्नेंस को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया था। आप टेलीकम्युनिकेशन और टेलीमेडिसिन जैसी तकनीको के हिमायती रहे।

5. विज्ञान- आपका मानना था कि भारत में परमाणु तकनीक, रक्षा तकनीक, अंतरिक्ष तकनीक को मजबूत बनाने की जरूरत है। इसके लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। ग्रामीण बच्चे विज्ञान विषय में आगे बढ़े तथा देश में अपना योगदान दे सके।

डॉ. कलाम का साहित्य प्रेम- यशस्वी वैज्ञानिक होने के साथ डॉक्टर कलाम साहब की साहित्य में भी गहरी रुचि थी। आपका मानना था कि देश भर में पुस्तकालय का जाल बिछाया जाना चाहिए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी पुस्तकों पर आपका अधिक जोर था क्योंकि आपका दृढ़ विश्वास था कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के बिना देश 2020 तक पूर्णतया विकसित राष्ट्र का रूप नहीं ले सकता। आपने तमिल में अच्छी कविताएँ भी लिखी। आपने अग्नि की उड़ान, तेजस्वी मन, टर्निंग पॉइंट्स तथा भारत 2021 नवनिर्माण की रूपरेखा प्रमुख है।

आखिरी ट्वीट- डॉ. कलाम ने शिलांग आईआईएम संस्थान में विद्यार्थियों को व्याख्यान देने जाते समय ट्वीट किया कि शिलांग जा रहा हूँ। आईआईएम के कार्यक्रम में भाग लेने।

भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का 27 जुलाई, 2015 सोमवार की शाम को मेघालय की राजधानी शिलांग में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। डॉ. कलाम जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर अपना शिक्षण कार्य कर रहे थे। वे विद्यार्थियों को अपना व्याख्यान दे रहे थे तभी अचानक तबीयत खराब होने से गिर पड़े, उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल के सीईओ. डॉक्टर जॉन सैलोह ने बताया कि आईसीयू में उन्हें बचाने की हर संभव कोशिश की गई लेकिन सारे प्रयास विफल रहे।

भारतीय जनमानस कलाम के निधन से स्तब्ध रह गया। संपूर्ण देश गहरे शोक में डूब गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने डॉ. कलाम साहब के निधन को अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि ''राष्ट्र ने एक महान सपूत खो दिया है जो आजीवन जनता के राष्ट्रपति थे और मृत्यु के बाद भी जनता के राष्ट्रपति बने रहेंगे।''

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ''आज मैंने एक मार्गदर्शक खो दिया है वह राष्ट्रपति थे तब भी कहते थे मैं एक शिक्षक हूँ पर देखिए अपने अंतिम समय में भी पढ़ा रहे थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।''

डॉ. कलाम युवाओं और विद्यार्थियों के सबसे बड़े प्रेरणा पुंज थे। 84 वर्ष की आयु में भी भारतीय उन्हें सबसे युवा व्यक्ति के रूप में मानते थे। मृत्यु के कुछ क्षण पहले तक उनमें वैसा ही जोश और उत्साह था जैसा आप युवाओं में देखते हैं। मृत्यु ने भी आपका वरण ऐसे समय में किया जब वे अपने सबसे प्रिय विषय के बारे में युवाओं को संबोधित कर रहे थे।

डॉ. कलाम की चिर स्मृति, नव चेतन इंसान, महान मुस्लिम, वीणा वादक, कुरान के साथ-साथ श्रीमद्भगवद् गीता का बराबर ज्ञान रखने वाले, डीआरडीओ के सचिव, महानिदेशक, देश के राष्ट्रपति और विज्ञान लेखन में प्रमुखता से बिकने वाली पुस्तकों के महान लेखक के रूप में भी बनी रहेगी।

डॉ. कलाम साहब के सन्देश-

1. अपनी पहली जीत के बाद कभी आराम मत करिए, क्योंकि दूसरे मौके पर अगर आप असफल हुए तो पहले से कई अधिक लोग कहने के लिए तैयार हैं कि पहली जीत महज भाग्य की बात थी।
2. सारी चिड़िया बारिश होने पर किसी आड़ में जाकर उसमें बचती है वहीं चील बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से बचती है।
3. अगर आप सूर्य की तरह चमकना चाहते हैं तो पहले उसकी तरह जलिए।
4. हम सबके पास बराबर प्रतिभा नहीं है परंतु हमारे पास प्रतिभा को विकसित करने का बराबर मौका मिलता है।
5. सपने वे नहीं जो हम नींद में देखते हैं, सपने तो वह है जो हमें सोने नहीं देते हैं।
6. अगर आप रेत पर अपने कदमों को निशान छोड़ना चाहते हैं तो एक ही उपाय हैं... कदम पीछे मत खींचिए।
7. प्रकृति को प्यार करो और उसके आशीष का सम्मान करो तभी तुम देवत्व को देख पाओगे।
8. अच्छे लोगों से मिलने का अनुभव अपने आप में एक शिक्षा है।

भारत वर्ष सदैव आपका ऋणी रहेगा, युग परिवर्तक, युग संस्थापक, युग संचालक, हे युगाधार, युग निर्माता, युगमूर्ति, आपको युग युग तक युग का नमस्कार।

शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक,
पाली (राज.)
मो.न.: 9784148880

सपनों को नए आयाम देती बालिकाएँ

❒ मोहर सिंह मीना 'सलावद'

आप किसी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात बता सकते है।

–जवाहर लाल नेहरु

किसी भी राष्ट्र का सुधार बालिका की शिक्षा पर निर्भर करता है। देश की उन्नति को उस देश की महिला व बालिका शिक्षा से जाना जा सकता है। प्रति वर्ष 11 अक्टूबर को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस का मकसद है बालिकाओं के जीवन में आने वाली समस्याओं के मुद्दों पर विचार विमर्श करके नए समाधान निकाले जाएं। गरीबी, संघर्ष, शोषण व भेदभाव का शिकार होती लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य व सामाजिक वातावरण में बदलाव किया जाए। लड़कियों को शिक्षित करना और उनके सपनों को नए आयाम देना ही अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस का मूल उद्देश्य है। अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने की प्रेरणा कनाडा की संस्था प्लान इंटरनेशनल के बिकॉज आई एम गर्ल क्योंकि मैं एक लड़की हूँ से मिली। इस अभियान के तहत वैश्विक स्तर पर लड़कियों के पोषण व स्वास्थ्य के लिए जागरुकता फैलाई जाती थी। इस अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने के लिए कनाडा सरकार से संपर्क किया गया। कनाडा सरकार ने 55 वीं आम सभा में इस प्रस्ताव को रखा। अंतत: संयुक्त राष्ट्र ने 19 दिसंबर 2011 को इस प्रस्ताव को पारित किया और इसके लिए 11 अक्टूबर का दिन चुना गया। इस प्रकार पहला अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस 11 अक्टूबर 2012 को मनाया गया और इसकी थीम बाल विवाह को समाप्त करना रखी गई थी।

जो काफी हद तक सफल रहा है। 2013 में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस की थीम थी लड़कियों की शिक्षा का नवीनीकरण जिससे लड़कियों को पढ़ने और उच्च शिक्षा हासिल करने का समान अवसर प्राप्त हो इसके लिए पूरी दुनिया भर में 2043 कार्यक्रम चलाए गए। 2014 में तीसरा अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया था इसका मुख्य विषय किशोरावस्था की लड़कियों को सशक्त बनाना तथा हिंसा के चक्र को खत्म करना था। इसके तहत लड़कियों पर हो रही हिंसा की तरफ ध्यान केंद्रित किया गया। वर्ष 2015 में चौथे अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया था जिसका विषय था लड़कियों की शक्ति 2030 के लिए विजन मुख्य उद्देश्य सन 2030 तक लड़कियों को पावर देने का था ताकि वह अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकें। वर्ष 2016 पांचवा अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया। जिसका विषय था लड़कियों की प्रगति लक्ष्य की प्रगति लड़कियों के लिए क्या मायने रखता है लड़कियों के लिए उनके लक्ष्य की प्रगति के क्या मायने हैं इस बारे में बताया गया। वर्ष 2017 में छठा अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया था इसका विषय लड़कियों को सशक्त होना : किसी संकट के पहले, दौरान या बाद में' रखा गया था इसके तहत लड़कियों को अपने आप को सशक्त बनाने की दिशा पर जोर दिया गया था। साल 2018 में सातवां अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस इस वर्ष मनाया गया जिसका विषय था विथ हर : ए स्किल्ड गर्लफ़ोर्स'। इसी प्रकार 2019 में आठवें अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया गया था जिसका विषय गर्ल फोर्स– अनस्क्रिप्टेड एंड अनस्टॉपेबल (GirlForce: Unscripted and Unstoppable) रखा गया था। वर्ष 2020 में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया था जिसका विषय मेरी आवाज़, हमारा समान भविष्य है, रखा गया था। वर्ष 2021 में दसवां अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इसी प्रकार डिजीटल वर्ल्ड के जमाने में बालिका दिवस 2021 की थीम 'डिजीटल पीढ़ी–हमारी पीढ़ी' रखी गई है। 2022 की थीम थी डिजिटल पीढ़ी हमारी पीढ़ी हमारा समय अभी है हमारे अधिकार हमारे भविष्य रखी गई थी। इस दिवस को बालिकाओं के द्वारा हर क्षेत्र में अपना योगदान देने के साथ साथ चुनौतियों का सामना कर रही है। लड़कियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने, उनके सहयोग के लिए सरकार व अनेक संस्थाओं द्वारा कार्य किया जा रहा है। लड़कियों के मानव अधिकारों की उन्नति के लिए उनकी सहायता करना आवश्यक होता है। इसके अलावा पूरे विश्व में इस दिवस को चिह्नित करने के लिए विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते है। जैसे संगीत और खेल के कार्यक्रम। इस दिन विभिन्न समुदायों, राजनीतिक संगठन और संस्थाओं द्वारा बालिकाओं को समान शिक्षा और उनको मौलिक स्वतंत्रता के महत्त्व के बारे में लोगों को संबोधित कर जागरूक करते है। साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बालिका दिवस मनाने के पीछे विभिन्न उद्देश्य हैं जिसके मद्देनजर इस दिवस की शुरुआत की गई।

1. बालिका दिवस मनाने का उद्देश्य महिलाओं व बालिकाओं का सशक्तिकरण करना है ताकि उन्हें अपनी आवश्यकताओं और आत्मरक्षा के लिए दूसरों पर निर्भर ना होना पड़े और अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना सके।

2. समाज में लड़कियों के साथ होने वाली लैंगिक असमानताओं को समाप्त करने के लिए पुरुष वर्ग और संपूर्ण समाज को जागरूक करना ताकि बालिकाओं को समाज में उनका उचित अधिकार मिल सके और वो भी पुरुषो के साथ प्रत्येक क्षेत्र खेल, राजनीति, शिक्षा आदि में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर सके।

3. बालिकाओं को उच्च शिक्षा मिल सके व उनके पोषण के साथ उन्हें कानूनी अधिकार के प्रति जागरूक हो सके।

4. बालिकाओं के हो रहे शोषण, हिंसा एवं भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न और बाल विवाह जैसे चीजों के खिलाफ आवाज उठाना और महिलाओं के बारे में मानी जाने वाली रूढ़िवादी परंपराओं को खत्म करना।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रति वर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका का दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार ने भी 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया। राज्य सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बहुत सारी योजनाएँ चलाई जा रही

है जिससे बालिकाओं के सपनों को पंख लग सके। राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग में विविध प्रकार की योजनाएँ और इनके प्रोत्साहन एवं संरक्षण के लिए कार्यक्रम चल रहें है। जिसका लाभ बालिकाएँ प्राप्त कर रही है।

1. नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना
2. गार्गी पुरस्कार
3. नि:शुल्क स्कूटी वितरण
4. छात्रवृत्ति योजनाएं
5. बालिका दूरस्थ शिक्षा योजना
6. कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय
7. पालनहार योजना
8. आत्मरक्षा प्रशिक्षण
9. गुड टच बेड टच
10. मुख्यमंत्री राजश्री योजना
11. सुकन्या समृद्धि योजना

आदि सहित अनेक योजनाएँ जिनसे बालिका शिक्षा व उनको आगे बढ़ने का अवसर मिले के लिए भारत व राज्य सरकार द्वारा संचालित की जा रही है। बालिकाओं के सपनों को नए आयाम देने के लिए प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि उन्हें सुरक्षात्मक माहौल प्रदान करने का अपना दायित्व निभाया जाएं। जिससे प्रत्येक बालिका हर क्षेत्र में अपना देश का नाम रोशन कर सके। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत का भविष्य स्त्री की गोद में है। एक शिक्षित नारी ही शिक्षित समाज को जन्म दे सकती है। तुम (स्त्री) भारत के बच्चों को ऐसी शिक्षा दे सकती हो कि वह निडर एवं बहादुर, स्त्री-पुरुष बनें।

वर्तमान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने कहा है कि बालिका शिक्षा में निवेश से राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है क्योंकि वे अर्थव्यवस्था और समाज में समग्र रूप से एक सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं।

साथ ही किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को अनदेखा नही किया जा सकता है। महिला और पुरुष दोनों समान रूप से समाज के दो पहियों की तरह कार्य करते हैं और समाज को प्रगति की ओर ले जाते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक (हिंदी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ जिला-अनूपगढ़ (राज.)
मो.न.: 09414846786

शास्त्री जयंती विशेष

सादगी के प्रतीक 'शास्त्री जी'

❒ सुनीता रेवाड़

विनम्रता, सादगी और सरलता किसी भी व्यक्तित्व के वे गुण है जो एक प्रकार का चमत्कारिक आकर्षण पैदा करते हैं। सादगी की प्रतिमूर्ति के रूप लाल बहादुर शास्त्री का कोई पर्याय नहीं है। उन्हें शांति के प्रतीक के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने हमेशा आक्रामकता के बजाय अहिंसा का रास्ता अपनाया।

शास्त्री जी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए व सामान्य स्थितियों में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँच कर भी उन्होंने कभी भी सरलता व सादगी का दामन नहीं छोड़ा। काशी विद्यापीठ से स्नातक की डिग्री हासिल करने वाले शास्त्री जी ने शास्त्री उपनाम यहीं ग्रहण किया था।

शास्त्री जी के राजनीतिक गुरु के रूप में गाँधीजी ने उनके व्यक्तित्व को अत्यन्त प्रभावित किया। गाँधीजी की ही प्रेरणा से वे मेहनत को प्रार्थना के समान मानते थे। गाँधीजी ने उन्हें असहयोग आन्दोलन में शामिल होने के लिए कहा। उस समय शास्त्री जी मात्र सोलह वर्ष के थे लेकिन गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ने का निर्णय कर लिया था। वर्ष 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लेने पर जेल जाना पड़ा व 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान चार वर्ष तक जेल की सजा काटी।

शास्त्री जी अपने देश के लिए बलिदान और सच्ची देशभक्ति के लिए सदैव जाने जाएँगे।

1964 से 1966 तक भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में अद्वितीय राष्ट्रसेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया। 18 माह के अत्यंत छोटे कार्यकाल में उन्होंने अद्वितीय नेतृत्व क्षमता व फौलादी इरादों का परिचय दिया। 1965 में जब देश का पाक के साथ युद्ध का संकट छाया था तब दशहरे के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में शास्त्री ने पहली बार 'जय जवान-जय किसान' का नारा देकर देश को सैन्य व खाद्यान्न के क्षेत्र में

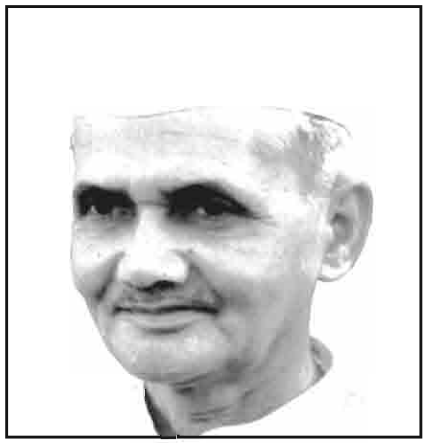

आत्मनिर्भर होने हेतु प्रेरित किया। खाद्यान्न संकट के कारण उन्होंने न केवल अपने सरकारी आवास पर खेती का कार्य शुरू किया बल्कि 'जय जवान-जय किसान' के नारे के साथ देश के किसानों को खेती अपनाने हेतु प्रेरित किया। इससे न केवल देश खाद्यान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना बल्कि खाद्यान्न को निर्यात करने की क्षमता भी विकसित की। कृषि प्रधान भारत देश में कृषि सुधार लागू किए व सिंचाई हेतु नहरें बनवाई और किसानों के लिए फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य लागू किया।

शास्त्री जी के सादगीपूर्ण व सरल व्यक्तित्व व असाधारण जीवन काल से शिक्षा मिलती है कि यदि हमारा निश्चय पक्का है, संकल्प दृढ़ है तो हम जीवन में कोई भी असाधारण उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। उनकी अद्वितीय राष्ट्र सेवा हेतु 1966 में ऋणी राष्ट्र ने उन्हें मरणोपरांत सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' समर्पित किया।

विनम्र, सहिष्णु, महान आंतरिक शक्ति और दृढ़ संकल्पवान, दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी शास्त्री जी ने देश को निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। ऐसी महान विभूति को मेरा शत शत नमन!

अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सबलपुरा, सीकर (राज.)

जेंडर समानता : हेल्थ एंड वेलनेस

❒ दिलीप कुमार प्रजापति

राजस्थान के सरकारी स्कूलों में हेल्थ एंड वैलनेस प्रोग्राम शिक्षा मंत्रालय और स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय ने संयुक्त रूप से आयुष्मान भारत के तहत स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम की शुरुआत की है। चिकित्सा विभाग और राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उदयपुर की साझेदारी में स्कूलों के लिए 11 बिंदुओं पर पाठ्यक्रम को नया रूप दिया गया है। पाठ्यक्रम में स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना, प्रजनन, स्वास्थ्य एवं एचआईवी की रोकथाम, पोषण स्वास्थ्य और स्वच्छता, पदार्थ के दुरुपयोग की रोकथाम और प्रबंधन, भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य, पारस्परिक संबंध में स्वास्थ्य बढ़ाना, जेंडर समानता, चोटों से सुरक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना आदि प्रमुख बिंदु शामिल हैं। टीचर्स ट्रेनिंग के बाद अब हर मंगलवार को छात्रों को ट्रेनिंग दी जा रही है। एंबेसडर और मैसेंजर की भूमिका स्कूलों में क्लास 6 से 12वीं तक के विद्यार्थियों की गतिविधियों की जानकारी मैसेंजर द्वारा एंबेसडर को सूचित किया जाता है। कार्यक्रम के तहत प्रत्येक क्लास के साथ दो बच्चे मैसेंजर का काम करते हैं। प्रत्येक विद्यालय में शिक्षकों को हेल्प एंबेसडर बनाया गया है। छात्र के बीमार पड़ने की जानकारी मैसेंजर एंबेसडर यानि शिक्षक को दे रहे हैं ताकि बच्चों को समय पर अच्छा उपचार मिल सके।

इसके अनुरूप नवक्रमोन्नत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रुपारेल छापरिया, बाँसवाड़ा में माह सितम्बर 2023 के दो मंगलवार को लिंग समानता (जेंडर इक्वलिटी) मॉड्यूल पर विद्यालय में दो सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय कार्यक्रम प्रभारी एवं एंबेसडर द्वारा दो सत्रों के माध्यम से लिंग समानता पर लड़का और लड़की की समानता पर जानकारी साझा और चर्चा की गई। कार्यक्रम के दौरान एक लड़का और एक लड़की पंक्ति और स्तम्भ में बैठक की व्यवस्था पहल शुरू की गई। विद्यार्थियों में लिंग समानता पर आज के आधुनिकता युग में आज हर क्षेत्र में महिलाओं और लड़कियों के आगे आने से भारत के विकास में भागीदारी बढ़ी है।

फिर भी भारत में लैंगिक असमानता के कारण अवसरों में भी असमानता उत्पन्न होती है, जिसका प्रभाव दोनों लिंगों पर पड़ता है। यूनिसेफ के आँकड़ों के आधार पर देखें तो इस भेदभाव से सबसे अधिक लड़कियाँ अच्छे अवसरों से वंचित रह जाती है। भारत में लड़के और लड़कियों के बालपन के अनुभव में बहुत अंतर होता है। यहाँ लड़कों को लड़कियों की तुलना में अधिक स्वतंत्रता मिलती है। जबकि लड़कियों की स्वतंत्रता में अनेक पाबंदियाँ होती है ऐसी पाबंदी का असर उनकी शिक्षा, विवाह और सामाजिक रिश्तों, खुद के लिए निर्णय के अधिकार आदि को प्रभावित करती है। इन सभी तथ्यों को बच्चों के सामने रखकर प्राचीन समय से भारत सहित विश्व की विभिन्न क्षेत्रो में अग्रिम पंक्तियों में रहने वाली महिलाओं का उदाहरण जैसे लड़कियों की शिक्षा और समाज के उत्थान के लिए सावित्री बाई फुले, भारत की आजादी की लड़ाई में एक अहम भागीदारी सरोजिनी नायडू, स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत, जिन्होंने मास्को, लंदन और वॉशिंगटन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, विजयलक्ष्मी पंडित, महिला सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधीश के रूप में, एम फातिमा बीवी, कवयित्री और उपन्यासकार बंग महिला के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त राजेन्द्र बाला घोष, पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी, पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी, पहली महिला लोकसभा स्पीकर मीरा कुमार, मदर टेरेसा, बछेंद्री पाल, अंतरिक्ष में जाने वाली देश की पहली भारतीय मूल की महिला कल्पना चावला के बारे में चर्चा के साथ प्रस्तुत किए गए। जिससे लड़कियाँ अपनी रुचि, क्षेत्र के अनुसार जागरूकता के साथ आगे बढ़ पाए। आज महिलाएं घेरलू कार्य से लेकर सभी कार्यों में अपना कंधे से कंधा मिलाकर भागीदारी निभा रही है।

अध्यापक लेवल 2 (गणित विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रुपारेल छापरिया,
बाँसवाड़ा (राज.)

एकता के प्रतीक सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार तेरी सरपरस्ती का, सजदा करते हैं।
तेरी रहनुमाई में जीने का, वादा करते हैं।।
हम भारत के वासी तुम पर, भरोसा ज्यादा करते हैं।
वल्लभ भाई एकता का, निनाद करते हैं।।

गुलामी की जंजीरों से, आजाद कराया भारत को।
रजवाड़ों और रियासतों से, वतन बनाया भारत को।।
विनय-निवेदन सारे करके, एक राष्ट्र बनाया भारत को।
नहीं माने तो आँख दिखाकर, संपूर्ण बनाया भारत को।।

संकल्पों के शिखर पुरुष तुम, वाकई कोई अवतारी थे।
भोली-भाली मासूम प्रजा के, एकमात्र हितकारी थे।।
महा भयंकर ब्रिटिश राज के, तुम पक्के प्रतिकारी थे।
घोर निराशा और अंधकार में, तुम चमकदार चिंगारी थे।।

विश्वास दिलाते हैं हम सब, हे महामना तुम जहाँ रहो।
हिल मिल कर हम सदा रहेंगे, पक्का तुम विश्वास रखो।
जात-पात और क्षेत्रवाद का, कभी कोई विवाद ना हो।
एकता की नाजुक डोर को, यत्नपूर्वक महफूज रखो।।

जगदीश चन्द्र शर्मा, व्याख्याता (हिन्दी) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बागूदार, जहाजपुर, शाहपुरा (राज.) मो.न.: 9413863435

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2023

1. विद्यालयों में मासिक शिविरा पत्रिका की सदस्यता/नवीनीकरण बाबत।
2. Mission START 2023–24 कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में विस्तृत दिशा–निर्देश।
3. समस्त पूर्व/उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं में जारी की गयी बजट अधिकृति के सही बजट मद में व्यय के संबंध में।
4. वर्ष 2016 से पूर्व अवितरित छात्रवृत्ति राशि को चालान के माध्यम से जमा करवाने बाबत।
5. राज्य सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं को शालादर्पण पोर्टल के बेनिफिशियरी मॉड्यूल पर ऑनलाइन आवेदन के संबंध में।

1. विद्यालयों में मासिक शिविरा पत्रिका की सदस्यता/नवीनीकरण बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/प्रकाशन/2022/ दिनांकः 21.09.2023 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक ● विषयः विद्यालयों में मासिक शिविरा पत्रिका की सदस्यता/नवीनीकरण बाबत।

मासिक शिविरा पत्रिका में प्रतिमाह अपनों से अपनी बात, मेरा संदेश, दिशाकल्पः मेरा पृष्ठ जैसे महत्त्वपूर्ण पृष्ठों, शैक्षिक एवं साहित्यिक आलेखों के माध्यम से विभिन्न महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक जानकारियां साझा की जाती है। इसी प्रकार विद्यालयों में किए गए नवाचार, भामाशाहों के सहयोग से विद्यालयों का कायाकल्प किए जाने के प्रयासों से भी अवगत कराया जाता है। स्थायी स्तंभ यथा आदेश परिपत्र, विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई पेंटिंग, चित्र, कविता आदि बाल शिविरा के नाम से प्रकाशित किए जाते हैं।

यह ध्यान में आया है कि कुछ संस्थाप्रधानों द्वारा शिविरा पत्रिका की सदस्यता नहीं ली है अथवा सदस्यता नवीनीकरण नहीं करवाया है, जो कि उचित नहीं है। आपको निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्था प्रधानों को शिविरा पत्रिका सदस्यता लेने हेतु निर्देशित करें। यह सुनिश्चित कर लेवे कि नवीन खोले गए, क्रमोन्नत एवं परिवर्तित विद्यालयों के संस्था प्रधानों द्वारा सदस्यता ग्रहण कर ली गई है एवं पुराने सदस्यों का शुल्क जमा करवाकर सदस्यता का नवीनीकरण कर लिया गया है। जिन विद्यालयों के पत्र व्यवहार के पते (Address) का अपडेशन किया जाना है, उनका अपडेशन करवाते हुए जिले के समस्त विद्यालयों की सूचना अग्रांकित प्रपत्र में तैयार कर विभागीय ई-मेल shivira.dse@rajasthan.gov.in पर प्रेषित कर पालना सुनिश्चित करें।

प्रपत्र

जिले में संचालित समस्त विद्यालयों के संबंध में समेकित सूचना बाबत

(प्रपत्र हिन्दी फॉन्ट DevLys010 में तैयार कर PDF/Excel (Hard Copy & Soft Copy) में प्रस्तुत करें)

क्र. सं.	जिला	ब्लॉक	विद्यालय का पूरा नाम एवं पता (सरकारी/गैर सरकारी विद्यालय) मय लैण्डमार्क, पिन कोड	संस्थाप्रधान /प्रभारी के मोबाइल नम्बर	राशि	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7

इस कार्य हेतु जिला समान परीक्षा केन्द्र को प्रभारी बनाया जाकर जिले के समस्त विद्यालयों की सदस्यता/नवीनीकरण शुल्क दिनांक 15.10.2023 तक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से बैंक ड्राफ्ट बनाकर इस कार्यालय को प्रेषित करें।

●**(काना राम) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. Mission START 2023–24 कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में विस्तृत दिशा–निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/गुण. एवं प्रशि. अनु./ई-कक्षा/मिशन स्टार्ट/61187/2023–24 दिनांकः 21.09.2023 ● समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा। समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। समस्त पीईईओ/यूसीईईओ। ● विषयः Mission START 2023-24 कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश। ● प्रसंगः शासन का पत्रांक F17(1)Edu-1/Misc./2017 part-1-00702 जयपुर दिनांक 12.09.2023 के क्रम में।

शिक्षा विभाग द्वारा ''ब्लैन्डेड मोड ऑफ लर्निंग'' के प्रयोग से शिक्षा को प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। डिजिटल शिक्षा सभी शिक्षार्थियों के लिए एक आनंददायक साधन है। विशेष रूप से स्कूली विद्यार्थियों के सीखने के लिए यह एक अत्यंत प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहा है, क्योंकि डिजिटल शिक्षा से मिलने वाली ऑडियो वीडियो सुविधा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ना केवल संज्ञानात्मक तत्वों की वृद्धि करती है बल्कि विद्यार्थियों में विषय के प्रति रोचकता एवं उत्साह को भी बढ़ाती है। इसी के दृष्टिगत माननीय मुख्यमंत्री महोदया द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 05 सितम्बर, 2023 को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में विभागीय नवाचार फ्लैगशिप कार्यक्रम Mission START 2023–24 का शुभारंभ किया गया है।

यह कार्यक्रम राज्य के दूरदराज के इलाकों में अध्ययनरत उन विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर तैयार किया है, जहाँ शिक्षा की पहुँच पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है अर्थात या तो इन विद्यालयों में शिक्षकों के पद रिक्त है अथवा अन्य किसी कारणवश विषयाध्यापकों की उपलब्धता में कमी है। मिशन स्टार्ट के माध्यम से ऐसे समस्त विद्यालयों में

विषयाध्यापकों के पद रिक्त अथवा शिक्षक अनुपस्थिति की स्थिति में कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों को विभाग द्वारा निर्मित डिजिटल कंटेंट के माध्यम से अध्ययन करवाया जाकर यह सुनिश्चित किया जाना है कि शिक्षकों की कमी/अनुपस्थिति का प्रतिकूल प्रभाव विद्यार्थी की अध्ययन निरंतरता पर न हो।

❖ Mission START 2023–24 के उद्देश्य–

1. जिन विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 के विषयाध्यापकों के पद रिक्त है अथवा किसी भी कारणवश (यथा दुर्घटना, मातृत्व अवकाश, अन्य मेडिकल आपात स्थितियों में) शिक्षक की उपलब्धता नहीं होने की स्थिति में विद्यार्थियों को उक्त विषय का डिजिटल माध्यम से शिक्षण करवाया जाना है।
2. विद्यालयों में उपलब्ध क्रियाशील आईसीटी लैब, कम्प्यूटर्स, विभिन्न डिजिटल संसाधन यथा स्मार्ट टी.वी./आई.एफ.पी.डी./प्रोजेक्टर/इंटरेक्टिव पैनल/स्मार्ट बोर्ड इत्यादि की उपलब्धता का आंकलन किया जाकर इन समस्त डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग विद्यार्थी शिक्षण में किया जाना है।
3. शिक्षक विहीन अथवा शिक्षकों की कमी वाले विद्यालयों में सभी विषयों का ई-कंटेन्ट उपलब्ध करवाना। ई-कन्टेन्ट की उपलब्धता परिस्थिति अनुसार हार्ड डिस्क, पैन ड्राइव आदि के माध्यम से सुनिश्चित करवाना तथा ई-कन्टेन्ट की मैपिंग करना।
4. विद्यालयों में उपलब्ध इंटरनेट का समुचित उपयोग कर विभागीय यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से विद्यार्थियों का शिक्षण सुनिश्चित करना है।
5. विद्यालय की आवश्यकता के अनुसार ब्लेंडेड मॉड ऑफ टीचिंग (ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों माध्यमों से) के लिए समुचित समय की सारणी तैयार करवाना तथा जिसके अनुसार कक्षाओं का सुचारू संचालन करवाना।

❖ **Mission START कार्यक्रम का क्रियान्वयन–** विद्यालयों में आईसीटी लैब्स तथा कम्प्यूटर्स, विभिन्न डिजिटल संसाधन यथा स्मार्ट टी.वी./आई.एफ.पी.डी./प्रोजेक्टर/इंटरेक्टिव पैनल/स्मार्ट बोर्ड इत्यादि उपलब्ध है। अतः इन संसाधनों के उचित उपयोग से विभाग के दक्ष शिक्षकों के द्वारा निर्मित इस ई-कंटेंट को विद्यालयों तक पहुँचाया जाना और उसका समुचित उपयोग करवाना विभाग की प्राथमिकता है।

डिजिटल लर्निंग विद्यार्थियों को अपनी सीखने की गति के अनुसार अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करता है साथ ही शिक्षक भी नवाचारों एवं नए विचारों के समावेश से अपने अध्यापन को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। डिजिटल शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों का समग्र विकास भी किया जा सकता है। क्योंकि इन्हीं सभी बिन्दुओं के मद्देनजर विभाग द्वारा मिशन स्टार्ट कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया है। जिसका क्रियान्वयन निम्नानुसार किया जाना है–

लक्षित समूह

- कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थी।

विद्यालय में हार्डवेयर उपलब्धता एवं क्रियाशीलता की स्थिति–

- मिशन स्टार्ट कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए समस्त अधिकारीगण अपने परिक्षेत्र के समस्त विद्यालयों में उपलब्ध आईसीटी योजनान्तर्गत अथवा भामाशाह या अन्य किसी भी माध्यम से उपलब्ध सभी डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्ट टी.वी./आई.एफ.पी.डी./प्रोजेक्टर/इंटरेक्टिव पैनल/स्मार्ट बोर्ड इत्यादि की उपलब्धता एवं क्रियाशील उपकरणों की संख्या स्वयं के स्तर पर संधारित की जानी है।
- साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि अधिक से अधिक उपकरण व आईसीटी लैब्स क्रियाशील स्थिति में रहें ताकि ई-कंटेंट द्वारा कक्षाओं का संचालन निर्बाध रूप से हो सके।

पदरिक्ति/शिक्षक की अनुपस्थिति

- सभी अधिकारीगण अपने परिक्षेत्र में कक्षा 9-12 तक शैक्षिक रिक्त पदों का आंकलन करेंगे साथ ही विविध परिस्थितियों यथा मातृत्व अवकाश, चाइल्ड केयर लीव, मेडिकल अवकाश इत्यादि किसी भी कारण से शिक्षक लंबे अवकाश पर है तो यह जानकारी भी संधारित करेंगे तथा मांगे जाने पर निदेशालय के अधिकारियों को प्रेषित करेंगे।
- सामान्य आकस्मिक अवकाश की स्थिति में भी शिक्षक के साप्ताहिक पाठ योजना के अनुरूप निर्धारित पाठ्यसामग्री का ई-कंटेंट विद्यार्थियों को दिखाया जाना है।

ई-कन्टेन्ट की उपलब्धता एवं मैपिंग–

1. **हार्ड-डिस्क के माध्यम से–** प्रत्येक विद्यालय तक हार्ड डिस्क के माध्यम से ई-कंटेन्ट की पहुँच करने के लिए समसा आईसीटी सेल द्वारा इस हेतु 15070 हार्ड डिस्क (4TB) की ई-कन्टेन्ट सहित विद्यालयों तक पहुँचाई जाएगी। समस्त अधीनस्थों को समसा द्वारा आवश्यकतानुसार तकनीकी सहयोग प्रदान किया जाएगा।
2. **विभागीय यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से–** इंटरनेट की उपलब्धता होने की स्थिति में विभागीय यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से कन्टेन्ट दिखाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
3. **ई-कन्टेन्ट द्वारा निरन्तर कक्षा शिक्षण–** विद्यालय में ई-कन्टेन्ट की पहुँच सुनिश्चित करने के पश्चात प्रतिदिन विद्यालयवार निर्धारित समय सारणी के अनुसार कक्षाएँ लिया जाना सुनिश्चित किया जाए।
4. **ई-कंटेंट की मैपिंग–** समस्त पाठ्यक्रम के लिए निर्मित ई-कंटेंट में से कौनसा कंटेंट किस विषय वस्तु के लिए निर्धारित है। इसे स्कूल लैसन गाइडेंस मॉड्यूल में वर्णित किया गया है। इस मैपिंग किए गए ई-कंटेंट के अनुरूप ही कक्षा-कक्ष में रिक्त कालांश में उसी विषय के शिक्षण के लिए दिए गए ई-कन्टेन्ट के लिंक अथवा सामग्री का ही उपयोग किया जाना है।

विद्यालयवार समय सारणी तैयार करना–

- विद्यालय में रिक्त पदों एवं अनुपस्थित शिक्षकों की संख्या के अनुरूप मिशन कार्यक्रम के लिए बनाए गए स्कूल लैसन गाइडेंस मॉड्यूल के अनुसार विद्यालयों में ही विषय के रिक्त कालांश की पूर्ति हेतु उसी विषय के शिक्षण के लिए उपयोग किए जाने के लिए समय सारणी का

निर्माण किया जाना है।

- उक्त निर्मित समय सारणी का प्रिंट विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जाना अनिवार्य रहेगा।

ई–कन्टेन्ट का उपयोग

- कक्षा 9 से 12 तक के शैक्षिक रिक्त पदों के अनुरूप ई–कन्टेन्ट का उपयोग निर्धारित समय सारणी के अनुसार किया जाना है।

शालादर्पण मॉड्यूल पर प्रविष्टि–

- स्कूल लैसन गाइडेंस मॉड्यूल के अनुसार निर्मित की गई समय सारणी को प्रत्येक सप्ताह के शुक्रवार को शालादर्पण मॉड्यूल पर प्रविष्ट किया जाना है।

❖ **कार्य एवं दायित्व–** 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की विस्तृत योजना उपर्युक्त निर्देशानुसार प्रत्येक कार्यालय (JD/CDEO/DEO/CBEO) तथा विद्यालयों के संस्थाप्रधानों को क्रियान्वयन की कार्य योजना तैयार करनी है तथा पत्र में प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप विद्यालयों में ई–कन्टेन्ट की उपलब्धता एवं इसके माध्यम से सुचारू शिक्षण प्रारम्भ करवाना है। 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की जिलेवार समीक्षा एवं संबलन के संबंध में विभिन्न स्तरों पर करणीय कार्य निम्नानुसार है–

संयुक्त निदेशक

- संभाग स्तर पर अपने कार्यालय में 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की मॉनिटरिंग हेतु स्वयं नोडल अधिकारी रहेंगे। अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक) को सह नोडल अधिकारी बनाकर संभाग की प्रति दिवस सुदृढ़ मॉनिटरिंग करेंगे।
- समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, निदेशालय, समसा कार्यालय, एससीईआरटी कार्यालय में कार्यरत RCSE जिला प्रभारी अधिकारी प्रति दिवस प्रभाग वाले किसी न किसी एक विद्यालय के शिक्षकों के साथ वीडियो कॉल द्वारा जुड़कर उनसे 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबलन प्रदान करेंगे।
- समस्त अधीनस्थ जिलाधिकारियों द्वारा 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' के प्रबोधन हेतु साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन करना एवं बैठक कार्यवृत्त निदेशालय को भिजवाना।
- विद्यार्थियों तक ई–कन्टेन्ट की समय पर पहुँच एवं उपलब्धता सुनिश्चित होने के साथ–साथ उसके ई–कन्टेन्ट से अध्ययन करने में सहजता आने की स्थिति में एवं ई–कन्टेन्ट के उपयोग में आ रही कठिनाइयों के संबंध में जानकारी लेना एवं उनका निस्तारण करना।
- अपने क्षेत्राधिकार में 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' ई–कन्टेन्ट की उपलब्धता एवं इसके प्रभावी उपयोग की रिपोर्ट प्रत्येक दो सप्ताह में निदेशालय की ई–मेल आईडी– quality.missionstart@gmail.com पर प्रेषित करें।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी

- उक्तानुसार 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' के प्रबोधन कार्य हेतु जिला स्तर पर सीडीईओ स्वयं नोडल अधिकारी रहेंगे। अपने कार्यालय के सहायक निदेशक को सह नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त करेंगे।
- जिशिअ. माध्यमिक तथा प्रारम्भिक को ब्लॉक आवंटित कर विद्यालयों में 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की प्रगति समीक्षा करते हुए संबलन प्रदान करेंगे।
- अधीनस्थ जिलाधिकारियों के साथ मासिक समीक्षा बैठक आयोजित करें तथा फील्ड फीडबैक के आधार पर प्रक्रियाओं में सुधार पर ध्यान दें।
- विद्यार्थियों तक ई–कन्टेन्ट की समय पर पहुँच तथा उपलब्धता सुनिश्चित होने के साथ–साथ उसके ई–कन्टेन्ट से अध्ययन करने में सहजता आने की स्थिति में तथा ई–कन्टेन्ट के उपयोग में आ रही कठिनाइयों के संबंध में जानकारी लेना एवं उनका निस्तारण करना है।
- अपने क्षेत्राधिकार में विद्यालय पीटीएम में भाग लें, माता–पिता की उपस्थिति सुनिश्चित करें तथा उन्हें विभागीय नवाचार 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' ई–कन्टेन्ट की उपलब्धता एवं इसके प्रभावी उपयोग की जानकारी देंगे तथा इस संबंध में प्राप्त प्रक्रियाओं को विभाग के साथ quality.missionstart@gmail.com पर साझा करेंगे।

जिला शिक्षा अधिकारी

- अपने क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं आईसीटी लैब, स्मार्ट टी.वी., प्रोजेक्टर इत्यादि सभी डिजिटल संसाधनों का आकलन करना।
- परिक्षेत्र में आने वाले समस्त विद्यालयों में इन्टरनेट की उपलब्धता तथा यदि इंटरनेट उपलब्ध हो तो ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन प्रारंभ करवाना।
- ई–कन्टेन्ट की समस्त विद्यालयों तक पहुँच सुनिश्चित करना एवं अधिकतम उपलब्ध हार्डवेयर को क्रियाशील स्थिति में तैयार करवाना।
- प्रत्येक विद्यालय में आवश्यकतानुसार 'ब्लेन्डेड मोड ऑफ लर्निंग' के लिए समय सारणी तैयार करवाना तथा इसका उपयोग सुनिश्चित करना।
- प्रबोधन हेतु जिला/ब्लॉक स्तर पर अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी/अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वितीय को नोडल अधिकारी बनाकर जिले की प्रति दिवस सुदृढ़ मॉनिटरिंग करेंगे।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी–

- 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की मॉनिटरिंग हेतु CBEO स्वयं नोडल अधिकारी रहेंगे। ACBEO -I को सह नोडल अधिकारी बनाकर ब्लॉक स्तर की प्रति दिवस सुदृढ़ मॉनिटरिंग करेंगे।
- CBEO स्वयं अपने स्टाफ के अन्य सदस्यों, पीईईओ और यूसीईईओ (शहरी नोडल) के माध्यम से विद्यार्थियों तक ई–कन्टेन्ट की समय पर पहुँच एवं उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ–साथ ई–कन्टेन्ट के उपयोग में आ रही कठिनाइयों के संबंध में जानकारी लेना एवं उनका निस्तारण करना।
- व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों से मिशन स्टार्ट कार्यक्रम से पढ़ाए गए ई–कन्टेन्ट के विषय में प्रश्न पूछे तथा विद्यार्थियों के लिए इसकी उपयोगिता का आकलन करेंगे।

- अपने क्षेत्राधिकार में विद्यालय पीटीएम में भाग लें, माता-पिता की उपस्थिति सुनिश्चित करें तथा उन्हें विभागीय नवाचार 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' ई-कन्टेन्ट की उपलब्धता एवं इसके प्रभावी उपयोग की जानकारी देंगे।

PEEO/UCEEO-

- 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की मॉनिटरिंग हेतु PEEO/UCEEO स्वयं नोडल अधिकारी रहेंगे।
- PEEO स्वयं अपने परिक्षेत्र के सभी विद्यालयों में कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं आईसीटी लैब, स्मार्ट टी.वी., प्रोजेक्टर इत्यादि सभी डिजिटल संसाधनों एवं विद्यालयों में इंटरनेट की उपलब्धता का आकलन करेंगे। अधिकतम उपलब्ध हार्डवेयर को क्रियाशील स्थिति में तैयार करवाना।
- अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले समस्त विद्यालयों में ई-कन्टेन्ट की पहुँच सुनिश्चित करेंगे तथा अपने परिक्षेत्र में आने वाले समस्त विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक शैक्षिक रिक्त पदों का आकलन कर कालांश निर्धारित करते हुए समय सारणी का निर्माण करेंगे एवं इस समय सारणी के अनुसार शिक्षण का सुचारू संचालन करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- अपने परिक्षेत्र के समस्त विद्यालयों में बारी-बारी से पीटीएम में भाग लें, माता-पिता को विभागीय नवाचार 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' द्वारा ई-कन्टेन्ट के माध्यम से विद्यार्थियों के शिक्षण के बारे में उन्हें जानकारी देंगे।
- 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' के संबंध में जारी किए गए समस्त पत्रों का प्रिंट निकालकर पत्र में दिए गए निर्देशों का बिन्दुवार क्रियान्विति सुनिश्चित करना।
- अपने परिक्षेत्र में प्रति सप्ताह स्कूल विजिट के दौरान 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' के समक्ष में देखी गई 2 बेस्ट प्रेक्टिसेज को, समूह को प्रेरित करने के लिए अपने PEEO व्हाट्सअप ग्रुप में साझा करें।
- पीईईओ विद्यालय में अधीनस्थ समस्त विद्यालयों में 'मिशन स्टार्ट कार्यक्रम' की सुदृढ़ मॉनिटरिंग करने के लिए 'मिशन स्टार्ट प्रभारी नियुक्त करेंगे। मिशन स्टार्ट प्रभारी आईसीटी लैब प्रभारी/कम्प्यूटर अनुदेशक/कम्प्यूटर शिक्षक अथवा अन्य किसी कम्प्यूटर दक्ष शिक्षक को बनाया जा सकेगा। जो अपने परिक्षेत्र के प्रदर्शन की समीक्षा करने के लिए शंकाओं का समाधान करने के लिए अपने परिक्षेत्र के शिक्षकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित करें।
- निर्धारित समय सीमा में ई-कन्टेन्ट के प्रभावी उपयोग द्वारा पाठ्यक्रम पूर्णता भी सुनिश्चित करेंगे।

संस्था प्रधान स्तर पर-

- कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु विद्यालय स्तर पर एक शिक्षक को मिशन स्टार्ट प्रभारी बनाएंगे।
- अपने विद्यालय में कक्षा 9 से 12 के रिक्त पदों एवं अनुपस्थित शिक्षकों के कालांश निर्धारित करते हुए ई-कन्टेन्ट के माध्यम से शिक्षण हेतु समय सारणी का निर्माण करेंगे एवं इस समय सारणी के अनुसार शिक्षण का सुचारू संचालन करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- विद्यालयवार समय सारणी का निर्धारण मिशन स्टार्ट कार्यक्रम के लिए निर्धारित स्कूल लैसन गाइडेंस मॉड्यूल फॉर मिशन स्टार्ट के अनुरूप ही किया जाना है। रिक्त कालांश की पूर्ति हेतु उसी विषय के शिक्षण के लिए दिए गए ई-कन्टेन्ट के लिंक अथवा सामग्री का ही उपयोग किया जाना है।
- प्रत्येक शुक्रवार को आगामी सप्ताह की समय सारणी शाला दर्पण मॉड्यूल में प्रविष्ट करने का दायित्व मिशन स्टार्ट प्रभारी शिक्षक का रहेगा। उक्त डाटा की कक्षाध्यापक द्वारा शाला दर्पण पर यथासमय प्रविष्टि करवाए।
- उक्त समय सारणी को प्रिंट करके विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- पीटीएम में माता-पिता की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- शिक्षकों का संबलन करने हेतु उनकी बेस्ट प्रेक्टिसेज को सराहेंगे व विद्यालय स्तर पर सम्मानित करें।

मिशन स्टार्ट प्रभारी शिक्षक-

- अपने विद्यालय में कक्षा 9 से 12 के लिए निर्धारित की गई समय सारणी के अनुसार शिक्षण का सुचारू संचालन करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- प्रत्येक शुक्रवार को आगामी सप्ताह की समय सारणी शालादर्पण मॉड्यूल में प्रविष्ट करना सुनिश्चित करेंगे।
- उक्त समय सारणी को प्रिंट करके विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा करेंगे।
- विद्यार्थियों से मिशन स्टार्ट के संबंध में निरंतर फीडबैक लेंगे तथा उन्हें डिजिटल माध्यम से करवाए जाने वाले शिक्षण के साथ सहजता का अनुभव करने हेतु प्रेरित करेंगे तथा ब्लेंडेड लर्निंग के लाभों से अवगत करवाएंगे।
- विद्यार्थियों के ई-कन्टेन्ट उपयोग की निरंतर समीक्षा करेंगे ताकि विद्यार्थियों को आने वाली कठिनताओं के बारे में पता लगाया जा सकें।

उक्त कार्ययोजना के अनुसार विद्यार्थियों के हित में इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन मिशन भावना से किया जाना सुनिश्चित कराए।

• **(काना राम) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. समस्त पूर्व/उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं में जारी की गयी बजट अधिकृति के सही बजट मद में व्यय के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/छाप्रोप्र/लेखा/विविध/2022-23 दिनांक: 14.09.2023 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक) ● विषयः समस्त पूर्व/उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं में जारी की गयी बजट अधिकृति के सही बजट मद में व्यय के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि पूर्व/उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं में समय-समय पर जारी की गयी बजट अधिकृति का समय पर एवं जारी लिमिट तक सही बजट मद में उपयोग किया जाना सुनिश्चित करें। यदि आपके कार्यालय द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष एवं पूर्व के किसी वित्तीय वर्षों में किसी छात्रवृत्ति का अन्य छात्रवृत्ति मद से भुगतान किया गया है तो उसे अंक मिलान प्रणाली (ORS Portal) के माध्यम से ट्रांसफर एंट्री करवाना सुनिश्चित करें साथ ही कारण सहित सूचना से इस कार्यालय को अवगत कराए। गलत बजट मद से भुगतान एवं जारी की गयी लिमिट से अधिक भुगतान करने पर आप व्यक्तिशः जिम्मेदार होंगे एवं नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देवे।

• **(संजय धवन) वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. वर्ष 2016 से पूर्व अवितरित छात्रवृत्ति राशि को चालान के माध्यम से जमा करवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/छाप्रोप्र/विविध/2022-23/151 दिनांकः 10.09.2023 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) ● विषयः वर्ष 2016 से पूर्व अवितरित छात्रवृत्ति राशि को चालान के माध्यम से जमा करवाने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में वर्ष 2016 से पूर्व आवंटित किए गए बजट में से अवितरित रही छात्रवृत्ति राशि जो कि आपके अथवा अधीनस्थ विद्यालयों के खातों में जमा है, की सूची उपलब्ध करवाएं। अवितरित राशि को बजट मद 0202-01-102-03-01 में चालान के माध्यम से 15 कार्य दिवस में जमा करवाकर इस कार्यालय को अदेय प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करते हुए अवितरित रहने का कारण भी आवश्यक रूप से स्पष्ट करें।

निर्धारित अवधि उपरांत अवितरित राशि जमा करवाने से वंचित रहने की स्थिति में संबंधित अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

• **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. राज्य सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं को शालादर्पण पोर्टल के बेनिफिशियरी मॉड्यूल पर ऑनलाइन आवेदन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-डी/ऑनलाइन योजनाएँ/2022-23 दिनांकः 27.09.2023 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक/माध्यमिक ● विषयः राज्य सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं को शालादर्पण पोर्टल के बेनिफिशियरी मॉड्यूल पर ऑनलाइन आवेदन करने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि वर्तमान सत्र 2023-24 से निम्नलिखित योजनाओं की आवेदन प्रक्रिया को शालादर्पण पोर्टल के बेनिफीश्यरी मॉड्यूल के माध्यम से ऑनलाइन किया जा रहा है जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

1. मिरासी-भिश्ती समुदाय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना (बजट घोषणा संख्या 61)

1. योजना का नाममिरासी-भिश्ती समुदाय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना
2. योजना से लाभान्वित विद्यार्थी

मिरासी समुदाय (मिरासी, ढाढ़ी, मीर, मंगनियार, दमामी, नगारची, लंगा, राणा) एवं भिश्ती समुदाय के कक्षा 06 से 10 के छात्र एवं छात्राएं जो केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, नगरपालिकाओं द्वारा संचालित स्कूलों में एवं शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में कक्षा 6 से 10 में नियमित विद्यार्थी के रूप से अध्ययन कर रहे हों।

निम्नांकित तालिका अनुसार विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जाएगा।

क्र.सं.	कक्षा	लाभान्वित छात्रों की संख्या	लाभान्वित छात्राओं की संख्या
1	6	500	500
2	7	500	500
3	8	500	500
4	9	500	500
5	10	500	500

3 **स्कूल प्रबंधन जिनके लिए मॉड्यूल की अनुमति है**

स्कूल शिक्षा (माध्यमिक/प्रारंभिक, मॉडल स्कूल, संस्कृत शिक्षा, टीएडी, मदरसा एवं मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय)

4 **योजना का प्रकार (केंद्र/राज्य) :** राज्य (100 प्रतिशत)

5 **योजना का संबंधित विभाग :** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग,जयपुर

6 **पात्रता**

1. विद्यार्थी राजस्थान का मूल निवासी हो।
2. मिरासी (मिरासी, ढाढ़ी, मीर, मंगनियार, दमामी, नगारची, लंगा, राणा) एवं भिश्ती समुदाय के विद्यार्थियों के लिए सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र होना आवश्यक है।
3. विद्यार्थी जो राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में एवं शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 6 से 10 में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययन कर रहा हो।
4. विद्यार्थी जिनके माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय 2.50 लाख (दो लाख पचास हजार रुपये) से अधिक नहीं हो। यदि विद्यार्थी के माता-पिता जीवित नहीं है तो आय सीमा लागू नहीं होगी।
5. विद्यार्थी जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक स्रोत से अध्ययन हेतु अन्य किसी प्रकार की छात्रवृत्ति या भत्ता मिल रहा हो ऐसे विद्यार्थी योजनान्तर्गत लाभ के पात्र नहीं होंगे। (अर्थात् समस्त प्रकार की

पूर्व-मैट्रिक एवं पोस्ट-मैट्रिक योजनाएँ तथा बालिका शिक्षा फाउण्डेशन द्वारा संचालित योजनाओं के साथ उक्त योजना का लाभ नहीं लिया जा सकेगा।)

6. यदि विद्यार्थी किसी वर्ष की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसकी छात्रवृत्ति रोक दी जाएगी परन्तु यदि वह उसी कक्षा को आगामी परीक्षा में उत्तीर्ण कर लेता है तो अगले सत्र से नई कक्षा में छात्रवृत्ति हेतु पात्र हो जाएगा।
7. पात्र अभ्यर्थी का शालादर्पण पोर्टल पर जनाधार प्रमाणीकरण एवं आधार नंबर की प्रविष्टि अनिवार्य है।

7. **देय लाभ :** 1200/- रुपये वार्षिक
8. **भुगतान का माध्यम :** IFMS पे-मैनेजर/ट्रेजरी
9. **आवेदन की प्रक्रिया**

- आवेदन की समस्त प्रक्रिया विद्यालय के शालादर्पण प्रभारी द्वारा संपादित की जानी है।
- शालादर्पण पोर्टल के बेनिफीशयरी मॉड्यूल में लॉग इन करने पर बाईं ओर Other Schemes में जाकर संबंधित योजना का चयन करने पर विद्यालय के समस्त एस.सी. एवं ओ.बी.सी. वर्ग के विद्यार्थियों का कक्षावार डाटा प्रदर्शित होगा।
- कक्षा पर लेट क्लिक करने पर विद्यार्थियों की सूची प्रदर्शित होगी।
- आवेदन हेतु पात्र विद्यार्थियों के नाम के समक्ष Apply बटन पर लेट क्लिक करें।
- विद्यार्थी का आवेदन खुलने पर निम्नानुसार प्रविष्टियाँ की जानी है-
  1. विद्यार्थी का पता
  2. विद्यार्थी के परिवार का जनाधार आई.डी संख्या एवं जनाधार आई.डी में विद्यार्थी की व्यक्तिगत पहचान संख्या
  3. विद्यार्थी का मोबाइल नंबर, आधार संख्या व परिवार की वार्षिक आय
  4. गत वर्ष की परीक्षा के पूर्णांक एवं विद्यार्थी के प्राप्तांक (कक्षा 7, 8 एवं 10 हेतु)।
  5. गत वर्ष की परीक्षा में विज्ञानं, अंग्रेजी एवं गणित के पूर्णांक एवं विद्यार्थी के प्राप्तांक (कक्षा 7, 8 एवं 10 हेतु)।
  6. कक्षा 6 एवं 9 में अध्ययनरत विद्यार्थी हेतु अंकों के प्रविष्टि न की जाकर केवल गत वर्ष की बोर्ड परीक्षा के अनुक्रमांक एवं जिले की प्रविष्टि की जानी है।
  7. मिरासी भिश्ती समूह के 9 उप समूह में से विद्यार्थी के उप समूह का चयन।
- 8. विद्यार्थी के अनाथ होने संबंधी प्रविष्टि में हाँ अथवा नहीं का विकल्प
- बैंक इनफार्मेशन हेतु प्रस्तुत दो विकल्प में से एक विकल्प का चयन करें।
- सभी प्रविष्टियाँ किए जाने के पश्चात अप्लाई बटन पर लेफ्ट क्लिक कर आवेदन लॉक करें।
- संस्थाप्रधान के मोबाइल नंबर पर भेजे गए ओटीपी की मदद से प्रस्ताव लॉक होगें।
- अंतिम दिनांक तक आवेदन लॉक नहीं किए जाने की स्थिति में आवेदन स्वत: लॉक हो जाएंगे।
- अपात्र विद्यार्थियों हेतु नाम के समक्ष Reject बटन पर लेफ्ट क्लिक करके Rejection के कारण का चयन करें।

10. **लाभार्थी का चयन** प्रत्येक कक्षा के लाभान्वितों की नियत संख्या से अधिक आवेदन प्राप्त होने पर गत वर्ष के परीक्षा परिणाम के आधार पर मेरिट द्वारा चयन किया जाएगा। समान अंक प्राप्त होने की स्थिति में विद्यार्थी के क्रमश: गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी के अंकों से मेरिट का निर्धारण किया जाएगा।
11. आवश्यक दस्तावेज (विद्यालय स्तर पर संधारित होंगे)

1. जाति प्रमाणपत्र।
2. आधार कार्ड एवं जनाधार कार्ड।
3. नॉन ज्यूडिशियल शपथ पत्र (इस का आशय कि लाभार्थी अन्य योजना का लाभ नहीं ले रहा है)
4. आय प्रमाणपत्र (12 माह से अधिक पुराना नहीं हो अथवा राज्य सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशानुसार हो। यदि माता-पिता/अभिभावक राजकीय/बोर्ड/निगम/निजी सेवा में सेवारत/कार्यरत वेतनभोगी है तो विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष/नियोक्ता द्वारा जारी किया गया प्रमाण पत्र मान्य होगा।)

12. **आवेदन की अंतिम तिथि :** 30.10..2023

2. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु प्रोत्साहन योजना (बजट घोषणा संख्या 54 वर्ष 2022-23)

1. **योजना का नाम** अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु प्रोत्साहन योजना।
2. **योजनान्तर्गत देय लाभ एवं लाभान्वितों की संख्या**

कक्षा 6 से 12 तक अध्ययनरत अनुसचित जाति के ऐसे विद्यार्थी जिन्हे सत्र 2023-24 में पूर्व मैट्रिक/उत्तर मैट्रिक छात्रवृति प्राप्त होनी है तथा जिनके गत कक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक हैं, योजना हेतु पात्र होंगे। ऐसे विद्यार्थियों को पूर्व में प्रदत्त छात्रवृति के साथ निम्नानुसार कक्षावार प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी

क्र.सं.	कक्षा	छात्रों को प्रदत्त प्रोत्साहन राशि (रुपये)	छात्राओं को प्रदत्त प्रोत्साहन राशि (रुपये)
1	6-8	1000	1500
2	9-12	1500	2500

3. **स्कूल प्रबंधन जिनके लिए मॉड्यूल की अनुमति है**

स्कूल शिक्षा (माध्यमिक/प्रारंभिक, मॉडल स्कूल, संस्कृत शिक्षा, टीएडी, मदरसा एवं मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय)

4. **योजना का प्रकार (केंद्र/राज्य) :** राज्य (100 प्रतिशत)
5. **योजना का संबंधित विभाग :** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग
6. **पात्रता**

1. कक्षा 6 से 12 तक अध्ययनरत अनुसूचित जाति के ऐसे विद्यार्थी जिन्हे सत्र 2023-24 में पूर्व मैट्रिक/उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति प्राप्त होनी है।

2. कक्षा 6 से 12 तक अध्ययनरत अनुसूचित जाति के ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने गत कक्षा में (परीक्षा वर्ष 2023) 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।
3. पात्र अभ्यर्थी का शालादर्पण पोर्टल पर जनाधार प्रमाणीकरण एवं आधार नंबर की प्रविष्टि अनिवार्य है।
7. **देय लाभ**

क्र.सं.	कक्षा	छात्रों को प्रदत्त प्रोत्साहन राशि (रुपये)	छात्राओं को प्रदत्त प्रोत्साहन राशि (रुपये)
1	6-8	1000	1500
2	9-12	1500	2500

8. **भुगतान का माध्यम** : IFMS पे-मैनेजर/ट्रेजरी
9. **आवेदन की प्रक्रिया**

- आवेदन की समस्त प्रक्रिया विद्यालय के शालादर्पण प्रभारी द्वारा संपादित की जानी है।
- शालादर्पण पोर्टल के बेनिफीश्यरी मॉड्यूल में लॉग इन करने पर बाईं ओर Other Schemes में जाकर संबंधित योजना का चयन करने पर विद्यालय के समस्त एस.सी. वर्ग के पात्र विद्यार्थियों का कक्षावार डाटा प्रदर्शित होगा।
- कक्षा पर लेफ्ट क्लिक करने पर विद्यार्थियों की सूची प्रदर्शित होगी।
- आवेदन हेतु पात्र विद्यार्थियों के नाम के समक्ष Apply बटन पर लेफ्ट क्लिक करें।
- विद्यार्थी का आवेदन खुलने पर निम्नांकित प्रविष्टियाँ की जानी है
  1. विद्यार्थी का पता
  2. विद्यार्थी का मोबाइल नंबर, आधार संख्या, गत वर्ष के प्राप्तांक एवं पूर्णांक
  3. कक्षा 6 एवं 9 में अध्ययनरत विद्यार्थी हेतु अंकों की प्रविष्टि न की जाकर केवल गत वर्ष की बोर्ड परीक्षा के अनुक्रमांक एवं जिले की प्रविष्टि की जानी है।
  4. विद्यार्थी के परिवार का जनाधार आई.डी संख्या एवं जनाधार आई.डी में विद्यार्थी की व्यक्तिगत पहचान संख्या।
- बैंक इनफार्मेशन हेतु प्रस्तुत दो विकल्प में से एक विकल्प का चयन करें।
- सभी प्रविष्टियाँ किए जाने के पश्चात एप्लाई बटन पर लेफ्ट क्लिक कर आवेदन लॉक करें।
- संस्थाप्रधान के मोबाइल नंबर पर भेजे गए ओटीपी की मदद से प्रस्ताव लॉक होंगे।
- अंतिम दिनांक तक आवेदन लॉक नहीं किए जाने की स्थिति में आवेदन स्वत: लॉक हो जाएँगे।
- अपात्र विद्यार्थियों हेतु नाम के समक्ष Reject बटन पर लेफ्ट क्लिक करके Rejection के कारण का चयन करें।

10. **लाभार्थी का चयन** सभी पात्र अभ्यर्थियों को योजना के तहत प्रदत लाभ देय होगा।
11. **आवश्यक दस्तावेज (विद्यालय स्तर पर संधारित होंगे)** विद्यार्थी का आधार/जनाधार कॉर्ड, जाति प्रमाण-पत्र, गत वर्ष की अंक तालिका।
12. **आवेदन की अंतिम तिथि** : 30.10..2023

उक्त समस्त योजनाओं का विस्तृत विवरण शालादर्पण पोर्टल/पी.एस.पी (प्राईवेट स्कूल पोर्टल) के मुख पृष्ठ पर बेनिफीशरी स्कीम पोर्टल (https://rajshaladarpan.nic.in/sd1/BSP/Home/Scheme-Details.aspx) पर उपलब्ध है। समस्त अधीनस्थ संस्था प्रधानों को निर्देशित कर प्रत्येक पात्र विद्यार्थी का **आवेदन की अंतिम तिथि 30.10.2023** तक ऑनलाइन आवेदन करवाया जाना सुनिश्चित करावें। उक्त योजनाओं के व्यापक प्रचार प्रसार हेतु स्थानीय स्तर पर प्रमुख समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित करवाए एवं शाला स्तर पर आयोजित पी.टी.एम., अन्य कार्यक्रमों एवं प्रार्थना सभा के माध्यम से योजना का प्रचार प्रसार करवाया जाना सुनिश्चित करावें।

• **(काना राम) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

अक्टूबर-2023					
रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

अक्टूबर 2023 ● कार्य दिवस-24, रविवार-05, अवकाश-04, उत्सव-03 ● 1 अक्टूबर : विद्यालय समय परिवर्तन-1. एक पारी विद्यालय - प्रात: 10:00 से 04:00 बजे तक। 2. दो पारी विद्यालय - प्रात: 07:30 से सायं 05:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे)। **2 अक्टूबर :** महात्मा गांधी जयंती (अवकाश उत्सव) व लाल बहादुर शास्त्री जयंती (उत्सव)। **3 से 8 अक्टूबर :** आयु वर्ग-14/17/19 वर्ष (छात्र-छात्रा) हेतु तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (14/17/19 हेतु अधिकतम 05दिन)। 3 से **5 अक्टूबर :** जिला स्तरीय विज्ञान मेला (RSCERT)। **07 अक्टूबर :** सामुदायिक बाल सभा-विद्यालय स्तर पर। **10 अक्टूबर :** विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस (समग्र शिक्षा)। **11 अक्टूबर :** अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस (उत्सव)। **11 से 12 अक्टूबर :** रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता राज्य स्तर (RSCERT)। **13 अक्टूबर :** विश्व दृष्टि दिवस (समग्र शिक्षा)। **13 से 14 अक्टूबर :** जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन। **15 अक्टूबर :** नवरात्रा स्थापना (अवकाश) एवं महाराजा अग्रसेन जयन्ती। **19 से 21 अक्टूबर :** द्वितीय परख। **22 अक्टूबर :** दुर्गाष्टमी (अवकाश)। **24 अक्टूबर :** विजयदशमी (अवकाश)। **25 से 29 अक्टूबर :** आयु वर्ग-17/19 वर्ष (छात्र-छात्रा) हेतु चतुर्थ समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 05 दिन)। **28 अक्टूबर :** सामुदायिक बाल सभा का आयोजन सार्वजनिक स्थल या चौपाल पर। **31 अक्टूबर :** सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती (राष्ट्रीय एकता दिवस) इन्दिरा गांधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस)। **नोट:-** मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन।

अन्तरिक्ष में भारत के कदम

❐ सोहनराम

हमारा विमर्श एक ऐसे विषय पर है जिसे दुनिया के विभिन्न देशों के बीच एक अजीब सी होड़ लगी है, और वो है चाँद को छू लेने की..... उसको अपना बना लेने की..... इसके लिए दुनिया के शीर्ष देश स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए तथा स्पेस टेक्नोलॉजी में बादशाहत हासिल करने के लिए आनन-फानन में ही अपने चन्द्र मिशन भेज रहे हैं जिनका उद्देश्य अनुसंधान का कम और स्वयं की प्रतिष्ठा का ज्यादा लग रहा है। वैसे बता देते हैं कि चन्दा मामा भी बड़े नटखट है ऐसे कहाँ हाथ लगने वाले हैं। इसी क्रम में रूस, जापान, इजराइल जैसे देशों के चन्द्र मिशन चाँद को छूने की जल्दबाजी में सॉफ्ट लैंडिंग के बजाय क्रेस लेंडिंग (हार्ड लेडिंग) ही कर रहे हैं। गौरतलब है कि हाल ही में रूस का चन्द्र मिशन (LUNA-25) चन्द्रमा की सतह पर क्रेश कर गया था, इसलिए कहा भी जाता है कि जल्दबाजी व राजनैतिक दबाव में लिए गए निर्णय सदैव घातक एवं नुकसानदायी होते हैं, वैसे रूस अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में कदम रखने वाला प्रथम राष्ट्र था, जिसने 1957 में स्पूतनिक नामक उपग्रह को सर्वप्रथम अंतरिक्ष में भेजा था। अब ऐसा लगता है कि दुनिया के देशों की हाल ही में चन्द्रमा को लेकर कुछ ज्यादा ही रुचि दिख रही है। इन सब को देखते हुए हमें कुछ-कुछ शीत युद्ध की याद आने लगी है जब स्वयं को बेहतर सिद्ध करने के लिए सोवियत संघ एवं यूएसए के मध्य स्पेस वार शुरू हुआ था, जो कि एक अंधी स्पेस रेस थी और उस समय नासा का बजट यूएसए के कुल बजट का 5% तक था। लेकिन समय के साथ अमेरिका का चन्द्र मिशन अपोलो तथा रूस के लुना मिशन में लोगों कि रुचि कम होने लगी क्योंकि यूएसए सन 1969 ई. में ही अपोलो-11 के द्वारा नील आर्म स्ट्रांग को चन्द्रमा की सतह पर उतारकर एक कीर्तिमान स्थापित कर चुका था। अतः यूएसए इस स्पेस रेस का एक अकेला और एकमात्र खिलाड़ी होने एवं प्रतिस्पर्धा में किसी अन्य राष्ट्र के न होने के कारण यह स्पेसवार खत्म होने लगा। अब पुनः एक लम्बे अन्तराल के पश्चात चन्द्रमा को लेकर एक ऐसी ही जंग छिड़ी हुई है। अब इस जंग में अमेरिका, चीन, रूस, जापान सहित कई देश सम्मिलित हो चुके हैं।

इन सब के बीच एक ऐसा देश जो 'वसुधैव कुटुम्बकम' को अपना आदर्श मानता है, प्राणिमात्र के प्रति कल्याण की भावना रखता है, विश्व कल्याण जिनका मूल मंत्र हैं, दबे पाँवों से धीरे-धीरे लेकिन, नियोजित तरीके से अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी में अपने कदम आगे बढ़ा रहा है, जिनकी किसी से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, जिनका मुकाबला सदैव स्वयं से रहा है और जो स्वयं की असफलताओं को सफलता की सीढ़ी बनाता हैं, जिनके मिशन का उद्देश्य केवल और केवल अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग, मानव मात्र के प्रति उपयोगी ही रहता है। हमारे भारत वर्ष की अन्तरिक्ष एजेन्सी 'इसरो' जो अन्तरिक्ष के क्षेत्र में लगातार नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। आज भले ही हमारे पास यूएसए रूस जैसे शक्तिशाली रॉकेट नहीं है जो सीधे ही अन्तरग्रहीय मिशन हेतु स्पेस क्राफ्ट को उनकी कक्षा में पहुँचा सके या चन्द्रयान-3 जैसे मॉड्यूल को सीधे ही ''लूनर ट्रान्सफर ट्रेजेक्टरी'' में डाल सके, फिर भी ISRO लगातार 2008 से अन्तरग्रहीय मिशन (चन्द्रयान, मंगलयान) को संचालित कर रहा है और वो भी बेहतरीन परिणाम के साथ।

वह चन्द्रयान-1 ही था जिसने 2008 में चन्द्रमा की सतह पर पहली बार पानी की उपस्थिति के साक्ष्य पूरी दुनिया के लिए प्रस्तुत किए थे, वह ISRO का मंगलयान-1 ही था जो सितम्बर 2014 को अपने प्रथम प्रयास में ही मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था और प्रथम प्रयास में ही यह कारनामा करने वाला भारत प्रथम राष्ट्र बना था लेकिन स्मरण रहे ये सभी 'डीप स्पेस मिशन' ISRO के द्वारा कम लागत और कम ऊर्जा के साथ अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली रॉकेट द्वारा 'स्लीम सॉट टेक्नोलॉजी' के द्वारा संपन्न करवाए जाते हैं जिसमें उपग्रह या स्पेस क्राफ्ट को पृथ्वी की कक्षा में गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रयोग करते हुए लगातार घुमाया जाता है साथ ही प्रत्येक चक्र में एक निश्चित बिन्दु पर निश्चित समय के लिए स्पेस क्राफ्ट में लगे इंजन को थ्रस्ट करके उपग्रह या डी-बुस्टीम द्वारा स्पेस क्राफ्ट की गति को बढ़ाया जाता है। ताकि स्पेस क्राफ्ट अपनी कक्षा को बढ़ाता रहें यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कि उपग्रह या स्पेस क्राफ्ट पृथ्वी के पलायन वेग (11.2 किमी/प्रति सेकेंड) की गति को पार नहीं कर लेता और जैसे ही उपग्रह की गति या पलायन वेग ज्यादा हो जाती है तब उसे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के बाहर फेंक दिया जाता हैं तथा स्पेस क्राफ्ट जिस ग्रह, उपग्रह हेतु बनाया जाता है उसके 'हाईवे' पर डाल दिया जाता है जिससे वह उस स्पेस क्राफ्ट उस पथ पर गति करता हुआ उस ग्रह या उपग्रह के समीप चला जाता हैं। तत्पश्चात विपरीत दिशा में इंजन को थ्रस्ट करके डी-बूस्टींग द्वारा स्पेश क्राफ्ट की गति को कम करके संबंधित ग्रह/उपग्रह के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के अधीन उसकी कक्षा में स्थापित कर दिया जाता है और यदि वह मिशन सतह पर साफ्ट लैंडिंग का हो जैसा चन्द्रयान-3 में था तब उस परिस्थिति में धीरे-धीरे उस स्पेस क्राफ्ट (पैलॉड) की डी-ब्रूस्टींग (गति कम करके) तथा डी आर्बिटींग (कक्षा को छोटा करके) करते हुए निर्धारित सतह पर उतारा जाता है। इसरो ने इस तकनीकी से पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। याद रहे यह तकनीक दिखने में भले ही सरल लगे लेकिन इसमें बहुत ही जटिल प्रक्रिया होती है। इसमें गणना व आँकड़ों का बहुत बड़ा खेल होता है जरा सी चूक मिशन को अंतरिक्ष की अनन्त गहराइयों में भेज सकती है जहाँ से उनकी वास्तविक स्थिति का पता लगाना भी असंभव हो। लेकिन इसरो के वैज्ञानिकों ने अपनी लगन, मेहनत व समर्पण से पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान स्थापित की हैं।

आज इसरो दुनिया की शक्तिशाली स्पेस पॉवर वाले राष्ट्रों से टेबल साझा करता है, USA की नासा के साथ मिलकर निसार प्रोजेक्ट पर तथा जापान की अंतरिक्ष ऐजेन्सी जाक्सा के साथ मिलकर लूनर एक्सप्लोरेशन मिशन पर काम कर रहा है। साथ ही चन्द्रयान-3 अभियान के समय भी विश्वभर में स्थापित ग्राउड ने चन्द्रयान-3 के ट्रैक करने में भी ISRO की सहायता की। इन सब के परिणामस्वरूप 23 अगस्त, 2023 को वह ऐतिहासिक क्षण आया, जब भारत का चन्द्रयान-3 चन्द्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग कर सका। भारत ऐसा करने वाला

US, रूस, चीन के पश्चात चौथा देश बना। साथ ही चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव, जहाँ पर धरातल की बनावट अत्यन्त अनियमित व क्रेटर युक्त है, पर लैंडिंग करने वाला दुनिया का प्रथम देश बना। भारत के चन्द्र मिशन की शुरूआत 2008 में चन्द्रयान-प्रथम ऐ से शुरू हुई जिनको सफलता पूर्वक चन्द्रमा की कक्षा में स्थापित किया गया, तत्पश्चात जुलाई 2019 में चन्द्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैडिंग हेतु चन्द्रयान-2 मिशन भेजा गया लेकिन अन्तिम क्षणों में हार्ड लैंडिंग के कारण सफल नहीं रहा। फिर 14 जुलाई, 2023 को LVM²-3 नामक यान द्वारा ISRO ने चन्द्रयान-2 के लक्ष्य को पुनः प्राप्त करने के लिए चन्द्रयान-3 को श्री हरिकोटा के सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र से प्रक्षेपित करके लगभग 42 दिनों के लम्बे सफर के पश्चात चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचाया। भारत के चन्द्रयान-3 के लेंडर विक्रम व रोवर-प्रज्ञान ने चन्द्रमा की सतह पर उतरने के पश्चात् चन्द्रमा पर सूर्योदय की पहली किरण के साथ ही अपना कार्य प्रारम्भ किया। लैण्डर विक्रम व रोवर प्रज्ञान में लगे अनेक उपकरण चन्द्रमा की सतह पर विभिन्न प्रकार के अनुसंधान कार्य करेगा, नई संम्भावनाओं की तलाश करेगा, चन्द्रमा पर जीवन के लिए आवश्यक मौलिक तत्त्वों की खोज करेगा साथ ही चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव, जहाँ पर सूर्य की रोशनी कम ही पहुँच पाती है यहाँ पर ठोस रूप में जमा पानी की खोज करेगा, लैण्डर विक्रम में लगा ILSA पैलोड की सहायता से चन्द्रमा की सतह पर कम्पन वाली तरंगों का पता लगाकर, उसकी अंतरिक्ष संरचनाओं को समझने का प्रयास करेगा हालांकि अब क्योंकि चन्द्रमा की सतह पर पुनः रात हो चुकी है इसीलिए ISRO ने स्लीप लैण्डर विक्रम व रोवर प्रज्ञान को स्लीप मोड पर कर दिया। 22 सितम्बर, 2023 को जब चन्द्रमा पर पुनः सूर्योदय हो गया, और हमारा विक्रम और रोवर पुनः आएगा। हालांकि अभी यह कह पाना मुश्किल है कि पुनः विक्रम व प्रज्ञान एक्टिव होंगे या नहीं। क्योंकि चन्द्रमा की सतह पर रात्रि का तापमान लगभग 200 के आस-पास होगा जो कि हमारे विक्रम व रोवर प्रज्ञान के लिए अत्यंत मुश्किल भरा होगा। बहरहाल जो भी हो, वैसे हमारा चन्द्रयान-3 अपने मिशन में सभी उद्देश्यों को शत प्रतिशत पूर्ण कर चुका है। यह क्षण प्रत्येक भारतीय को गौरवान्वित करने वाला है लेकिन आज भारत अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जिस स्थिति में है, यहाँ तक पहुँचने के पीछे हमारे वैज्ञानिकों का एक लम्बा संघर्ष है जिस पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

भारत ने अपने अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी की शुरुआत सन् 1962 में विक्रम साराभाई के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय अनुसंधान समिति के गठन के साथ शुरू की।

21 नवम्बर, 1963 को अमेरिका के सहयोग से निर्मित देश का पहला साउन्डिंग रोकेट नाइक अपाचे, केरल के थुम्बा से प्रक्षेपित किया गया। 15 अगस्त, 1969 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान समिति का पुनर्गठन करके भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो की स्थापना की गई। भारत ने सन 1975 में अपना प्रथम उपग्रह प्रायोगिक दूरसंवेदी उपग्रह आर्यभट्ट प्रक्षेपित किया। साथ ही भास्कर रोहिणी जैसे प्रयोगात्मक उपग्रह कार्यक्रम शुरू किए हालांकि इन उपग्रहों के लाँचिंग हेतु शुरूआत में हम अन्य देशों पर निर्भर थे लेकिन 1980 के दशक में भारत ने इस दिशा में कार्य शुरू कर दिया था। उपग्रहों को लांच करने हेतु स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान को विकसित कर लिया गया। आज प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी में भारत विभिन्न यान श्रृंखलाओं SLV, PSLV, GSLV तथा GSLVMK-3 को विकसित कर चुका है इनमें से PSLV जो कि पृथ्वी की ध्रुवीय कक्षा में उपग्रह को छोड़ने हेतु बनाया गया था लेकिन क्षमता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसी PSLV का उपयोग सुदूरवर्ती अन्तर ग्रहीय मिशन मंगलयान-1 चन्द्रयान-1, आदित्य L-1 में सफलतापूर्वक किया गया है, यही PSLV आज विश्व का सबसे भरोसेमन्द प्रक्षेपण यान बनकर उभरा है। इसी PSLV से ISRO ने 104 उपग्रहों को एक साथ सफल लॉच करके नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया, आज दुनिया के कई देश कम खर्च में अपने उपग्रह भेजने के लिए ISRO के पास आते हैं अत: PSLV अब ISRO का एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान भी बन चुका है। वहीं बात अगर GSLV की करें तो इन्हें पृथ्वी की भू-तुल्यकालिक कक्षा या भू-स्थैतिक कक्षा में भारी उपग्रहों को स्थापित करने हेतु बनाया गया, इसी GSLV का एक संस्करण GSLV MK-3 से भारत ने अपने बहुप्रतिष्ठित चन्द्रयान-2 व चन्द्रयान-3 प्रक्षेपित किए हैं। इस GSLVS MK-3 रॉकेट में ठोस व द्रव ईंधन के साथ-साथ क्रायोजेनिक ईंधन का उपयोग किया जाता है जो कि इसको एक बेहद शक्तिशाली रॉकेट के रूप में स्थापित करता है। इस प्रकार भारत के द्वारा क्रायोजेनिक तकनीकी के विकसित किए जाने पर भारत न केवल अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी बल्कि मिसाइल प्रौद्योगिकी में भी आत्मनिर्भर बन चुका है और न्यूनतम निवारक क्षमता हासिल कर चुका है।

भारत स्वयं की नौ-वहन प्रणाली IRNSS या नाविक का विकास कर चुका है जो कि सैन्य उपयोग की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। भारत के इन यानों की सहायता से ISRO ने समय-समय पर अनेक उपग्रहों को पृथ्वी की विभिन्न कक्षाओं में पहुँचाकर बेहतर संचार व्यवस्था के साथ-साथ कृषि, मौसम के भविष्यवाणी की सटीक जानकारी हेतु बेहतर कार्य किया है। अभी 2 सितम्बर, 2023 को ISRO ने सूर्य के अध्ययन हेतु आदित्य-1 मिशन को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया है जो लिंग्रेजियन पाईंट-1 के (जो कि पृथ्वी व सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति को संतुलित करने वाला बिन्दू है) चारों और हेलो आर्बिट में चक्कर लगाते हुए सूर्य का अध्ययन करेगा। साथ ही भारत अब तक कई अन्तरिक्ष अभियानों जैसे चन्द्रयान-1,2,3, मंगलयान एस्ट्रोसेट मिशन शक्ति का सफलतापूर्वक संचालन कर चुका है।

भविष्य में भारत-शुक्रयान, मंगलयान-2 व अन्तरिक्ष में मानव भेजने हेतु गगनयान पर काम कर रहा है। साथ ही SLV व RSLV पर भी काम कर रहा है।

इसरो भारत को एक स्पेस पावर के रूप में विकसित करने का लगातार प्रयासरत है। हाल ही भारतीय राष्ट्रीय अन्तरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण के गठन के माध्यम से अन्तरिक्ष गतिविधियों में निजी क्षेत्र के लिए खोला गया है। इस प्रकार भारत अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों की पंक्ति में शामिल हो चुका है और यह अन्तरिक्ष अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों में लगातार प्रगति कर रहा है।

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मात वाली नाड़ी,
शिवपुरी, लोहावट, फलोदी (राज.)
मो.नं.: 9982424893

स्वास्थ्य और मोटा अनाज

❒ विमलेश चन्द्र

सिन्धु घाटी सभ्यता के समय से ही भारत में मोटे अनाज (मिलेट्स) जैसे- बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, मोठ आदि की खेती किए जाने के प्रमाण मिले हैं। उस समय मोटा अनाज भारत का पारंपरिक भोजन था एवं लोगों को मोटे अनाज के फायदे भी मालूम थे। समय बीतने के साथ जनसंख्या बढ़ रही थी एवं अधिक अनाज उत्पादन की माँग जोर पकड़ने लगी। 1960 के दशक में भारत में एम.एस. स्वामीनाथन के नेतृत्व में हरित क्रान्ति का जन्म हुआ एवं धान एवं गेंहूँ जैसी फसलों के बोने पर बल दिया गया। धीरे-धीरे लोगों ने मोटे अनाज को बोना और खाना कम कर दिया, नतीजन आने वाली पीढ़ियों ने इनको विस्मृत कर दिया। हरित क्रान्ति से पहले खेती किए जाने वाले सभी अनाजों में लगभग 40% मोटे अनाज होते थे, जिनकी हिस्सेदारी पिछले कुछ वर्षों में लगभग 20% ही रह गयी है। वर्तमान में मोटे अनाजों की खपत में गिरावट आई है। किसानों की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन करने के उद्देश्य से एक बार पुन: मोटे अनाज का महत्त्व बढ़ा है। इस दिशा में भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में 5 मार्च, 2021 को एक संकल्प प्रस्ताव रखा गया जिसे 72 देशों के समर्थन से पारित किया गया एवं वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया गया। इस संकल्प का आशय मिलेट्स (मोटे अनाज) के स्वास्थ्यवर्धक होने और जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी उपयुक्त पैदावार के बारे में जागरूकता को बढ़ाना है। अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के लिए 8 मोटे अनाजों को शामिल किया गया है जिसमें बाजरा, रागी, कुटकी, सांवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदो शामिल है। इस समय 130 से अधिक देशों में पैदा किए जा रहे मिलेट्स एशिया और अफ्रीका में करोड़ों लोगों का पारंपरिक भोजन है। इससे पूर्व भारत सरकार ने 2018 में राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष मनाया।

अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के मुख्य उद्देश्य:-

- खाद्य सुरक्षा और पोषण में मोटे अनाज के योगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- मोटे अनाजों के सतत उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार के लिए हितधारकों को प्रेरित करना।

मिलेट्स (मोटे अनाज) के उत्पादन को बढ़ाने में केन्द्र सरकार की भूमिका:- किसानों की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन करने के उद्देश्य से वित्त मंत्री, भारत सरकार श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा वर्ष 2023-24 में श्री अन्न योजना को शुरू किया गया। इस योजना के माध्यम से किसानों को मोटे अनाज की खेती करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो सकेगी। श्री अन्न योजना के अन्तर्गत निम्न अनाजों को रखा गया है-

(1)कुट्टु के दाने (2) कंगनी (3) मक्का (4) जौ (5) चिवड़ा (6) चना (7) कुटकी (8) चीना (9) सांवा (10) कोदो (11) बाजरा (12) रागी (13) ज्वार (14) साबूदाना

आखिर मोटा अनाज (मिलेट्स) को इतना महत्त्व क्यों?-मोटा अनाज (मिलेट्स) स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ ही धरती की संपोषणीयता बढ़ाने में महत्ती भूमिका निभाता है, इसलिए इनका दिन-प्रतिदिन महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है। 18 वें जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहे भारत की धरा पर पधारे विदेशी मेहमानों को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 को बढ़ावा देने के क्रम में भोज में मोटे अनाज से निर्मित व्यंजन परोसे गए। इसी प्रकार संसद भवन में भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने माननीय सदस्यों को भोज में मोटे अनाज से निर्मित व्यंजन परोस कर उनका दिल जीत लिया।

मोटा अनाज और स्वास्थ्य-

- मोटे अनाज में अन्य अनाजों की तुलना में पोषक तत्व अधिक पाए जाते हैं। विटामिन-बी, कैल्शियम, आयरन, पौटेशियम, मैग्नीशियम, जिंक आदि से युक्त मोटा अनाज सुपर फूड कहलाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
- मोटा अनाज ग्लूटेन फ्री होता है जिसके कारण यह उन लोगों के लिए उपयुक्त है जिन्हें ग्लूटेन युक्त भोजन से एलर्जी होती है।
- मोटे अनाज में फाईबर (रेशे) की मात्रा होने के कारण मानव के पाचन तंत्र को दुरुस्त रखते हैं। जिन लोगों को दूध अपच की शिकायत रहती है, उन लोगों के लिए मोटा अनाज कैल्शियम पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है।
- मोटे अनाज में मौजूद मैग्नीशियम माहवारी के दौरान होने वाले क्रैम्प्स से राहत दिलाता है।
- मोटा अनाज शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने के साथ ही हृदय रोग के खतरों से भी सुरक्षित रखता है।
- सोरगम (ज्वार) कार्बोहाइड्रेट का अच्छा स्रोत है। इसे मोटे अनाज का राजा कहा जाता है।
- मोटे अनाज में विटामिन सी और ई भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं जो नेचुरल सनस्क्रीन का कार्य करते हैं तथा त्वचा को सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों से बचाते हैं।
- गर्भवती महिलाओं में एनीमिया को दूर करने में आयरन से भरपूर बाजरे और रजोनिवृति के बाद बोन मिनरल डैन्सिटी (खनिज की मात्रा) बरकरार रखने में कैल्शियम से भरपूर रागी खाना सेहत के लिए लाभदायक होता है। रागी में दूध से भी ज्यादा कैल्शियम होता है।
- मोटे अनाज में अधिक मात्रा में फाईबर (रेशे) और ट्रिप्टोफैन एमिनो एसिड पाया जाता है जो अवसाद दूर करने में सहायक है, साथ ही इसका पाचन धीमी गति से होता है। इसके कारण पेट लम्बे समय तक भरा हुआ महसूस होता है, इससे ज्यादा खाने से बच जाते हैं जिससे वजन नियंत्रित रहता है तथा मोटापा नहीं बढ़ता है व मोटे अनाज के खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

धरती की संपोषणीयता में मोटे अनाज की भूमिका/ प्रकृति का साथी मोटा

अनाज–

- मिलेट्स (मोटा अनाज) फसलों में रासायनिक उर्वरक, यूरिया आदि की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है, जिससे भूमि में रहने वाले जीवों को भी नुकसान नहीं होता है तथा भूमि पर भी कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है, साथ ही हमें जहर मुक्त फसल प्राप्त होती है।
- मोटे अनाज की खेती कम उपजाऊ भूमि में भी अच्छी पैदावार देते हैं।
- मोटे अनाज की खेती पहाड़ी व बंजर भूमि में भी आसानी से की जा सकती है।
- किसानों को मोटे अनाज का उत्पादन करने पर लागत भी कम आती है।
- मोटे अनाज के भंडारण के लिए कीटनाशकों की भी आवश्यकता नहीं होती है।
- मिलेट्स फसलें अधिक तापमान को भी सहन कर सकती हैं।
- मिलेट्स फसलें जलवायु परिवर्तन का भी सामना कर सकती हैं।
- मोटा अनाज प्राप्त करने के बाद बचे डंठल मिट्टी में दबा दिये जाते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है।
- मिलेट्स फसलों को कम पानी की आवश्यकता होती है, अधिक वर्षा होने पर भी मिलेट्स फसलों का नुकसान नहीं होता है अर्थात मिलेट्स भारत की परिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल हैं।

भारत वर्ष में मिलेट्स का उत्पादन एवं उपयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। हर्ष की बात है कि भारत दुनिया में मोटा अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत में मिलेट्स का उपयोग पॉपकोर्न, रोटी, दलिया, खिचड़ी, डोसा, इडली, बिस्कुट आदि के रूप में बहुतायत से किया जा रहा है। आज स्थिति यह है कि भारत की धरा पर उत्पन्न होने वाले मिलेट्स जैसे– बाजरा, रागी, ज्वार और कुट्टु अमेरिका, यूएई, ब्रिटेन, नेपाल, सऊदी अरब, यमन, लीबिया, ओमान और मिस्र जैसे देशों में निर्यात किए जाते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़, चूरू (राज.) **मो.न.: 9460489940**

शिक्षा के विकास में योगा का महत्त्व

❒ राजेन्द्र कुमार व्यास

मानव जीवन का उद्देश्य सीखना–सिखाना और ज्ञान में उत्तरोतर वृद्धि करना रहा है, फिर अर्जित शिक्षा से समाज और देश के साथ ही विश्व का भला करना है। अगर हम इतिहासों का अध्ययन करे तो पाएँगे की मानव सभ्यता में हमेशा ही शिक्षार्जन के लिए स्थान और तरीके निर्धारित किए जाते रहे हैं तथा अर्जित शिक्षा के ज्ञान को सहेज कर रखा जाता रहा है, जिससे ज्ञान आगे की पीढ़ियों को जीवन जीने की सरलता की ओर अग्रसर करता रहे। सभ्यता के शुरूआती दौर से ही सीखने–सिखाने की कला वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखे तो विधियाँ स्थाई रही है, स्थायी विधियों के साथ ही नए वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में स्थाई विधियों को सरल बनाने, अर्जित ज्ञान को सरलता से उपयोग करने के लिए शिक्षण में वैज्ञानिक विधियों का सहारा लिया गया है, जिससे सीखना–सिखाना बहुत सरल होने के साथ–साथ अर्जित शिक्षा व ज्ञान लम्बे समय तक याद रह सके।

विश्व का हर देश शिक्षा और शिक्षण को सरलता से अधिक समय तक स्थाई रखने में प्राचीन विधियों के साथ ही नई तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधियों का सहारा ले रहा है। सीखने के लिए एक कहावत भी प्रमुखता से सुनी जाती है– 'करत–करत अभ्यास ते जड़मति होय सुजान'– जिसका अभिप्राय है कि कितना भी कठिन ज्ञान हो, निरन्तर अभ्यास से अर्जित हो ही जाता है। विश्व के सभी देशों के विकास का आधार तथा देश का भविष्य देश के विद्यार्थी है, अगर विद्यार्थी श्रेष्ठतम विद्यार्जन कर देश हित में कार्य करेंगे तो वह निश्चित रूप से विकास के उच्च पायदान पर खड़ा होगा। इसलिए संपूर्ण विश्व अपने विद्यार्थियों को सरलतम तरीके से श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करवाने के लिए प्रयासरत रहता है तथा देश–काल परिस्थिति के अनुरूप आवश्यक अमूलचूल परिवर्तन करते रहते हैं। शिक्षण विधियों का उद्देश्य शिक्षार्थी के मूल गुणों (स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिक, ध्यान, एकाग्रता, आत्म विश्वास, अनुशासन, नियमितता, क्षमतावान, सजगता, चेष्टा, समूह भावना, दूसरों का सम्मान, विश्व कल्याण, पर्याप्त नींद) का विकास करना होता है, जिसके लिए शिक्षक शिक्षण की महत्त्वपूर्ण विधियाँ (संवाद/प्रश्नोत्तरी/अवलोकन/प्रदर्शन/समस्या समाधान/अवलोकन/अन्तर्दर्शन आदि) जो प्राचीन के दार्शनिकों ने अनुभव के आधार पर बनाई तथा आवश्यकता के लिए प्रचलित कर शिक्षण हेतु सहारा बनी है।

21वीं शताब्दी वैज्ञानिक और तकनीकी युग व शीघ्रता व सरलता वाली सदी है, वर्तमान समय में पूरा विश्व शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा को सरल, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए नित नए तरीके ईजाद कर रहा हैं, पूरा विश्व दार्शनिकों द्वारा समय की आवश्यकता के अनुसार बनाई गई मूल शिक्षण विधियों को शिक्षा के वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर शिक्षार्थियों के लिए सरलतम एवं उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक सुधार एवं परिवर्तन कर रहा है जिससे शिक्षण कार्य सरल हो रहा है। विद्यार्थी ने छोटी आयु में ही उच्चतम स्तर की तकनीकी व गणित जैसी कठोर शिक्षा को ही उम्र व लिंग की सीमा को नजर अंदाज करके अर्जित कर रहे हैं।

आज प्रत्येक क्षेत्र सरलता के लिए योगा का सहरा ले रहा है, तो शिक्षा का क्षेत्र भी योगा से अछूता नहीं रहा है, योग शब्द का अर्थ जोड़ना है जिसका भाव शरीर की क्रियाओं को मन से जोड़ना है जो अध्ययन का मूल उद्देश्य पूरा करता है। भारत ही नहीं विश्व के अधिकांश देशों ने यह माना है कि योगा की विभिन्न विधाएँ (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) शिक्षार्थियों के शिक्षण कार्य एवं शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोगी साबित हो रही है। विश्व के अधिकांश देशों ने शिक्षण विधियों को उपयोगी एवं सरल बनाने तथा शिक्षार्जन में योगा के महत्त्व को परखा है जो हर कसौटी पर सहयोगी साबित हुआ है।

शिक्षा अर्जन के लिए विद्यार्थी का शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से सजग होना आवश्यक है, शिक्षा विशेषज्ञों के मतानुसार स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क रहता

हैं, के सिद्धांत को सफल बनाने के लिए शरीर को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है, अगर विद्यार्थी शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह विधा अध्ययन आसानी से कर पाएगा, शारीरिक रूप से अस्वस्थता होने पर विद्यार्थी का अध्ययन निश्चित रूप से बाधित होगा तथा विद्यार्थी अस्वस्थता के कारण मन लगाकर शिक्षार्जन नहीं कर पाएगा साथ ही शिक्षक का शिक्षा प्रदान करने एवं शिक्षार्थी का शिक्षा ग्रहण करने का उद्देश्य सफल नहीं हो पाएगा। अगर विद्यार्थी नियमित रूप से योगा क्रियाएँ करेगा तो वह निश्चित ही शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेगा जिससे वह शिक्षक द्वारा दिया गया ज्ञान सहजता से अर्जित कर सकेगा और अर्जित ज्ञान जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होगा। विद्यार्जन के लिए विद्यार्थी की जीवनचर्या का सरल होना आवश्यक है 'अष्टांग योग' की सहायता से जीवनचर्या को सरल बनाया जा सकता है, योग की क्रिया यम की सहायता से विद्यार्जन के लिए आवश्यक गुणों सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह को अपना कर अपना जीवन सरल बनाता है तथा स्वच्छ मन से विद्यार्जन करता है तो अध्ययन में श्रेष्ठता को प्राप्त करता है और उच्च मानक स्तर पर ज्ञानार्जन के परिणाम को प्राप्त करता है।

अनुशासन जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है, जिस विद्यार्थी में यह गुण होगा उस विद्यार्थी की सफलताओं को कोई भी रोक नहीं सकता, योग विद्या 'नियम' का पालन कर विद्यार्थी अनुशासित होकर अपना जीवन व्यतीत करेगा। शिक्षा का सार ही अनुशासन है अगर विद्यार्थी अनुशासित नहीं होगा तो उससे शिक्षित होने की आशा नहीं कर सकते हैं। अनुशासित व्यक्ति ही समाज को शिक्षा का दर्पण दिखा सकता है। अनुशासन तथा शिक्षा एक सिक्के के दो पहलू है, विद्यार्थी अनुशासित जीवनचर्या अपना कर स्वाध्याय के साथ ही गुरुजनों द्वारा बताए गए ज्ञान का अनुसरण करेगा तथा अपने अध्ययन में शामिल करेगा तो वह निश्चित रूप से शिक्षा के उच्चतर स्तर की ओर अग्रसर होगा। अनुशासन के अभाव में शिक्षा की कल्पना निराधार है, अनुशासन में रहकर नियमित विद्या अध्ययन करने के उपरान्त कोई भी ऐसी परीक्षा नहीं होती जिसमें विद्यार्थी श्रेष्ठता सिद्ध नहीं कर सकता है।

विद्यार्जन के लिए विद्यार्थियों का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना जरूरी है, जो विद्यार्थी योगाभ्यास के दौरान नियमित आसन क्रियाएँ करता है तो वह शारीरिक रूप से मजबूत व स्वस्थ रहता है, जिस कारण विद्यार्थी अधिक समय तक एक ही स्थान पर बैठने की शक्ति विकसित कर लम्बे समय तक अध्ययन कर ज्ञानार्जन के उद्देश्यों की पूर्ति करेगा परिणाम स्वरूप वह विद्यार्थी परीक्षा में से अव्वल दर्जा हासिल कर पाएगा।

शिक्षार्जन के लिए शिक्षार्थी का मानसिक रूप से स्वस्थ व सजग होना अति आवश्यक है। मानसिक शक्ति के विकास व सजगता के लिए शिक्षार्थी योग की मुख्य क्रिया प्रणायाम का सहारा लेता है तथा अपनी नियमित दिनचर्या में विभिन्न प्राणायामों (भस्त्रिका, भ्रामरी, शीतली, उज्जायी, नाड़ी शोधन...) को शामिल कर शिक्षार्थी नियमित अभ्यास से अपनी आंतरिक शक्ति का विकास करता है तथा श्रेष्ठ अध्ययन के लिए मानसिक एवं बौद्धिक स्तर का विकास करता है। जीवन में प्राणायाम की नियमितता से विद्यार्थियों की आंतरिक शक्ति अप्रत्याशित रूप से बढ़ती है, विद्यार्थी कठिन से कठिन विषयों में भी धैर्य बनाकर उसका अध्ययन करता है और अपनी मानसिक शक्ति के सहारे उस विषय विशेष में भी उच्च मानक का स्तर प्राप्त कर लेता है, साथ ही साथ वर्तमान में प्रचलित मेडिटेशन करके स्वयं को जानने के साथ तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होकर कठिन अध्ययन को भी सहजता से समझने की शक्ति का विकास करता है और उच्च मानसिक स्तर से निश्चित रूप से श्रेष्ठ परीक्षा परिणामों की प्राप्ति होती है।

विद्यार्जन के लिए विद्यार्थियों का अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण होना जरूरी होता है जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक क्रियाओं पर स्वयं का नियंत्रण होगा, जब विद्यार्थियों का अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण होगा तो उसका मन सिर्फ और सिर्फ अध्ययन पर ही केन्द्रित होगा जिसके फल स्वरूप विद्यार्थी शिक्षा के उच्च आयामों को प्राप्त कर पाएगा। विद्यार्थी योग क्रिया में प्रत्याहार विधि को अपना कर स्वयं पर नियंत्रण करने की कोशिश करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन से नकारात्मकता धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है, साथ ही वह काम, मोह, लोभ, हिंसा आदि नकारात्मकता पर विजय पा लेता है, तो उसके मन में सकारात्मकता ही विद्यमान रहती है। जिसका परिणाम श्रेष्ठ स्तर की सफलता ही होती है।

विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए विद्यार्जन के उद्देश्य निश्चित होने चाहिए। निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मन में धारणा होनी चाहिए, क्योंकि कहा भी कहा है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। अगर मन में उद्देश्यों की पूर्ति की धारणा रहती है तो उसी अनुरूप व्यवस्थित होकर कार्य करेंगे और सरलता से उद्देश्यों की पूर्ति होती रहेगी और विद्यार्थी सफलता से लक्ष्य अर्जित कर लेगा।

विद्यार्थियों की सफलता का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू ध्यान है, विद्यार्थी निरन्तरण उत्तरोतर ज्ञान प्राप्ति के लक्ष्य को ध्यान में रखकर नियमानुसार अध्ययन करेगा तो निश्चित रूप से वह अपनी हर परीक्षा में श्रेष्ठता से सफल होगा और विद्यार्थी जीवन का मूल उद्देश्य प्राप्त करेगा।

विद्यार्जन के दौरान विद्यार्थी का अन्तिम लक्ष्य सफलता प्राप्त करना होता है, सफलता प्राप्ति करने हेतु विद्यार्थी विद्यार्जन को साधना मान कर अपना सर्वशः चित विद्यार्जन के लिए समर्पित कर देता है और उसका सिर्फ और सिर्फ एक ही ध्येय होता है कोई भी सुसंगत उपाय अपना कर अपनी साधना सिद्धि अर्थात सफलता प्राप्त होती है, तभी उसका चित्त अन्य कार्यों में लगता है, यह उसका गुण विद्यार्थी को सफलता के चरम पर ले जाता है।

आज विश्व के सभी विकसित और विकासशील देशों की अपनी शिक्षा नीति और ज्ञानार्जन की तकनीकों में योगा की विशेष विद्याओं का समावेश करके ही शिक्षार्थियों के लक्ष्यों को सरलता और सहजता से प्राप्त करते है, इसी तरह भारत सरकार ने भी देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में शिक्षा के साथ ही योग क्रियाओं का समावेश किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप कठिन विषयों में सरलता से सफलता अर्जित की जा रही है।

शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सादुलगंज,
बीकानेर (राज.)
मो.न.: 9413480567

मिशन एजुकेशन : एक नवाचार

❐ डॉ. कोमल कांत शर्मा

मिशन एजूकेशन एक चित्र मात्र नहीं,यह आपके मस्तिष्कीय अन्तरिक्ष में शिक्षा के प्रति न्यायपूर्ण विचारों, भावों तथा कर्मों का प्रक्षेपण है। यह न्याय पूर्ण विचार या वैचारिक उत्तेजना के लिए उत्प्रेरक की भाँति भी है जो देखने वाले हर व्यक्ति के मन में शिक्षा के प्रति सकारात्मकता उत्पन्न करेगा। विद्यालय योजना निर्माण और नवीनीकरण कार्यों को नियोजित करते समय यह विचार लेखक के मन में उत्पन्न हुआ कि विद्यालय में प्रवेश पर ही एक मस्तिष्कीय तूफ़ान/उद्दीपन (brain storming) उत्पन्न करने वाला चित्र बनाया जाए जो अवलोकनार्थ आए शिक्षाविद, विचारकों, राजनेताओं या जनसामान्य एवं विद्यार्थियों के मन में जिज्ञासा तथा क्या किया है और क्या किया जा सकता है का भाव उत्पन्न करे ताकि शिक्षा और ज्ञान का मिशन नई ऊँचाइयों की और बढ़ता रहे। यही नहीं मिशन के तहत प्रारूप निर्माण का भी काम लेखक द्वारा करने का निश्चय किया गया ताकि ज्ञानार्जन को सरल और प्रेरणास्पद बनाया जा सके।

मिशन के उद्देश्य है–

1. ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
2. विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करना।
3. शिक्षा को सरल और सुबोध बनाना।
4. विद्यालय के आधारभूत ढाँचे को सुदृढ़ करना।
5. तकनीकी दृष्टि से विद्यालय को राष्ट्रीय मानको पर स्थापित करना।
6. विद्यार्थियों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना।
7. बालिका सशक्तीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करना।
8. विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास और स्वयं तथा राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव उत्पन्न करना।
9. विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

उक्त उद्देश्यों के साथ इस मिशन को ध्यान में रखते हुए शिक्षण और व्यवस्था को उत्तम बनाने के लिए विद्यालय में जितने भी अंतराल (गैप्स) थे उनकी पहचान कर योजनाबद्ध तरीके से समिति बनाकर संसाधन जुटाने के प्रयास प्रारंभ किए गए। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए आधारभूत ढाँचे के विकास के लिए जन सहयोग, दानदाता, पंचायती राज के साथ समन्वय कर विद्यालय के टॉयलेट्स फुटपाथ (अनुमानित लागत 50000/–) बनवाए गए। जनसहयोग से पाँच यूनिट छात्रा टॉयलेट (अनुमानित लागत 60000/–) बनवाए गए। विद्यार्थियों हेतु 150 लीटर क्षमता का वाटर कूलर सब इन्स्पेक्टर श्री राजू शर्मा एवं व्याख्याता श्री ओमप्रकाश यादव द्वारा दान दिया गया (अनुमानित लागत 49000/–)। पुरानी जल संग्रहण टंकी के स्थान पर एक शानदार जल मंदिर बनाने के लिए भामाशाह श्री हरबीर गुर्जर को प्रेरित किया जल मंदिर की लागत लगभग 200000/–। इसी प्रकार प्राचार्य की पहल पर स्टाफ द्वारा लगभग 57000/– की राशि से ऑफिस हेतु मेज कुर्सी कालीन की व्यवस्था की गई। 150000/– के जन सहयोग से विद्यार्थियों के लिए स्टूल–मेज के 150 जोड़े तैयार करवाए गए। भामाशाह श्री घनश्याम सोंखिया द्वारा 600000/– की लागत से एक कमरा मय बरंडा–इंवर्टर तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया।

इन सबके बावजूद विद्यालय को सम्पूर्ण नवीनीकरण के लिए मिशन एजुकेशन को और ऊँचाइया देने लिए मोजेक इंडिया एवं सहगल फाउण्डेशन से संपर्क कर कार्यो को सूचीबद्ध कर पत्र प्रेषित किया गया। स्वीकृति उपरान्त एक शानदार विजन तैयार किया गया ताकि शिक्षा को सरल और सुबोध बनाया जा सके इसके लिए दीवारों को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं सीखने का सुरुचिकर माध्यम बनाने एवं प्रेरित करने के लिए, उपयोगी चित्र बनवाए गए। मस्तिष्कीय झंझावत (brain storming) उत्पन्न करने वाले चित्र सुनिश्चित कर बनवाए गए। उद्देश्य था, बाल मस्तिष्क को अतिशय अनुभव देकर सशक्त बनाना। चित्र नियोजन में कक्षा स्तर व बैठक योजना को भी ध्यान में रखा गया और दीवारों को लर्निंग एड के रूप में विकसित किया गया। कुछ चित्रों को विद्यार्थियों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए एवं अपने प्रति आत्म गौरव का भाव उत्पन्न करने एवं पोषित करने के लिए नियोजित किया गया। इनमे भारतीय वैज्ञानिक संस्थाओं के प्रतीक चिह्न, भारतीय वैज्ञानिकों के चित्र व उपलब्धियों के चित्र है। इन सब में महत्त्वपूर्ण चित्र जी.एस.एल.वी (सेटेलाइट लाँच व्हीकल) का चित्रण है। जिसे लेखक ने मिशन एजूकेशन के रूप में कल्पित किया। 23 फीट ऊँचा यह चित्र विद्यार्थियों को कोतुहल पूर्ण यथार्थ का अहसास कराता है साथ ही विद्यार्थियों में वैज्ञानिक रचनात्मक प्रवृत्ति को जन्म देता है। मिशन एजूकेशन के रूप में चित्रित GSLV MK III का चित्र विद्यार्थिओं में भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम के प्रति जागरूकता जानकारी एवं ज्ञान उत्पन्न करने में भी सक्षम हुआ। जब चित्र बना विद्यार्थी इसे मिसाइल अथवा रॉकेट का चित्र बताया परन्तु समझाने के बाद अब अधिकांश विद्यार्थी समझाते हैं कि पलायन वेग क्या है? GSLV क्या है? PSLV क्या है? कैसे काम करते हैं? इनकी उपयोगिता क्या है? मेरे साथ मिलकर विद्यार्थियों एवं विज्ञान शिक्षक ने सौर मंडल, GSLV का क्रियाशील प्रारूप बनाया तथा ज्वालामुखी के मॉडल तक सृजित किए हैं निश्चय ही चित्रित GSLV MK III का चित्र विद्यार्थियों के मस्तिष्क को विस्तार देने में कामयाब रहा। अब विद्यार्थी उन आयामों पर भी सोचने लगे जो उनके मस्तिष्कीय परास से दूर थे। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जी.एस.एल.वी. प्रारूप को चलाकर विद्यार्थियों को यह बताया गया की चंद्रयान 3 कैसे चाँद पर पहुँचा। अब कक्षा तीन का विद्यार्थी भी यह बताने में सक्षम है कि रॉकेट कैसे काम करता है भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम क्या है। निश्चय ही छात्रों के मस्तिष्क में वैज्ञानिक विचारों को जन्म देने में यह सिद्धि कारक हुआ।

मिशन एजुकेशन के तहत विद्यार्थियों के सर्वांगीण सहशैक्षिक विकास के लिए विभिन्न खेल सुविधाएं भी जुटाई गई। पंचायत समिति किशनगढ़ बास के सहयोग से बास्केटबॉल कोर्ट (लागत 49000/–) बनवाया गया। बॉलीबॉल ग्राउंड तैयार करवाकर छात्र–छात्रा वर्ग की टीम भी तयार की गई। शतरंज की टीम भी बनाई गई जिसमें कक्षा 5 की छात्रा रिया राज्य स्तर तक पहुँची। निश्चय ही ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के लिए यह अच्छी खबर थी। भविष्य की तैयारी के लिए अलग से शतरंज कक्ष का नियोजन किया गया जहाँ बालक अभ्यास करते हैं। टेबल टेनिस के लिए भी टीम विकसित करने के लिए अलग कक्ष नियोजित

किया गया है। बॉक्सिंग व क्रिकेट की सुविधा भी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है। इसी का परिणाम था कि शहरी ओलम्पिक में वॉलीबाल टीम बालिका वर्ग में और फुटबाल बालक वर्ग में गोल्ड मैडल हासिल कर सकी।

शैक्षणिक उपलब्धियों की बढ़ोतरी के लिए भी नियमित रूप से उपचारात्मक शिक्षण करवाया गया। अब विद्यार्थी मॉडल व चित्र बनाकर संकल्पनाओं को समझाते हैं। इस वर्ष 2 विद्यार्थियों को इंस्पायर अवार्ड प्राप्त हुआ। गत वर्षों का परिणाम 99% (कक्षा 12) तथा 89% (कक्षा10) (2021-22) तथा 2022-23 में कक्षा 10 में 100% परीक्षा परिणाम एवं 12 में 94.64% रहा। विद्यार्थियों में विषय पर अधिकार स्थापित करने के लिए प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम में प्रति दिन एक कक्षा-एक विषय संकल्पना के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतीकरण दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल द्वारा व टेलीविजन पर मनोरंजक तरीके से भी सीखने की क्षमताओं को बढ़ावा दिया जाता है।

विद्यालय को तकनीकी रूप से सुदृढ़ करने एवं बच्चों को अध्यापन के लिए तकनीकी सुविधा प्रदान करने के लिए कम्प्यूटर लेब के विकास के लिए विधायक निधि से वित्त उपलब्ध करवाया गया है। भामाशाह की मदद से स्मार्ट टी.वी. और बोर्ड की व्यवस्था के प्रयास किए गए हैं। विद्यार्थियों को सुरक्षित वातावरण हेतु सक्रिय गरिमा समिति के साथ विद्यालय को आई.पी. कैमरों से निगरानी में रखा गया है।

बालिका सशक्तीकरण हेतु एवं आत्म विश्वास बढ़ाने हेतु विद्यालय में 'वीर-बालिका' टुकड़ी का गठन किया गया यह टुकड़ी राष्ट्रीय पर्वों पर एक शानदार परेड प्रस्तुती देती है जो स्वयं तथा अन्य विद्यार्थियों के मन में राष्ट्र प्रेम, आत्म गौरव तथा आत्म अनुशासन के गुण विकसित कराती है। निजी संस्थाओं के दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा एवं रानी लक्ष्मीबाई आत्म रक्षा प्रशिक्षण द्वारा बालिकाओं को आत्म रक्षा के गुर सिखाए गए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि उक्त नवाचारों के माध्यम से विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए एक शानदार वातावरण उपलब्ध हुआ है। मिशन एजुकेशन के सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे हैं मिशन के प्रयास निरंतर जारी रहेंगे।

प्राचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भजेडा,
अलवर (राज.)

वैचारिक चिंतन : रविवार की छुट्टी

❒ सचिन ओझा

रविवार की छुट्टी आते ही अक्सर यह विचार आता है कि बिना किसी उत्सव त्योहार के यह रविवार की छुट्टी क्यों होती है? इसका जवाब देने के लिए इस प्रश्नवाचक विचार को दो हिस्सों में तोड़ते हैं, पहला हिस्सा कि छुट्टी क्यों होती है? चिकित्सा और मनोविज्ञान कहता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क ही भली भांति कार्य सीखने, सिखाने और करने का मुख्य आधार है। धैर्य, विवेक और व्यावहारिक गुणों के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। शरीर को जिस प्रकार से पोषण और व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार से आराम की भी आवश्यकता होती है। यह आराम दैनिक रूप से नींद, योगासन, सकारात्मक चिंतन के रूप में पूरा किया जाता है। इसके अलावा स्वयं के लिए मिलने वाले समय का उपयोग संसाधनों की उपलब्धता, आवश्यकताओं की पूर्ति, स्वयं के रखरखाव स्वास्थ्य जाँच एवं स्वास्थ्य लाभ के रूप में स्वयं को बेहतर बनाने के लिए भी किया जाता है और आवश्यकता के अनुरूप एक अंतराल में हम अवकाश का साप्ताहिक, त्रैमासिक या वार्षिक अंतराल में भी उपयोग करते हैं, जिससे कि यह समझ में आता है कि 'अवकाश', कार्यों की क्रियान्विती, उत्पादकता बढ़ाने, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है, प्रतिदिन एक ही प्रकार के कार्य करने की शृंखला को तोड़ने के लिए भी अवकाश महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है इस अंतराल से उसे कार्य क्रियान्विती के सन्दर्भ में नई प्रकार से सोचने और करने का, अब तक किए गए कार्य और उसकी शैली पर विचार करने का समय मिलता है इसे कार्य के परिणाम में गुणात्मक वृद्धि होती है।

अब हम सोचते हैं कि इस विचार के दूसरे खंड में रविवार का अवकाश यानी की रविवार को ही अवकाश क्यों? ऐसा कहा जा सकता है कि कालांतर में कुछ व्यवस्थाएँ वैश्विक रूप से एकरूपता के लिए विकसित हुई है जिसने विश्व के सभी हिस्सों को तालमेल बैठाने में मदद की, जैसे अलग-अलग कैलेंडर होने के बावजूद ईस्वी, संवत, कैलेंडर या मापन की इकाइयाँ, भाषा के तौर पर अंग्रेजी, यह सभी हमें वैश्विक एकरूपता प्रदान करती है जिससे कि वैश्विक स्तर पर कार्यों के समझ और निष्पादन में सरलता आती है, आज विश्व एक समाज के रूप में विकसित हो रहा है जहाँ वैश्विक एकरूपता लाने वाले पहलू सामाजिक और राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक अंग है उससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है।

फिर अगला विचार यह आता है कि अगर इसमें परिवर्तन कर दिया जाए तो यह किस प्रकार का रहेगा तो पहले तो यह निर्भर करता है कि परिवर्तन किस प्रकार का, सप्ताह में एक दिन का अवकाश कई अन्य कार्यालय में दो दिन का अवकाश होता है। देखने योग्य तथ्य यह है कि समाज ने इसे आवश्यकता के रूप में अपनाया है या बिना समझ के भेड़ चाल में चल पड़ा है। जैसे कि यदि सभी सरकारी गैर सरकारी कार्यालय में शिक्षण संस्थानों में और समूह में नौकरी करने वाली व्यवस्थाओं में अवकाश का दिन रविवार निश्चित किया गया है तो बाजारवाद के इस दौर में बाजार का रविवार को बंद रहना समझ से परे है। सरल शब्दों में कहे कि एक वर्ग जिसका कार्य स्थल पर रविवार को अवकाश होता है। वह रविवार के दिन अपने आवश्यकता के अनुरूप संसाधनों की पूर्ति के लिए रविवार को बाजार में सामान खरीदने के लिए पहुँचता है, परंतु वह देखता है कि भेड़ चाल में बाजार भी रविवार को बंद है। अब स्थिति यह है कि उसे आवश्यक सामग्री खरीदने हेतु किसी कार्य दिवस पर ही बाजार में जाना होगा, बाजार को नियंत्रित करने वाले संगठनों, मार्गदर्शकों और चिंतकों को इस पर विचार करना चाहिए। यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि उन्हें सभी दिन बाजार खुला रखना चाहिए, अवकाश की आवश्यकता सभी को होती है, परंतु उन्हें इस पर विचार करना चाहिए कि क्या उनके लिए और उनके व्यवसाय के लिए उनके ग्राहकों के लिए रविवार की छुट्टी तर्कपूर्ण है। इसके स्थान पर यदि वे शनिवार और रविवार को अतिरिक्त समय के लिए बाजार को खुला रखें और अन्य किसी दिन संभवत सोमवार से शुक्रवार किसी भी दिन के लिए यह निश्चित करें कि बाजार की सभी इकाइयाँ बंद रहेगी तो यह

ग्राहक और विक्रेता दोनों के लिए हितकारी होगा।

ऐसा नहीं है कि यह व्यवस्था अब शुरू हुई है परंतु अब छोटे कस्बों में भी इसका यह विकृत रूप देखने को मिल रहा है। यहाँ तक की दवाइयों से संबंधित अधिकांश दुकानें रविवार को बंद रखी जाती है। यह सोचने योग्य है चाहे हम विकास के दौर में कितने भी आगे पहुँच गए हैं। मगर हम अपने शरीर के बारे में चिंता करने के लिए भी फुर्सत के पल ढूंढ़ते हैं और उन्हें फुर्सत के क्षणों में अपने शरीर की देखभाल जाँच आवश्यकता के अनुरूप चिकित्सकीय सलाह और दवाइयाँ ग्रहण करते हैं। जब तक कि कोई आकस्मिक रूप से आपातकालीन स्थिति नहीं हो जाती है, हम ऐसे ही हैं, इस व्यक्तिगत मानसिकता में परिवर्तन होने में समय लगेगा, परंतु छुट्टी रविवार को ही होगी, इस सामाजिक मानसिकता ने इस स्थिति को और गंभीर बना दिया है। इससे आगे बढ़ते हुए यह भी सोचा जा सकता है कि यह नियम केवल बाजार पर ही लागू नहीं होता है बल्कि इसे अन्य रूप में भी सोचा जा सकता है कि सभी एक प्रकार के कार्य करने वाले कार्यालयों और व्यावसायिक क्षेत्र का एक समूह बनाकर उनके अवकाश का एक दिन निर्धारित किया जाए और यह दिन सभी प्रकार के विभागों में अलग-अलग हो तो क्या यह सामाजिक उत्पादकता के रूप से अधिक लाभदायक हो सकता है। आज की तारीख में किसी विद्यार्थी किसी राजकीय सेवा में कार्यरत व्यक्ति, नौकरी पेशा व्यक्ति को यदि कोई बैंक संबंधित कार्य हो तो उसके लिए उसे अपने कार्य स्थल से अतिरिक्त अवकाश लेना होगा अन्यथा वह बैंकिंग क्षेत्र का कोई कार्य जिसमें बैंक में जाना हो वह नहीं कर पाएगा इसी प्रकार से बैंक में कार्यरत कर्मचारी को यदि किसी अन्य विभाग मैं कोई कार्य हो तो वह भी अपने अवकाश के दिन कार्य कर पाने में असमर्थ है क्योंकि उसी दिन ही सभी विभागों में भी अवकाश है।

शैक्षिक संस्थानों में जो समग्र रूप में एक बहुत बड़ा समूह बनता है पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर और अन्य उच्च शिक्षण संस्थान सभी को सम्मिलित कर दिया जाए तो यह एक वृहद नागरिक क्षेत्र बनता है, क्या समाज को दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन देने वाले इस क्षेत्र में इस प्रकार की पहल की जा सकती है कि शैक्षिक संस्थानों में रविवार के स्थान पर अवकाश को सोमवार से शुक्रवार के किसी अन्य दिन पर स्थानांतरित कर दिया जाए जिससे कि एक बहुत बड़ा समूह अपने अन्य कार्यों के संपादन को लेकर के अपने मूल कार्य को बाधित न करें और अपने अवकाश का सदुपयोग करते हुए उन कार्यों का तसल्ली से संपादन कर सके, इसके प्रभावों पर विचार करें तो सकारात्मक परिणामों की एक वृहद शृंखला बन जाती है।

इस आयु वर्ग में हमने 3 वर्ष से लेकर के लगभग 24 वर्ष तक के अधिकांश वर्ग को सम्मिलित कर लिया है। हालांकि यह वर्ग इससे भी अधिक आगे बढ़कर हो सकता है। यह समूह समाज की कुल जनसंख्या की एक तिहाई वर्ग से अधिक है, शैक्षिक संस्थानों के अवकाश को किसी अन्य दिन स्थानांतरित कर दिया जाए। एक बार के लिए माना कि बुधवार को स्थानांतरित कर दिया जाए तो अन्य राजकीय गैर राजकीय विभागों और बाजार में रविवार को अवकाश रहता है, ऐसी स्थिति में रविवार को अभिभावकों का विद्यालय संपर्क करना सरल हो जाएगा। अन्यथा अभिभावकों का विद्यालय आने के संदर्भ में सबसे बड़ी समस्या यह है कि उन्हें इसके लिए अपने कार्य क्षेत्र से अवकाश लेना होता है। इसके साथ ही अभिभावकों के साथ-साथ अन्य क्षेत्र के विद्वान जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, बैंकर अन्य विभागों के विभिन्न अधिकारी, कर्मचारी, रविवार को अवकाश रखने वाले व्यापारी भी विद्यालय आकर अपने अनुभवों और शैक्षिक ज्ञान के आधार पर विद्यालय को सुझाव, सहयोग, मार्गदर्शन दे सकेंगे, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आएगा, राजस्थान के विद्यालयों में अमावस्या के दिन बैठक रखने का कारण भी तो अवकाश ही है। अभिभावको विद्यालय के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में और शिक्षाविदों से सहयोग प्राप्त करने में यह एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है, क्योंकि उपलब्धता के बिना उपयोगिता संभव ही नहीं है। वृहद दृष्टिकोण में आगे बढ़ते हुए यदि सभी अभिभावकों के क्षेत्र के अवकाश अलग-अलग दिन हो तो भी वे अपने अवकाश के दिन विद्यालय से संपर्क कर सकेंगे।

वृहद प्रभावशाली क्षेत्र और अधिकतम प्रभावित जनसंख्या प्रतिशत के आधार पर इसका विद्यालय क्षेत्र से ही प्रारंभ किया जाए और प्रारंभिक तौर पर एक क्षेत्र विशेष में ही यह पहल की जाए तो इसके परिणामों की वृहद सूची बनाई जा सकती है, फिर इसे समेकित रूप में लागू किया जा सकता है, छुट्टी के दिन का आराम के साथ-साथ कुछ अर्थपूर्ण उपयोग हो सकता है, और विचारों से आगे निकलकर व्यावहारिक रूप से इसके अनेक सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे। अवकाश केवल आराम के लिए नहीं होता है, अवकाश वह समय है जब व्यक्ति अपने ऊपर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने आप को बेहतर बनाने के लिए प्रयास करता है। यह बेहतर बनने के प्रयास दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक रूप से छोटे कार्यों और वृहद संकल्प के रूप में कई प्रकार से होते हैं, ऐसा कहा जाता है कि स्वयं को बेहतर बनाने के लिए स्वयं को समय देना पड़ता है और केवल समय देना ही पर्याप्त नहीं हैं बल्कि स्वयं को बेहतर बनाने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं, संसाधन जुटाना पड़ते हैं। यदि सभी अवकाश एक ही दिन हो तो उसे संसाधनों की उपलब्धता और किए जाने वाले प्रयास बाधित होते हैं तथा नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। एक विकासशील दिशा में गतिमान समाज के तौर पर हमें इस पर विचार करना चाहिए।

कोई एक दिन सामूहिक अवकाश के तौर पर तय किया जाए तो कोई चिंताजनक बात नहीं है परंतु इसकी पुनरावृति बार-बार लगातार एक ही तरीके से हो तो यह अनुचित है। त्योहारों के हमारे इस देश में सामूहिक अवकाश के लिए एक दिन तय करने की विशेष आवश्यकता हमें नहीं पड़ती है क्योंकि विभिन्न प्रकार के त्योहार हमें निश्चित अंतरालों में सभी के साथ एक ही दिन के सामूहिक अवकाश की सहूलियत प्रदान करते हैं। जो कि हमारे शारीरिक और मानसिक स्थिति को ऊर्जावान बनाने हमें नई स्फूर्ति प्रदान करने और हमारे कार्य क्षमता कार्य कुशलता और उत्पादकता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

तो आओ मिलकर विचार करते हैं कि समाज के मार्गदर्शन के रूप में शिक्षण संस्थानों से शुरुआत करते हुए क्या हम यह छुट्टी का दिन रविवार से किसी और दिन पर स्थानांतरित करने की पहल कर सकते हैं, क्या हम विद्यालयों से इसकी पहल करते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं, जिससे कि अवकाश की उपयोगिता बढ़ाई जा सके।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जागरिया,
फलोदी (राज.) **मो.न.: 9602697777**

भविष्य की शिक्षा पद्धति: ब्लेन्डेड एजुकेशन

❒ डॉ. तमन्ना तलरेजा

संपूर्ण विश्व विकास की ओर अग्रसर है। समय तेजी से बदल रहा है और हमें इसके साथ कदमताल की जरूरत भी है। बदलते समय की गति के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए हमें विकसित होने की आवश्यकता है अन्यथा हम पीछे रह सकते हैं। शिक्षा का विकास में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा से किसी भी देश के बेहतर मानव संसाधन तैयार होते है। एक बेहतर मानव संसाधन देश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। व्यक्तिगत तौर पर भी शिक्षा अनेकों अवसर खोल देती है। शिक्षा हमें अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए सही ज्ञान, कौशल, जानकारी और तकनीकों से परिपूर्ण करती है और बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने में सहयोग करती है।

समाज या दुनिया की लगातार बदलती आवश्यकताओं के साथ शिक्षा प्राप्त करने या प्रदान करने के तरीके भी पारम्परिक काल के मुकाबले डिजिटलीकरण की शुरुआत के साथ अधिक विकसित हो रहे है। अब जरूरत है कि डिजिटल-लर्निंग को भी एक वैकल्पिक पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाए। यहाँ ध्यातव्य है कि 'वैकल्पिक पद्धति' यानि जिस शिक्षण पद्धति को शिक्षक द्वारा करवाए जा रहे कक्षा-कक्ष शिक्षण के सहायक विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस शिक्षण के मिश्रित रूप के लिए ग्लोबल स्तर पर एक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, जो है- **ब्लेन्डेड लर्निंग**।

अब आपके मन मस्तिष्क में यह प्रश्न उठा होगा कि ये ब्लेन्डेड लर्निंग क्या होती है? तो सरल अर्थ में **''परम्परागत कक्षा कक्ष शिक्षण की शिक्षक-विद्यार्थी अंतक्रियाओं में डिजिटल शिक्षण उपकरणों का संयोजन किया जाना ब्लैन्डेड मोड ऑफ लर्निंग है।''** ब्लेन्डेड लर्निंग, सीखने की क्रिया को कक्षा-कक्ष की दीवारों से परे ले जाती है, जिससे विद्यार्थियों को बेहतरीन संसाधनों तक ऑफलाइन व ऑनलाइन दोनों तरह से उपलब्ध करवाया जा सके। स्कूली विद्यार्थियों के सीखने की दृष्टि से ब्लेन्डेड मोड ऑफ लर्निंग बहुत ही प्रभावकारी माध्यम है क्योंकि कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के साथ-साथ त्रिविमीय चित्रण, ऑडियो-वीडियो विधाओं का प्रयोग इस आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं के मन-मस्तिष्क पर गहरा असर दिखाती है, जिससे विद्यार्थी का संज्ञानात्मक विकास (कोगनेटिव डवलपमेंट) बेहतर होता है और विद्यार्थी में विषय व पढ़ाई के प्रति रूचि बढ़ती है।

राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा 'ब्लेन्डेड मोड ऑफ लर्निंग' के प्रयोग से शिक्षण को प्रभावी व सुचारू बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। विद्यार्थियों के अध्ययन को तकनीक की मदद से अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर दो विभागीय महत्त्वाकांक्षी नवाचार योजनाओं 'मिशन स्टार्ट' एवं 'स्कूल आफ्टर स्कूल' का लाँच किया गया।

इनके सफल क्रियान्वयन के लिए विभाग ने अपनी दूरदर्शी सोच के तहत सबसे पहले अपने सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विविध डिजिटल संसाधनों यथा- स्मार्ट टी.वी., आईएफपीडी/ प्रोजेक्टर, इंटरेक्टिव पैनल, स्मार्ट बोर्ड इत्यादि की उपलब्धता का आकलन करवाया। उक्त आकलन करवाया जाकर विद्यालयों में उपलब्ध समस्त संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए किया जाने पर विचार किया।

इसके पश्चात् विभाग द्वारा उनके एक टेक्निकल पार्टनर मिशन ज्ञान के साथ एमओयू किया जाकर विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण डिजिटल अध्ययन सामग्री जिसका निर्माण विभाग के शिक्षकों द्वारा ही करवाया गया है को सभी विद्यार्थियों तक नि:शुल्क रूप से पहुँचाने की विभाग की प्रमुख प्राथमिकता के अनुसार कार्यारम्भ किया गया। इसके लिए-

- विभाग द्वारा समस्त जिलों के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारियों को 4 टी.बी. की ई-कंटेंट सहित हार्डडिस्क उपलब्ध करवायी गई। साथ ही समसा आईसीटी सेल द्वारा 15070 हार्डडिस्क विद्यालयों तक पहुँचायी जा रही है।
- विद्यालयों में इंटरनेट की उपलब्धता होने की स्थिति में विभागीय ई-कक्षा यूट्यूब चैनल के माध्यम से भी ई-कंटेट दिखाया जाना सुनिश्चित किया जा रहा है।

इन सभी तैयारियों के पश्चात् एक सुदृढ़ एवं प्रभावशाली विजन के साथ शासन सचिव महोदय द्वारा विभागीय महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम **Mission START: 2023-24 Support for Teaching with Advance Remedial Techniques** कार्यक्रम प्रारंभ किया गया।

- यह कार्यक्रम राज्य के दूर-दराज के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है। जो अपने कैरियर को चुनने के पथ पर गतिशील है परंतु किसी भी कारणवश यदि उनके विद्यालय में विषयाध्यापकों की उपलब्धता में कमी है या कोई विषयाध्यापक किसी कारणवश लंबे अवकाश पर है तो उनके लिए कक्षा 9 से 12 के समस्त पाठ्यक्रम के ई-कंटेट को टॉपिक अनुसार मैप करके (स्कूल लेसन गाइडेंस मॉड्यूल) स्माइल ग्रुप्स के माध्यम से विद्यालयों तक पहुँचाया गया है।
- ऐसे समस्त विद्यालयों में सोमवार से शुक्रवार की समुचित समय सारणी के अनुसार इस ई-कंटेट व स्मार्ट क्लासेज के माध्यम से विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम निर्धारित समय पर उसी प्रकार पूर्ण करवाया जाएगा जिस प्रकार शिक्षक की उपस्थिति में पूर्ण करवाया जाता है।
- विद्यालयों में विषयाध्यापकों की संख्या और ई-कंटेंट के मध्य संतुलन बिठाते हुए ई-लेक्चर के जरिए 700 से 800 घंटे की क्लासेस का संचालन किया जाना है।
- विद्यालयों में संचालित की जाने वाली ई-क्लासेज में किस दिन, किस कालांश में और कौन से विषय पर है- कटेंट के जरिए शिक्षण होगा, इसकी समय सारणी का विद्यालय स्तर से निर्धारण किया जाए. स्मार्ट क्लासेज के संचालन और समय सारणी तैयार करने के लिए

'स्कूल लेसन गाइडेंस मॉड्यूल' तैयार किया गया है, इस मॉड्यूल की तर्ज पर स्मार्ट क्लासेज के संचालन की सतत मॉनिटरिंग की जानी हैं।

- विद्यालय स्तर पर निर्मित इस समय सारणी को शाला-दर्पण मॉड्यूल पर प्रत्येक शुक्रवार को आगामी सप्ताह के लिए प्रविष्ट किया जाना होगा जिससे राज्य स्तर पर यह पुष्टि की जा सके कि विभाग का एक भी बालक-बालिका विषयाध्यापक की कमी के चलते पाठ्यक्रम पूरा कर पाने से वंचित नहीं रहे।
- इसके अलावा जिन विद्यालयों में सभी विषयों के विषयाध्यापक उपलब्ध है उन विद्यालयों में भी शिक्षकों द्वारा कठिन टॉपिक्स को समझाने के लिए कक्षा की आवश्यकता अनुसार ब्लेन्डेड मॉड ऑफ टीचिंग (ऑफलाइन तथा ऑनलाइन दोनों माध्यमों से) के लिए इस कंटेट का उपयोग किया जाना है।
- मिशन स्टार्ट की मॉनिटरिंग हेतु विद्यालय स्तर पर एक शिक्षक को मिशन स्टार्ट प्रभारी बनाया जाना हैं। जिनके द्वारा कक्षा 9 से 12 के समस्त विद्यार्थियों तक ई-कन्टेन्ट की पहुँच सुनिश्चित करके, अपने विद्यालय के लिए निर्धारित की गई समय सारणी के अनुसार ब्लेन्डेड लर्निंग का सुचारू संचालन करवा, प्रत्येक शुक्रवार को आगामी सप्ताह की समय सारणी शालादर्पण मॉड्यूल में प्रविष्ट कर, उक्त समय सारणी को प्रिंट करके विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जाना हैं।
- मिशन स्टार्ट प्रभारी शिक्षक विद्यार्थियों से कार्यक्रम के संबध में निरन्तर फीडबैक लिया जाना हैं तथा ब्लेन्डेड लर्निंग के लाभों से अवगत करवाया जाकर अध्ययन हेतु प्रेरित किया जाना है।

यानि सरल शब्दों में कहे तो विभाग की मंशा बिल्कुल स्पष्ट है किसी भी साधन/शिक्षक के अभाव में हमारे विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित नहीं होनी चाहिए। इसके लिए विद्यालयों की जरूरत के मुताबिक आईसीटी लैब्स को क्रियाशील करने, डिजिटल संसाधन पहुँचाने से लेकर विद्यार्थियों तक नि:शुल्क डिजिटल कंटेट पहुँचाने के सभी प्रयास विभाग द्वारा किए जा रहे है।

इसके अलावा शिक्षक दिवस के अवसर पर ही कक्षा 10 एवं 12 के बोर्ड विद्यार्थियों को विद्यालय समय के पश्चात् भी कुछ प्रमुख विषयों का लाइव कक्षाओं के माध्यम अतिरिक्त अध्ययन करवाने के लिए एक कार्यक्रम 'स्कूल आफ्टर स्कूल' का प्रारंभ भी किया गया। यह भी राजस्थान स्कूल शिक्षा विभाग एवं मिशन ज्ञान एनजीओ के संयुक्त प्रयास से आरम्भ हुआ है।

- स्कूल में ऑनलाइन लाइव कक्षाओं के माध्यम से शिक्षकगणों द्वारा सप्ताह में 5 दिवस सोमवार से शुक्रवार प्रतिदिन सायं 4 से 9 बजे तक लाइव कक्षाएँ ली जा रही है। जिसका वर्तमान शेड्यूल निम्नानुसार हैं-

समय	10वीं कक्षा	12वीं कक्षा कला	12वीं कक्षा विज्ञान
4:00 PM-4:45PM	अंग्रेजी	भूगोल	जीव विज्ञान
5:00 PM-5:45PM	विज्ञान	अंग्रेजी	अंग्रेजी
6:00 PM-6:45PM	सामाजिक विज्ञान	राजनीति विज्ञान	गणित
7:00 PM-7:45PM	गणित	इतिहास	-

- जिन विद्यार्थियों के पास घर पर मोबाइल फोन अथवा अन्य कोई डिजिटल संसाधन उपलब्ध है तो वे विद्यालय समय के पश्चात् भी बोर्ड कक्षाओं की तैयारी के लिए मिशन-ज्ञान एप अथवा विभागीय ई-कक्षा यूट्यूब चैनल के माध्यम से लाईव कक्षा ले सकेंगे तथा कमेंट बॉक्स में शिक्षकों से प्रश्न पूछकर अपनी शंका समाधान भी कर सकेंगे।
- इन लाइव कक्षाओं की रिकॉर्डिंग ई-कक्षा यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध रहेगी। जिसे शिक्षक एवं विद्यार्थी आवश्यकतानुसार देख सकेंगे साथ ही अध्ययन सामग्री, नोट्स एवं प्रश्नोत्तरी की पीडीएफ मिशन ज्ञान एप से डाउनलोड की जा सकेगी।
- सभी बोर्ड कक्षाओं के सभी विद्यार्थियों को यूट्यूब चैनल सब्सक्राइब करवाकर इन नि:शुल्क लाइव कक्षाओं का लाभ दिलाया जाना नैतिक कर्त्तव्य हैं, ताकि विद्यार्थियों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार लाया जा सके।

स्कूल आफ्टर स्कूल कार्यक्रम का बिन्दुवार विवरण

क्र.सं.	1	2
1	कक्षाएँ	कक्षा 10 तथा 12 बोर्ड कक्षाएँ (प्रथम चरण में)
2	दिन	सोमवार से शुक्रवार
3	समय	सांय 4:00 बजे से 9:00 बजे तक
4	उपलब्धता	मिशन ज्ञान एप गूगल प्ले स्टोर एवं ई-कक्षा यूट्यूब चैनल पर नि:शुल्क उपलब्ध
5	ई-कक्षा यूट्यूब चैनल लिंक	https://www.youtube.com/@ekaksha8385/streams
6	मिशन ज्ञान एप डाउनलोड लिंक	play.google.com/store/apps/details?id=com.mission.gyan
7	लिंक की विद्यार्थियों तक उपलब्धता	स्माइल ग्रुप के माध्यम से
8	लाइव कक्षाओं QR कोड़	

विभाग द्वारा ब्लेन्डेड लर्निंग को लेकर इतने सुनियोजित नवाचारों के प्रयोग से यह जाहिर है कि विभाग का दृष्टिकोण 'ACT Locally Think Globally' है। यानि राजस्थान का कोई भी बालक-बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी तरह वैश्विक रूप से पिछड़ा हुआ नहीं होना चाहिए। इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि कक्षा-कक्षीय शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका कमतर होगी। परिवर्तन के इस युग में हमारे राज्य के नौनिहालों को हर तरह से वैश्विक स्तर की उत्कृष्ट शिक्षा मिले। विभाग इसी दिशा में प्रयासरत है। सभी विज्ञ शिक्षकों को इन नवाचारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर, विभाग के साथ मिलकर इन कार्यक्रमों को मिशन मोड पर क्रियान्वित करके इन्हें सफल बनाने में अपनी भागीदारी देनी चाहिए।

अनुसंधान अधिकारी
गुणवत्ता, नवाचार एवं प्रशिक्षण अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
राजस्थान, बीकानेर

सृजनात्मक अभिव्यक्ति : भित्ति पत्रिका

❐ संजय कुमार

हर बच्चा अपने आप में अलग होता है। वह अलग सोचता है, समझता है। लेकिन आज के समय में पढ़ाई परीक्षा प्रणाली पर आधारित है। इसमें बदलाव की जरूरत है जिससे कि बच्चा स्वतंत्र होकर अपना सर्वोत्तम कर सके। परीक्षा केंद्रित पढ़ाई होने के कारण बच्चों के अंदर की मौलिक शक्ति दब जाती है, उन शक्तियों को उजागर करने के लिए भित्ति पत्रिका एक अच्छा माध्यम है। भित्ति पत्रिका के माध्यम से बालक अपनी सृजनात्मक शक्ति को प्रदर्शित कर सकता है बिना किसी भय के। नई शिक्षा नीति, FLN, निपुण भारत जैसी योजनाओं में भी भित्ति पत्रिका अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

भित्ति पत्रिका– यही एक ऐसी पत्रिका है जो अपने आप में संपूर्ण पत्रिका लिए हुए हैं। यह कम लागत में तैयार होती है। बच्चों के द्वारा बच्चों के लिए तैयार की जाती है। अन्य पत्रिका जैसी विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन साल में एक बार व ज्यादा लागत पर किया जाता है। लेकिन इसका प्रकाशन सुविधा अनुसार महीने में दो बार भी किया जा सकता है। यह बच्चों को अपनी भाषा की पकड़, सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति, अपने अंदर के कवि, लेखक, चित्रकार, पत्रकार को बाहर लाने का कार्य करती है साथ ही एक नवाचार व शिक्षा में नयापन लाती है तथा ज्ञान को स्थाई बनाती है।

आवश्यकता– वर्तमान समय में स्कूली शिक्षा में बच्चों को अपने मौलिक अभिव्यक्ति प्रकट करने के लिए कम अवसर प्राप्त होते हैं क्योंकि शिक्षा पद्धति रटने, सूचना एकत्र करने तक सीमित हो गई है। अतः भित्ति पत्रिका के माध्यम से बच्चे अपनी मौलिकता की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। बच्चों के मस्तिष्क विकास के लिए बच्चे अपने विचार व भावना को अपनी आम भाषा में भित्ति पत्रिका के माध्यम से प्रकट करके अवसर प्राप्त करेंगे। भित्ति पत्रिका के माध्यम से बच्चों का भाषा विकास, लेखन क्षमता का विकास, तार्किक शक्ति का विकास होगा। नवीन सृजनात्मकता के लिए बच्चों को नई-नई पुस्तक पढ़ने की रुचि बढ़ेगी। भाषा विकास अन्य विषयों के लिए भी उपयोगी होगा।

तैयार कैसे करें– संपादक मंडल के रूप में बच्चों की एक टीम का गठन किया जाएगा। यह टीम विद्यालय में बच्चों की संख्या के आधार पर तैयार की जाएगी। जिसमें एक प्रधान संपादक व दो से तीन बच्चों को सहायक संपादक बनाया जाएगा। ये बड़ी कक्षाओं के बच्चे होंगे। इनके सहयोग के लिए और भी बच्चों को शामिल किया जा सकता है। यह टीम बच्चों से रचनाएँ इकट्ठी करेगी और उनकी समीक्षा कर पत्रिका हेतु चयन करेंगी। साथ ही वर्तनी या भाषा संबंधित त्रुटि वाली रचनाओं को पुनः लौट कर सही करवा कर वापस लेगी। भिति पत्रिका दो चार्ट को लंबवत जोड़कर बनायी जा सकती है। जिस पर रचनाएँ चिपकाई भी जाएगी। नई पत्रिका तैयार होने पर पुरानी पत्रिका को हटाकर उसकी जगह नई पत्रिका लगा दी जाएगी।

विषय सामग्री के स्रोत– विषय सामग्री को जुटाना व रचना की मौलिकता दोनों ही कठिन राह हैं क्योंकि दीवार पत्रिका का उद्देश्य सटीक और मौलिक रचना प्रकाशन है। बच्चों में पढ़ने की रुचि कम होने के कारण लेखन क्षमता के प्रति रुझान कम होता है। स्कूल में विभिन्न अवसरों पर वाद विवाद प्रतियोगिताएँ, भाषण, निबंध प्रतियोगिता, कहानी, कविता प्रतियोगिता का आयोजन नियमित रूप से करवाना।

परीक्षा में बच्चों के विचार व अनुभव व्यक्त करने वाले वाले प्रश्न देना, यात्रा वृत्तांत लिखवाना, स्थानीय सांस्कृतिक महत्त्व के स्मारक, धरोहर, त्योहार, व्यक्तियों के बारे में सूचना एकत्र करवाना।

पुस्तकालय व अन्य पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने के बाद उनकी प्रतिक्रिया बच्चों से दिखवाना, पहेलियाँ, चुटकुले, दो चित्रों में अंतर ढूंढ़ना, वर्ग पहेली, वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ ढूँढ़ना, चित्र कथा तैयार करवाना, अधूरी कहानी को पूरा करवाना आदि प्रकार की रचनाएँ तैयार की जा सकती है। जो सामान्यतः पाठ्यपुस्तक, पुस्तकालय की पुस्तक, समाचार पत्र के माध्यम से बच्चे आसानी से तैयार कर सकते हैं।

भित्ति पत्रिका में स्तंभ बनाकर उन्हें रोचक व आकर्षक बना सकते हैं।

भित्ति पत्रिका से लाभ –

- पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ेगी।
- भाषाई दक्षता का विकास होगा जो अन्य विषयों के सीखने में भी सहायक होगा।
- बच्चों द्वारा संपादन करने पर प्रबंधन प्रणाली व जिम्मेदारी का एहसास होगा।
- अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए बेहतरीन माध्यम है जिससे शिक्षक बच्चों को समझ सकते हैं।
- लेखन व चित्रकला की रचनात्मकता का विकास होने पर बच्चों में लेखक, चित्रकार, पत्रकार के बनने के बीज भी अंकुरित होंगे।
- विषय संबंधित गतिविधियों से शिक्षण में सहायता होगी ।
- लिखने व पढ़ने की क्षमता का विकास होगा।
- पुस्तकालय का उपयोग बढ़ेगा।
- अपनी रचना के प्रकाशन पर आत्मविश्वास बढ़ेगा।
- स्वयं से संबंधी घटना, स्थान होने पर वह उन चीजों को खोजेगा और लिखेगा।
- प्रेरणा स्रोत के प्रसंग पढ़ने पर नई ऊर्जा का संचार होगा।

यदि विद्यालय द्वारा इस प्रकार की नई पहल की जाए तो बच्चों के सर्वांगीण विकास में यह कदम बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण साबित होगा।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बेनिवालों की ढाणी, मंगले की बेरी, आडेल
बाड़मेर (राज.)-344033

पुस्तक समीक्षा

अड़तालीस कदम

सम्पादक : डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी; **प्रकाशक** : निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर; **पृष्ठ संख्या:** 490; **संस्करण:** प्रथम 2023

विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित 29 नवम्बर 1981 को जिला हनुमानगढ़ राजस्थान के गाँव धन्नासर में जन्मे डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी आईएएस की गिनती हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के शीर्षस्थ साहित्यकारों में की जाती है। डॉ. सोनी ने प्रशासनिक पदीय दायित्व निर्वहन के साथ-साथ कहानी, कविता एवं अनुवाद व संपादन का कार्य कर स्वयं के साहित्यानुरागी होने का परिचय दिया है।

शिक्षा विभाग द्वारा 48 वर्षों में प्रकाशित कुल 49 काव्य संग्रहों के विस्तृत कलेवर को 'अड़तालीस कदम' नामक एक पुस्तक में सुधी पाठकों के रसास्वादन हेतु संक्षिप्त रूप से निबद्ध करने वाले डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी का यह काव्य संग्रह स्वयं में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर के अड़तालीस वर्षों के काव्य संग्रह का इतिहास ग्रंथ भी बन गया है। इस वृहद् संकलन के संबंध में स्वयं डॉ. सोनी के विचार कुछ इस प्रकार है- ''अब सोचता हूँ कि आने वाले समय में इस समग्र साहित्य संपादन कोश से यह दुविधा तो कभी नहीं आएगी कि किस वर्ष में लेखक की कौनसी किताब छपी थी... इस संग्रह की कविताएँ जब पाठक पढ़ेंगे तो इस बात की हामी निश्चित ही भरेंगे कि शौर्य, तप, त्याग की इस मरुभूमि के शिक्षकों के पास सार्थक कविता सृजन के लिए माँ शारदे का आशीर्वाद है।''

इस हृदयस्पर्शी भाव के वशीभूत होकर डॉ. सोनी 'अड़तालीस कदम' पुस्तक के बारे में अपने शब्दों में'' यह पुस्तक समर्पित है। मरुभूमि के उन लेखकों को जिनके द्वारा लिखे गए सुनहरे अक्षर आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।'' कहते हुए प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो सन् 1967 से 2014 तक प्रत्येक वर्ष में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित पुस्तक का नाम, पुस्तक में सम्मिलित कवियों के नाम एवं प्रतिनिधि पाँच कविताओं को एक ही जिल्द में समेटते हुए साहित्य प्रेमियों की जिज्ञासा को शांत करने हेतु मय तत्कालीन निदेशक के नाम भी इस पुस्तक में लिए गए हैं।

सुखद अनुभूति का विषय है कि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के संपादन का कार्य हिन्दी के नामचीन साहित्यकारों ने समय-समय पर किया जिनमें कुछ प्रमुख नाम यथा अमृता प्रीतम, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीश चतुर्वेदी, प्रकाश जैन, बलदेव वंशी, कैलाश वाजपेयी, मंगलेश डबराल, इकराम राजस्थानी, नंदकिशोर आचार्य, हरीश भादानी, मीठेश निर्मोही, डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी, सावित्री परमार आदि हैं। इसी क्रम में राजस्थानी के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. चन्द्रप्रकाश देवल ने भी संपादन कार्य में अपना योगदान दिया।

'अड़तालीस कदम' पुस्तक में संकलित संपादकीय अंश भाव और विचार की पृष्ठभूमि पर तत्कालीन परिस्थितियों का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। साहित्य समाज में व्याप्त जनमानस की विचारधाराओं से निर्मित होता है। उन विचारों की सौरभ को प्राप्त संपादकीय अंश के माध्यम से सहज ही सूंघा जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में सन् 1967 से 2014 तक के समस्त लेखकों के नाम प्रकाशन वर्ष सहित समसामयिक पाँच प्रतिनिधि कविताओं को स्थान दिया गया है। इन कविताओं में जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्मत्तर एवं वृहत से वृहत्तर विषयों के रूप में समाज, राष्ट्र, व्यक्ति (आम-खास) भूख, गरीबी, शिक्षा, बेरोजगारी, सपने, कर्त्तव्य, राजनीति, सत्ता, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, जमीन-आसमान, माता-पिता, पत्नी-प्रेमिका, संतान, शैशव से वृद्धावस्था, पर्यावरण, विज्ञान-तकनीक, प्रेम, घृणा, तिरस्कार आदि समस्त मनोभाव, पुस्तक, फल-फूल, घर-बार, जंगल, हथियार, आभूषण, रिश्ते, ज्ञान-वैराग्य, संकल्प, अनुशासन, मौसम, जीवन, इतिहास जैसे विषयों पर कविता, गीत, गजल, नज्म, हाईकू, क्षणिकाओं आदि के माध्यम से इस मरुभूमि के शिक्षक-कवियों की लेखनी ने भावों को भाषा रूपी वाणी दी है।

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी द्वारा स्वयं सन् 2012 में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित 'शब्दों की सीप' कविता संग्रह का संपादन किया गया।

'अड़तालीस कदम' पुस्तक का आंरभ होता है सन् 1967 में प्रस्तुति नामक पुस्तक से जिससे समीक्ष्य पुस्तक में आठ कविताएँ ली गयी है। इन सभी कविताओं को पढ़कर बोध होता है कि राजस्थान के हिन्दी कवि तत्कालीन साहित्य की प्रयोगवादी काव्य धारा से अछूते नहीं थे। इन कवियों पर भी युग की विचारधारा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हुए देखी जा सकती है। 'कौन्तेय' नामक एक कविता में 'उठो ओ युधिष्ठिर, कब तक नत देखोगे, अपनी इच्छाओं का चीर हरण? कब तक धरोगे धीर? घुटोगे, निगलोगे, नीला जहर? इसी क्रम में 1972 तक 'प्रस्तुति' के चार भाग 'सन्निवेश' के दो और 'बिम्ब-बिम्ब चांदनी' नामक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। 1979 में छपी 'लगभग जीवन' लीलाधर जगूड़ी जिनकी कविताओं ने हिन्दी साहित्य में खासा नाम अर्जित किया था के द्वारा संपादन किया गया था।

प्रकाश्य पुस्तकों की शृंखला में 1980 में हिन्दी की प्रख्यात लेखिका और जानी-मानी कवयित्री अमृता प्रीतम के संपादकत्व में छपी पुस्तक 'पानी की लकीर' सुधी जनों के आकर्षण का केन्द्र रही। उन्हीं के शब्दों में 'अच्छी शायरी चाहे किसी देश की हों, किसी जुबान की, उसमें ठण्डे पानी की सरिता का अहसास होता है तो वह शायरी कलात्मक पहलू के अर्थों में भी होती है।

1981 में प्रकाशित 'अंधेरों का हिसाब' काव्य संग्रह का संपादन नई कविता के सशक्त

हस्ताक्षर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने किया था। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के शब्दों में 'कविता न तो जानना है न यकीन करना न विचार करना। वह महसूस करना है– अनुभव करना है।

1967 में प्रस्तुति द्वारा 48 कवियों के साथ आरंभ किया गया यह सफर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान के तत्वावधान में सन् 2014 तक निरंतर आगे बढ़ते हुए 123 कवियों तक पहुँच गया। डॉ. सोनी के भगीरथ प्रयास से अड़तालीस वर्षों के अनेक नामचीन और गुमनाम कवियों को एक आवरण में आबद्ध कर उजागर करना सचमुच अपने आप में अद्भुत प्रयास है। काव्य संग्रह का समापन कवि गोपेश शरण शर्मा 'आतुर' का ''सफलता से मुदित होते हैं कैसा खेल यह दुनिया? विफलताओं निराशा का है कैसा मेल यह दुनिया? मनुज को चाहिए सम-भाव कैसी भी परिस्थिति हो ए भवसागर की तरणि तू तरंगे झेल यह दुनिया।'' छंद पर होता है।

अस्तु! समग्र रूप में 'अड़तालीस कदम' अपने विशाल कलेवर में राजस्थान के शिक्षक हृदय में व्याप्त कवि रूपी माणिक्यों की आभा से आलोकित काव्य संग्रह है। इन मणियों को एक लड़ी में पिरोने का कार्य डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने किया है।

समीक्षक : **डॉ. संगीता पुरोहित**

सहायक निदेशक शिविरा प्रकाशन अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

तरुशिखा

कथाकार : कांता मीना; **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर; **पृष्ठ संख्या:** 96; **संस्करण:** प्रथम 2023; **मूल्य:** ₹300/-

मानवीय संवेदनाओं का एहसास कराती कहानियों का संग्रह है तरुशिखा, बीकानेर निवासी ख्याति नाम साहित्यकार एवं कहानीकार डॉ. कांता मीना का कहानी संग्रह तरुशिखा सूर्य प्रकाशन मंदिर बीकानेर द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह में 29 कहानियों को समाहित किया गया है। संग्रह की सभी कहानी समाज में घटित सत्य घटनाओं पर आधारित है जो आए दिन हमारे सामने घटित होती रहती हैं लेकिन हम और आप इस तरफ ध्यान नहीं देते। समाज में घटित घटनाओं पर अपनी लेखनी चलाकर डॉ. कांता मीना ने मानवीय संवेदनाओं से लबरेज कहानियों को जन्म दिया है। जिस प्रकार एक अधिवक्ता अपने तर्क वितर्क से न्यायालय में घटनाओं को जज के सामने रखकर न्याय की गुहार करता है ठीक उसी प्रकार से डॉ. मीना ने समाज में घटित घटनाओं को कहानी बनाकर साहित्य को समाज के सामने रखा सत्य की कसौटी परखने के लिए। कहानी संग्रह की कहानी परीक्षा से पहले की परीक्षा के माध्यम से डॉ. मीना ने युवा लड़कियों की उस पीड़ा को उजागर किया है जो परीक्षा केंद्र तक जाने व केंद्र पर नकल रोकने के नाम पर युवतियों के साथ बदसलूकी होती रहती है। बेटियाँ जब परीक्षा केंद्र पर जाती हैं तो उनके साथ घर से निकलने से लेकर परीक्षा केंद्र तक अनेक तरह की बदसलूकी होती है फिर भी वे बेटियाँ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समाज से लड़ती हुई आगे बढ़ती है। संग्रह की कहानी वायरल गर्ल एक गाँव देहात की ऐसी लड़की की कहानी है जो पढ़ना चाहती है लेकिन घर की आर्थिक हालात सही नहीं होने के कारण आगे नहीं पढ़ पाती। शादी के बाद उसके हौसलों की उड़ान भरने में उसके पति ने साथ दिया तो वह लड़की आईपीएस अधिकारी बन जाती है और उसका वीडियो अपने सपनों को नया आयाम देती प्रसिद्ध लड़की के नाम से वायरल होता है जिससे अन्य लड़कियाँ प्रेरणा ले आगे पढ़ने के लिए अपने माँ-बाप से भी लड़ जाती है। यह लड़की अपनी मेहनत व लगन से पति का सहयोग प्राप्त कर अपने हौसलों की उड़ान भर पाई। कहानी खुशबू आज के युग में रिश्तों में पड़ रही खटास को दूर कर एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण कर रही है जिसमें सास बहू के रिश्तों में मिठास है। माँ के हाथ के खाने की खुशबू बेटे को आकर्षित करती है तो माँ भी अपनी बहू को बेटी समझ कर प्यार व दुलार करती है। संवेदनशील कहानीकार डॉ. मीना ने अपनी कहानी कार्यकर्ता के माध्यम से देश की राजनीति में दलबदलू नेताओं पर करारा व्यंग्य करते हुए जनता को उनकी हकीकत से रूबरू कराया है। संग्रह की शीर्षक कहानी तरुशिखा ग्रामीण जीवन में घर के बड़े बेटे की जिम्मेदारियाँ को बयां करती है जिसमें घर का बड़ा बेटा जीवन भर बड़ा होने के कारण अपने सपनों को मारकर परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ उठाता है लेकिन उसी के छोटे भाई जब बड़े होने पर उसे मान सम्मान नहीं देते हैं तो वह उस पीड़ा को कैसे सहन करता है यह इस कहानी के द्वारा कहानीकार ने समाज को अवगत कराया है। डॉ. मीना के इस कहानी संग्रह की अन्य कहानियाँ अतीत की यादें, कथनी और करनी, विकास की गति, ईमानदारी, बछड़े की व्यथा, चुनावी मुद्दा, देशी, भ्रष्टाचार, जादूगरी,यम के नियम, नया घर, बीजणी, एफ.डी., कड़ीली हँसी, आखिरी रात, हार और जीत, फरियादी, व्यंग्य, जंगल राज, अपनी-अपनी समझ, उपहार, भाग्य, जलसा व प्रथम पंक्ति भी मानवीय संवेदनाओं से भरी हुई है। डॉ. मीना एक भावुक व संवेदनशील कहानीकार है उनकी कहानियों को पढ़कर ही लगता है कि समाज के हर पहलू को बड़े ही अच्छे ढंग से कहानियों में पिरोया है। संवेदनशील कहानीकार डॉ. मीना ने अपनी कहानियों में अपने विचारों को बेबाकी से व्यक्त किया है। डॉ. मीना की कहानी समाज के वास्तविक रूप का ईमानदारी से दर्शन कराते हुए समाज को सही दिशा दिखाने का भरसक प्रयास करेंगी। एक सच्चे साहित्यकार का कर्तव्य है कि वह अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को दर्पण दिखाएं और यह कार्य डॉ. कांता मीना ने बखूबी किया है। तरुशिखा कहानी संग्रह में कहानीकार अपनी बात कहने में सफल रही है। उम्मीद है डॉ. मीना के इस कहानी संग्रह को पाठकों का भरपूर प्यार मिलेगा।

समीक्षक : **राजेंद्र यादव आजाद**

वरिष्ठ सहायक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंडल,
दौसा (राज.)
मो.न.: 9414271288

बालशिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता हैं।
-व. संपादक

आओ आज कसम खाएँ

आओ आज कसम खाएँ
भारत की शान बढ़ाएंगे।
वक्त पड़ा तो इसकी खातिर
हंसकर जान लुटाएंगे।
जाति-पांति के भेद भाव को
मिलकर दूर भगाएंगे।
कामचोरों और रिश्वतखोरों को उनकी जगह बताएंगे।
क्योंकि.. कितने बलिदानों से हमने आजादी पाई है
कटी बेड़ियाँ जब कितने ही वीरों ने जान गंवाई है

लोकेश कुमार, कक्षा 9,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खींया, जैसलमेर (राज.)

हम सहेलियां खास है

हम सहेलियाँ पाँच हैं
सब एक दूसरे के लिए बहुत खास है
जब हो जाए दूर तो आती न श्वास है
एक दूसरे के बिना रहते उदास हैं।
नजरों से दूर पर दिल के हमेशा पास है।
बातें सारी रखते हम राज है।

पार्वती गोस्वामी, कक्षा 9,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खींया, जैसलमेर (राज.)

शिक्षा

1. शिक्षा सभी के लिए महत्त्वपूर्ण है।
2. यह हमारे अधिकारों का ज्ञान प्रदान करती है।
3. शिक्षा सफलता की कुंजी है।
4. यह व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिए मजबूत बनाती है।
5. शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल तथा व्यक्ति के जीवन में सुधार करती है।
6. शिक्षा के बिना व्यक्ति का मानसिक विकास संभव नहीं है।
7. शिक्षा विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
8. शिक्षा हमें एक महान व शिक्षित व्यक्ति बनाती है।

शिक्षा वह आग है, जो गुलामी के कफन को जला कर राख कर देती है।

शिक्षा सबसे शक्तिशाली, हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।

दिव्यांशी शर्मा, कक्षा 12 सी, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय धौलपुर (राज.)

अंग्रेजी से मोह क्यों?

महात्मा गाँधी की अध्यक्षता में 21 जुलाई, 1946 को पुणे में शिक्षा मंत्रियों का सम्मेलन हो रहा था। बापू के रोजगार तथा शिक्षा पर तर्कपूर्ण भाषण को सुनकर सभी शिक्षा मंत्री भाव विभोर हो उठे। भाषण के बाद गाँधीजी ने कहा कि किसी को कोई शंका हो तो बेझिझक सवाल पूछ सकता है। मद्रास के शिक्षामंत्री अविनाशलिंगम चेतियार खड़े हुए और अंग्रेजी में प्रश्न पूछने लगे। बापू ने उन्हें टोकते हुए कहा मैं पहले भी कई बार हिदायत दे चुका हूँ कि हमें विदेशी भाषा अंग्रेजी का मोह छोड़कर अपने देश की भाषा हिन्दी सीख लेनी चाहिए। ये बड़े शर्म की बात है कि हम अभी तक विदेशी भाषा के गुलाम बने हुए हैं। यह सुनते ही श्री चेतियार हक्के-बक्के रह गए। उन्होंने अपने पास बैठे हुए श्री रघुकुल तिलक से अपने प्रश्नों का हिंदी में अनुवाद करवाया तब गाँधीजी ने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया। इसके बाद श्री चेतियार बापू के पास गए तथा उनसे क्षमा माँगते हुए आश्वासन दिया कि वे एक माह में हिंदी सीख लेंगे तथा फिर अंग्रेजी का प्रयोग नहीं करेंगे।

पूजा बैरवा, कक्षा–12, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कासोरिया, शाहपुरा, (राज.)

वायु

वायु शांत है अशांत भी
परन्तु इसी में सबकी जान है।
वायु से बनती बिजली,
इसी से विज्ञान है।
वायु से जीवन पेड़-पौधों का,
इसी से जीवों में जान है।
वायु के बिना धरती नहीं,
और न ही खेतों में धान है।
आजकल होता प्रदूषण,
आजकल होता प्रदूषण,
जिससे दुनिया भी परेशान है।
फैक्ट्रियों से होते प्रदूषण से,
प्रकृति को नुकसान है।
मरते हुए को वायु देती,
पुनः जीवनदान है।
इस धरती के लिए वायु,
ईश्वर का वरदान है।।

महिपाल, कक्षा 11, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ईनाणा, नागौर (राज.)

कविता निर्माण

शब्दों के साथ खेल-खेल कर
कविता का निर्माण किया।
शब्दों से शब्द निकलते हैं
ये हम ने महसूस किया।
शब्दों का ना था अच्छा ज्ञान
पर कविता का निर्माण किया
मन की आकांक्षा से निकली
प्यारी सी अनुभूति को हमने
कविता का नाम दिया...
न जाने कितनी बार किया
कविता एक मन की उड़ान है।
शब्दों के साथ स्वर मिलाकर
कविता का निर्माण किया....
कविता का एक पहलू है जो हर
वेदना को जाने यह मन की
कल्पना का करती है वर्णन
शब्दों के साथ खेल-खेल कर
कविता का निर्माण किया।

अंजली, कक्षा 12D, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय धौलपुर (राज.)

पेड

छाया हमें देते पेड़।
गर्मी दूर भगाते पेड़।।
झुककर फल हमें देते पेड़।
कभी हार न मानते पेड़।।
हमको पाठ पढ़ाते पेड़।
न हारने की याद दिलाते पेड़।।
दुश्मनों से तुम कभी न डरना।
यह बात सिखलाते पेड़।।
सर्दी गर्मी और बरसात के मौसम को।
रोज हँसते खिलते सहते पेड़।।

जोगाराम, कक्षा 7,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बेनीवालों की ढाणी,
आडेल, बाड़मेर (राज.)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

सरकारी स्कूल के 51 विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री वितरण

बीकानेर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ में शिक्षक दिवस से एक दिन पूर्व कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम माँ सरस्वती की पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम में कार्यवाहक प्रधानाचार्य मोहर सिंह मीना सलावद द्वारा कक्षा एक से 12वीं तक के 51 विद्यार्थी जो नियमित रूप से स्कूल आते हैं, अनुशासन में रहते हैं व स्कूल में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं को पाठ्य सामग्री जिनमें पेन, कॉपी, पेंसिल, ड्राइंग बुक वितरण की गई। सलावद ने बताया कि सभी विद्यार्थी पढ़-लिखकर अपना व स्कूल का नाम रोशन करें। हर महीने इसी तरह से पाठ्य सामग्री वितरण की जाएगी। सभी विद्यार्थी नियमित रूप से स्कूल आए व अपने माता-पिता व गुरुजनों की आज्ञा का पालन करें।

विद्यालय के विद्यार्थियों, स्टाफ सदस्यों ने किया वृक्षारोपण

भरतपुर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जोगीपुरा, नदबई, भरतपुर में विद्यालय के विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा विद्यालय परिसर में छायादार वृक्षारोपण किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों में राजाबाबू, खुशबू, आरुषि, भूरा, नरेश, सत्येन्द्र, राजीव, अंशु कुमार एवं भुवनेश सहित अन्यों ने वृक्षारोपण किया। स्कूल स्टाफ परिवार सदस्यों में शिक्षक-श्री अनिल कुमार शर्मा, श्री पुष्पेन्द्र सिंह, श्री प्रेमचन्द बैरवा, श्री बबलू एवं श्रीमती स्नेहलता शर्मा द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

जिला स्तरीय प्रथम शिक्षक सम्मान का आयोजन हुआ

बालोतरा–जिला स्तरीय प्रथम शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन नवकार विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय बालोतरा में आयोजित हुआ। शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर राजेंद्र विजय ने कहा कि गुरु ईश्वर के समान माना जाता है। गुरु के प्रति निष्ठा का भाव रखने से नई पीढ़ी परिमार्जित होगी। शिक्षक पर्यावरण संरक्षण का सुंदर माहौल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभावे। अभिभावकों के प्रति विश्वास

कायम रखें। शिक्षा से जागृति पैदा करें क्योंकि जड़ सिंचन से वृक्ष हरा-भरा बनकर फल देता है इस प्रकार बालकों को ज्ञान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा बालोतरा छगनलाल राठौड़ ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बालोतरा जिले में शिक्षा के नए आयाम स्थापित किए जाएँगे तथा पूर्ण निष्ठा के साथ अच्छा परिणाम दिया जाएगा। विशिष्ट अतिथि बालोतरा पंचायत समिति के प्रधान भगवत सिंह जसोल ने कहा कि माता-पिता एवं गुरु शिष्य की प्रगति को देखकर सदा प्रसन्न होते हैं। नगर पालिका बालोतरा की सभापति सुमित्रा जैन ने कहा कि देश का भाग्य निर्माता शिक्षक ही है। विशिष्ट अतिथि के रूप में ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, नवकार विद्यालय के अध्यक्ष राजेंद्र जी सालेचा, प्रधानाचार्य रेनू, पुरस्कृत शिक्षक फोरम बालोतरा बाड़मेर के जिला अध्यक्ष सालगराम परिहार उपस्थित रहे। जिला स्तर पर सम्मानित होने वाले व्याख्याता कमलेश सोलंकी, नरेंद्र कुमार, विजय कुमार तथा ब्लॉक स्तर पर सम्मानित होने वाले अनीता, रेखा शर्मा, मांगीलाल का जिला कलेक्टर एवं उपस्थित अतिथियों ने साफा पहनाकर, प्रशस्ति पत्र प्रदान कर, स्मृति चिह्न एवं माला पहनाकर सम्मानित किया। संदर्भ व्यक्ति रूपेंद्र सिंह ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर रामेश्वरी चौधरी ने किया।

राखी बनाओ-संस्कृति बचाओ प्रतियोगिता का आयोजन

झुंझुनूं–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट, झुंझुनूं में राखी बनाओ-संस्कृति बचाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। विभिन्न प्रकार की राखियाँ बनाई जो बाजार की राखियों के रंग को फीका कर रही थी। राखी बनाने की प्राचीन परंपरा व हमारी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रियंका प्रथम, कंचन द्वितीय तथा

सोनिका व सिमरन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता विद्यार्थियो को पुरस्कृत किया गया। निर्णायक की भूमिका हरिराम, शीशराम नेहरा व रियाज खान ने निभाई।

हेल्थ एंड वैलनेस कार्यक्रम के तहत मैसेंजर को बांटी टी-शर्ट

बूँदी– खटकड़ क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में हेल्थ वैलनेस कार्यक्रम के मैसेंजर विद्यार्थियों को एवं एंबेसडर शिक्षकों को डाइट बूँदी से प्राप्त टी-शर्ट, केप व बैज वितरण किए गए। विद्यालय संस्थाप्रधान जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि हेल्थ वैलनेस कार्यक्रम सरकार द्वारा विद्यालय में चिकित्सा विभाग के सहयोग से चलाया जा रहा है। जिसमें विद्यालय के दो शिक्षकों गजेंद्र कुमार राठौड़ व महेंद्र स्वामी को हेल्थ एंड वैलनेस के ब्रांड एंबेसडर बनाया गया है। ब्रांड एंबेसडर शिक्षकों के निर्देशन में कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों में 6 मैसेंजर छात्रों को प्रत्येक शनिवार को एक घंटा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता हेतु गतिविधियां एवं कार्यक्रम का आयोजन करेंगे। कक्षा 6 के छात्र रोहित मीणा व छात्रा किस्मिता मीणा, कक्षा 7 के छात्र विमलेश मीणा व छात्रा भावना मीणा, कक्षा 8 के छात्र गजेंद्र मीणा व छात्रा शिवानी मीणा को हेल्थ एवं वैलनेस मैसेंजर नियुक्त किया गया है। विद्यालय में हेल्थ एंड वैलनेस कार्यक्रम की कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कार्यक्रम को संचालित करने की विभिन्न जानकारियाँ प्रदान की गई।

भामाशाहों ने विद्यालय में दिया दान

जालोर–RK ग्रुप की प्रेरणा से सराणा गाँव के भामाशाहों ने मिलकर गाँव के रा.बा.उ.प्रा. एवं रा. उ.मा. विद्यालय में 7 तिजोरी, 15 कुर्सियाँ भेंट की है। इनकी कुल व्यय राशि 70,000/- रुपये आई है। शिक्षिका शालू मिश्रा ने बताया कि विद्यालय में कार्यालयी कामकाज में ये दोनों संसाधन काफी उपयोगी सिद्ध होंगे। शाला परिवार की ओर से भामाशाहों का बहुमान व कोटि-कोटि अभिनंदन! आपका वरद हस्त हमेशा विद्यालय पर बना रहे।

चांद पर तिरंगा मॉडल स्कूल देसूरी ने इसरो को दी बधाई

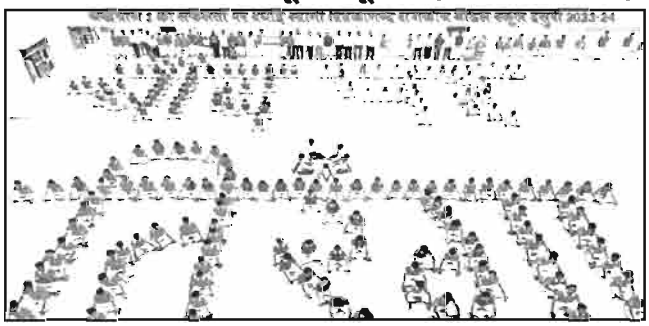

पाली–देसूरी स्थानीय विद्यालय स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक देसूरी में चंद्रयान 3 की सफलता पर विद्यार्थियों ने मानव शृंखला बनाकर चांद पर तिरंगा के रूप में एक संदेश दिया। संस्थाप्रधान श्रवण लाल ने बताया कि शनिवार नो बैग डे पर मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों ने इसरो द्वारा चन्द्रयान 3 की सफलता पर इसरो वैज्ञानिकों को शुभकामनाएं एवं धन्यवाद अर्पित किया गया। तीन सौ विद्यार्थियों ने मानव शृंखला बना कर चांद पर तिरंगा लिखा एवं शिक्षकों द्वारा चन्द्रयान 3 के बारे में जानकारी दी।

सुरक्षित स्कूल सुरक्षित राजस्थान कार्यक्रम का आयोजन

कोटा– स्थानीय विद्यालय में दिनांक 26.08.2023 को राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग के आदेशानुसार 'नो बैग डे' कार्यक्रम की विशिष्ट गतिविधि 'सुरक्षित स्कूल सुरक्षित राजस्थान' के तहत असुरक्षित स्पर्श के प्रति जागरूकता अभियान के तहत 'गुड टच-बैड टच' की जानकारी दी गई। कार्यक्रम को दो सेशन में संपन्न करवाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत संस्थाप्रधान श्रीमती ममता मीना द्वारा माँ सरस्वती की पूजा अर्चना से की गई। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी अध्यापिका मीना रोहिड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बालकों को असुरक्षित स्पर्श एवं सुरक्षित स्पर्श हमारे शरीर की इन्द्रियाँ, अच्छे-बुरे स्पर्श को कैसे पहचानें की जानकारी दी गई। आवश्यकता पड़ने पर चाइल्ड हेल्प लाइन नं. 1098 की जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अभिभावक व समस्त विद्यालय परिवार द्वारा हिस्सा लिया गया। अंत में कोमल व संदेश फिल्म दिखाई गई। संस्थाप्रधान के उद्बोधन में बच्चों को असुरक्षित स्पर्श की पहचान करने व जागरूक रहने की हिदायत दी गई। श्रीमती अर्चना बंसल द्वारा कक्षा 6 के बालकों से 'My Four body Parts' कविता द्वारा गतिविधि कराई गई।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बनीपार्क, जयपुर

❒ सुनीता मल्होत्रा

पृष्ठभूमि :- जयपुर के हेरिटेज राजकीय विद्यालय में अग्रणी बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बनीपार्क जयपुर सन 1958 से निरंतर उच्च माध्यमिक स्तर से संचालित है। महारानी स्कूल के नाम से प्रसिद्ध इस बालिका विद्यालय में अध्यनरत रही बालिकाएँ निजी क्षेत्र के साथ-साथ केंद्र व राज्य सरकारों के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च पदों पर आसीन होकर प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही है।

भामाशाहों ने करवाया नए भवन का निर्माण– इस हिंदी माध्यम बालिका विद्यालय परिसर में माननीय मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार की बजट घोषणा की क्रियान्विति के फलस्वरूप अगस्त 2022 से महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय बनीपार्क जयपुर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय कक्षा 1 से 8 तक प्रारंभ हुआ। पूर्व भवन में चल रहे हिंदी माध्यम विद्यालय के साथ इसी भवन में प्रारंभ हुए अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की तुरंत नए भवन की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए एक NGO जयपुर राउंड टेबल 233 जयपुर भामाशाह के रूप में आगे आया। इस संस्था ने स्थानीय विद्यालय परिसर में उपलब्ध खाली भूमि में एक करोड़ साठ लाख रुपए खर्च कर CCTV कैमरो से सुसज्जित 16 कमरे, दो टॉयलेट, 2 स्टाफ रूम का नया भवन मय खेल मैदान सहित दिनांक 21 जुलाई, 2023 को माननीय शिक्षा मंत्री श्री बी. डी. कल्ला, कैबिनेट मंत्री व क्षेत्रीय विधायक श्री प्रताप सिंह खाचरियावास के कर कमलों से विद्यार्थियों को अर्पित करवाया।

राउंड टेबल इंडिया की कलम से– जयपुर चैप्टर 233 की प्रोजेक्ट टीम के चिराग भसीन, अर्जुन बाहेती व अनूप नाजवानी ने बताया कि इस विद्यालय के निर्माण में पीएनजी, कोगटा फाइनेंस, आरडी बाहेती. चैरिटेबल ट्रस्ट, शिल्पा अलोय, लक्ष्मी इंडिया फिनलीज

और डायनेमिक केबल के आर्थिक सहयोग से यह भवन बनकर तैयार हुआ। राउंड टेबल इंडिया- जयपुर चैप्टर 233 ने मात्र 5 माह में यह भवन तैयार कर राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग को समर्पित किया। बनीपार्क क्षेत्र का पहला सरकारी इंग्लिश मीडियम स्कूल है जिसमें 16 कक्षाएँ, एक स्टाफ कक्ष और एक प्रधानाध्यापिका का कमरा है। इस 13000 वर्ग फुट की बिल्डिंग में सह शिक्षा का प्रावधान है, जिसमें लड़के और लड़कियाँ दोनों पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए झूले, सीसीटीवी कैमरे और अलग-अलग शौचालय की सुविधा है। इस विद्यालय के निर्माण होने से शास्त्री नगर, पानीपेच, सिंधी कैंप, जालुपुरा, चांदपोल आदि क्षेत्र के बच्चों को शिक्षा का लाभ मिलेगा।

विद्यालय को दी गई अन्य सुविधाएँ– जयपुर राउंड टेबल 233 द्वारा विद्यार्थियों के उपयोग हेतु 240 डबल सीटर फर्नीचर प्रधानाचार्य कक्ष में बड़ी टेबल एवं कुर्सी, स्टाफ रूम में एक बड़ी टेबल एवं 12 कुर्सियां, खेल मैदान में झूले एवं फिसल पट्टी स्लाइड उपलब्ध कराई गई है।

सहशैक्षिक गतिविधियाँ – विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन-अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्र पर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता, नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। हमारे विद्यालय की छात्र संसद द्वारा समय-समय पर विज्ञान, लोक क्षैत्र एवं लोक कला से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं जो स्टॉफ एवं विद्यार्थियों का सराहनीय कदम है।

नए भवन निर्माण में अन्यों के द्वारा सहयोग एवं मार्गदर्शन– इस नए भवन के निर्माण में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में सीएसआर प्रभारी श्री दिलीप परिहार सहायक निदेशक जयपुर राउंड टेबल 233 के ट्रस्टीयों के निरंतर संपर्क में रहे एवं प्रधानाचार्य स्थानीय शाला श्रीमती सुनीता मल्होत्रा को निर्देशित करते रहे। श्री दिलीप परिहार जी का अमूल्य मार्गदर्शन इस नए भवन निर्माण में रहा। इस विद्यालय भवन निर्माण में एसडीएमसी के सदस्यों द्वारा समय-समय पर सार-संभाल कर आवश्यक सहयोग भी दिया गया। स्थानीय पार्षद महोदय एवं अन्य राजनैतिक व्यक्तियों के साथ-साथ नगर निगम जयपुर का सहयोग भी प्रशंसनीय रहा।

संस्था प्रधान की कलम से– मैंने विद्यालय स्टाफ एवं एसडीएमसी के सदस्यों को साथ लेकर जयपुर राउंडटेबल 233 संस्था के ट्रस्टीयों से संपर्क कर पूर्व में प्रयासरत रहे पूर्व प्रधानाचार्य के इस पुनीत उद्देश्य को सभी के सहयोग एवं प्रेरणा से भरसक प्रयत्न कर नए

भवन निर्माण के लक्ष्य को पूर्ण करवाने में अपनी पूर्ण शक्ति, कर्तव्यनिष्ठा एवं ऊर्जा से कार्य किया।

प्री-प्राइमरी कक्षाएँ महात्मा गाँधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों के मौजूदा भवनों में तीन साल-नर्सरी, केजी1 और केजी 2 में चल रही है। इससे शिक्षा के स्तर में न केवल सुधार हुआ बल्कि राजस्थान के शैक्षिक वातावरण में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा भी पैदा हुई। इसका सीधा फायदा अभिभावकों और छात्रों को हुआ। उत्तर भारत में यह पहली पहल है।

विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालय को समर्पित इस नए भवन निर्माण में तन-मन-धन से सहयोग देने वाले सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष व्यक्तियों, सभी एसडीएमसी सदस्यों, अभिभावकों, शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों, राजनीतिक व्यक्तियों के साथ जयपुर राउंड टेबल 233 संस्था का कोटि-कोटि आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
बनी पार्क, जयपुर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-अगस्त 2023 में ₹50000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	Avinash Nagar	Govt. Senior Secondary School Haniheda (216967)	Atru	Baran	400000
2	Zipline	Shaheed Sohan Lal Yadav Govt. Senior Secondary School Jharli (219213)	Shri Madhopur	Sikar	400000
3	Disha Weaves	Shaheed Sohan Lal Yadav Govt. Senior Secondary School Jharli (219213)	Shri Madhopur	Sikar	400000
4	Mahtab Singh	Govt. Senior Secondary School Berashar Bada (503202)	Rajgarh	Churu	320000
5	Krishan Mohan Goyal	Govt. Senior Secondary School Suroth (212499)	Hindaun	Karauli	300000
6	Sun Shine Food Products I Private Limited	Govt. Senior Secondary School Gowali (215792)	Pilani	Jhunjhunu	300000
7	Vinod Kumar Rahar	Govt. Senior Secondary School Dhani Moji (215244)	Rajgarh	Churu	280000
8	Bikaner Motors Private Limited	Govt. Senior Secondary School Manota Jatan (215962)	Khetri	Jhunjhunu	200000
9	Laxmi Narayan	Govt. Senior Secondary School Lachharsar (215547)	Ratangarh	Churu	198000
10	Nandlal Toshniwal Foundation	Govt. Senior Secondary School Bakaliya (213456)	Ladnun	Nagaur	160000
11	Vinod Bhanwarlal Sharma	Govt. Senior Secondary School Dhigarla (215200)	Rajgarh	Churu	158000
12	Ajay Kumar Dayma	Govt. Senior Secondary School Bhabru (218341)	Viratnagar	Jaipur	150000
13	Accropoly Metal Industries Private Limited	Smt. Champa Devi Goyal Govt. Girls Senior Secondary School Thoi Sikar (219210)	Shri Madhopur	Sikar	144240
14	Sagarmal Sharma	Govt. Senior Secondary School Gogasar (215590)	Ratangarh	Churu	120000
15	Bhagirath Ram Choudhary And Raju Devi	Govt. Upper Primary School Admalsar (476792)	Sardarshahar	Churu	100000
16	Arora Textiles Pvt Ltd	Govt. Senior Secondary School Manota Jatan (215962)	Khetri	Jhunjhunu	100000
17	Fule Singh Burdak	Govt. Senior Secondary School Khandwa (215359)	Churu	Churu	100000
18	Saroopa Ram	Govt. Upper Primary School Bhodon Ki Dhani Dhanol (474043)	Raniwara	Jalor	100000
19	Bikaner Ceramics Pvt Ltd	Govt. Senior Secondary School Kidhwana (215882)	Surajgarh	Jhunjhunu	100000
20	Honey Sweets Pvt Ltd	Govt. Senior Secondary School Gowali (215792)	Pilani	Jhunjhunu	100000
21	Manish Kumar So Sh Chhotu Ram	Shaheed Rekha Ram Govt. Senior Secondary School Aakawa (213288)	Dhod	Sikar	100000
22	Vimla	Smt Mehtab Devi Mishrimal Agarwal Gsss Gandhipura Balotra	Balotra	Barmer	100000
23	Kothari Woollen Pvt Ltd	Govt. Senior Secondary School Udamandi (215924)	Buhana	Jhunjhunu	100000
24	Shree Woollen Industries	Govt. Senior Secondary School Dumoli Kalan (215936)	Singhana	Jhunjhunu	100000
25	R R Minerals	Saheed Bhoop Singh Govt S.s.s. Pacheri Chhoti Gsss Pacheri Chhoti	Singhana	Jhunjhunu	100000
26	Prem Panwar	Smt Mehtab Devi Mishrimal Agarwal Gsss Gandhipura Balotra	Balotra	Barmer	100000
27	Mahesh Suppliers India Private Limited	Govt. Senior Secondary School Gujarwas (215905)	Singhana	Jhunjhunu	100000

28	Dgt Royalty	Govt. Senior Secondary School Singhana (215903)	Singhana	Jhunjhunu	100000
29	Mukesh Agarwal	Govt. Senior Secondary School Raipur Ghardana (215896)	Singhana	Jhunjhunu	100000
30	Kamlesh Ranwa	Shahid Omveer Singh Govt. Senior Secondary School Haminpur (215833)	Pilani	Jhunjhunu	99000
31	Mala Ram	Govt. Primary School Indira Aawas Bhawanda (418765)	Khinwsar	Nagaur	98000
32	Rajendra Singh Chundawat	Seth Takhatmal Kachchhara Gsss English Medium Amet	Amet	Rajsamand	80000
33	Devi Sports	Govt. Senior Secondary School Near Ashapuri Mataji Temple Modran Station (213761)	Bhinmal	Jalor	68000
34	Anand Kumar	Govt. Senior Secondary School Boyal Pali (221167)	Sojat	Pali	65000
35	Pawan Kumar Jangir	Govt. Senior Secondary School Jogalsar (215515)	Bidasar	Churu	63800
36	Noranglal	Govt. Senior Secondary School Inyara (215521)	Bidasar	Churu	60000
37	Amara Ram	Mahatma Gandhi Govt. School Darguda (405182)	Panyla Kla	Barmer	57000
38	Rajendra Singh Chundawat	Seth Takhatmal Kachchhara Gsss English Medium Amet	Amet	Rajsamand	55000
39	Laxmi Narayan	Govt. Senior Secondary School Lachharsar (215547)	Ratangarh	Churu	53000
40	Ramnarayan Meena	Govt. Senior Secondary School Itawa (224446)	Itawa	Kota	52000
41	Rajesh Bairwa	Govt. Upper Primary School Nai Arwad (502654)	Shahpura	Bhilwara	52000
42	Mangi Lal Dhetarwal	Govt. Senior Secondary School Ghumanda (215578)	Ratangarh	Churu	51000
43	Rajesh Gochar	Govt. Upper Primary School Mandlyahedi (492874)	Sangod	Kota	51000
44	Girdhari Lal Jat	Govt. Senior Secondary School Luniyawas (218501)	Kishangarh Renwal	Jaipur	51000
45	Mahesh Chandra Dwivedi	Govt. Senior Secondary School Lohariya (223879)	Garhi	Banswara	51000
46	Nawla Ram	Mahatma Gandhi Govt. School Darguda (405182)	Panyla Kla	Barmer	51000
47	Sandeep Kumar Verma	Govt. Senior Secondary School Jasasar (215385)	Churu	Churu	51000
48	Phoola Ram Bajiya	Govt. Senior Secondary School Heerwas (505662)	Dantaramgarh	Sikar	51000
49	Anita Rathore	Govt. Senior Secondary School Khanpur (217882)	Khandar	Sawaimadhopur	50500
50	Jagga Ram	Govt. Senior Secondary School Senani (220033)	Mundwa	Nagaur	50500
51	Rajni Shekhawat	Mahatma Gandhi Govt. School Bjs Jodhpur (220398)	Jodhpur City	Jodhpur	50000
52	Pramod Kumar Pareek	Govt. Senior Secondary School Dayalpura (219772)	Deedwana	Nagaur	50000
53	Om Prakash Dhaka	Govt. Senior Secondary School Jato Ki Dhani Narayanpura Bap Jodhpur (220152)	Ghantiyali	Jodhpur	50000
54	Raju Ram Khadaw	Govt. Primary School Indira Aawas Bhawanda (418765)	Khinwsar	Nagaur	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–अगस्त 2023 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	354	3426857
2	JHUNJHUNU	120	1958230
3	SIKAR	288	1406218
4	NAGAUR	632	739597
5	BARAN	167	571999
6	BARMER	327	531625
7	JODHPUR	240	490390
8	KARAULI	156	379058
9	JAIPUR	311	368931
10	RAJSAMAND	854	365990
11	JALOR	278	356658
12	DUNGARPUR	1010	320033
13	BANSWARA	89	305214
14	KOTA	241	272872
15	JAISALMER	513	270553
16	CHITTAURGARH	385	219041
17	UDAIPUR	286	184077
18	JHALAWAR	614	167243
19	GANGANAGAR	269	159365
20	PALI	320	158962
21	BHILWARA	339	151129
22	SAWAIMADHOPUR	104	136683
23	HANUMANGARH	217	127736
24	BIKANER	205	123578
25	PRATAPGARH	174	93010
26	AJMER	341	79371
27	BUNDI	308	76214
28	DHAULPUR	49	70954
29	TONK	88	68089
30	BHARATPUR	168	52599
31	ALWAR	255	41431
32	DAUSA	111	35802
33	SIROHI	84	4243
	Total	**9897**	**13713752**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थानों/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए एवं Adopt to school में 14 राजकीय विद्यालय को गोद लिया गया। माह अगस्त 2023 में 13 करोड़ 21 लाख से अधिक की लागत से कुल 12 Projects स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/ व्यय (लाख में)
1	श्री सुरेन्द्र कुमार जैन	1332	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लखोला, सहाड़ा, भीलवाड़ा में भवन, कक्षा कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं के शौचालय, विद्युत सुविधा/इलेक्ट्रिक फिटिंग, चारदीवारी, एचएम कक्ष, रैंप, अन्य कक्ष, कंप्यूटर कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, अतिरिक्त कक्षा कक्ष (9-12), स्टाफ कक्ष, खेल/पाठ्येतर गतिविधि आदि का कार्य।	361.75
2	श्री प्रतापाराम चौधरी	1399	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मोडरा की ढाणी नं.1, भीनमाल, जालोर में कक्षा-कक्ष (1-8) का कार्य	2.75
3	श्री धीरज प्रकाश	1398	सेठ मुकनचंद बलिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली में बालकनी सहित एक क्लास रूम का नवीनीकरण का कार्य	1.50
4	श्री रतनलाल कंवर लाल पाटनी फाउण्डेशन	1346	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खण्डाच, किशनगढ़, अजमेर मे भवन, कक्षा-कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय, बिजली की सुविधा /इलेक्ट्रिक फिटिंग, पीने का पानी, किचन शेड, एचएम कक्ष, रैंप, दिव्यांग शौचालय, वर्षा जल संचयन, हान आदि का निर्माण कार्य	250.00
5	एसएम सहगल फाउण्डेशन	1397	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रोजा का बास, उमरैन, अलवर मेंकक्षा-कक्ष(1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, बिजली सुविधा/इलेक्ट्रिक फिटिंग, पीने का पानी, चारदीवारी, किचन शेड, रैंप, खेल का मैदान विकास, वर्षा जल संचयन, फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत, बाला/एबीएल गतिविधियाँ, सौर ऊर्जा पैनल, रेन आदि का निर्माण कार्य	51.40
6	एसएम सहगल फाउण्डेशन	1396	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, करोली, किशनगढ़ बास, अलवर में छात्र -छात्राओं का शौचालय, बिजली की सुविधा/इलेक्ट्रिक फिटिंग, पीने का पानी, चारदीवारी, खेल का मैदान विकास, वर्षा जल संचयन, फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत, बाला /एबीएल एसी आदि का निर्माण कार्य	47.50
7	श्री गुलाब सिंह	1394	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कलेवा, पटोदी, बाड़मेर, में अतिरिक्त कक्षा-कक्ष (1-9) का निर्माण कार्य।	90.00
8	गीतांजली चैरिटेबल ट्रस्ट	1383	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, माउंट आबू, आबू रोड, सिरोही में भवन, कक्षा कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, चारदीवारी, एचएम कक्ष, रैंप, अन्य कमरे, कंप्यूटर कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, प्रमुख मरम्मत, कंप्यूटर लैब/उपकरण, स्टाफ कक्ष, कक्ष का नवीनीकरण का कार्य	425.00
9	श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लि.	1355	कस्तुरबा गाँधी आवासीय छात्रावास मुसारी, तिजारा, अलवर में ऑनग्रिड सॉलर सिस्टम, कूलर, सॉलर वाटर हीटर इत्यादि की व्यवस्था का कार्य	4.00
10	रिद्धी सिद्धी होम डवलपर्स प्रा.लि.	1350	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं.11, श्रीगंगानगर में कक्षा-कक्ष (1-8) का निर्माण कार्य	45.00
11	श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लि.	1339	अलवर के तीन राजकीय विद्यालयों में स्कूल यूनिफॉर्म, ब्लेजर, स्कॉलरशिप, पंखे, सिविल कार्य, स्कूल बैग्स, कम्प्यूटर क्लासेज, स्टेशनरी, प्रोजेक्ट, इत्यादि से सम्बधित कार्य	37.3
12	श्री बाबूराम	1333	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय समूजा, समदड़ी, बाड़मेर में पीने के पानी की व्यवस्था का कार्य	5.25
			कुल राशि	**1321.45**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : अक्टूबर, 2023

पायल, कौशल्या एवं सोहनी,
श्रीमती राधा राउमावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

हेमंत वैष्णव, आकाश वैष्णव एवं विजेन्द्र,
श्रीमती राधा राउमावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

सोनिका,
राउमावि. बाडेट, झुंझुनूं

कमलेश दमामी,
राउमावि. कासोरिया, शाहपुरा

मूली,
राउमावि. मोतीगढ़, अनूपगढ़

अनुष्का सैनी,
राउप्रावि बासबूरिया, कोटपूतली-बहरोड़

प्रकाश सुथार,
राउमावि. होडू, बालोतरा

पोकरा राम,
राउमावि. होडू, बालोतरा

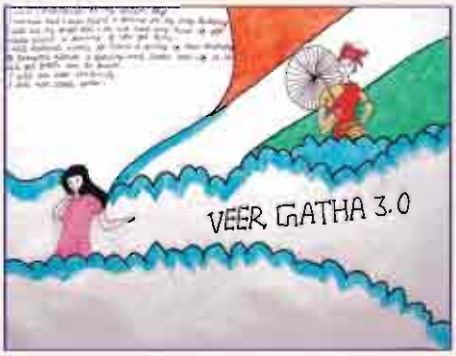

रेशमी एवं राधा,
राउमावि. होडू, बालोतरा

ज्योति एवं कविता,
राउमावि. होडू, बालोतरा

लाभु राम एवं प्रभु राम,
राउमावि. होडू, बालोतरा

पवन गोयल,
राउमावि. होडू, बालोतरा

बाल शिविरा : अक्टूबर, 2023

ज्योति बोहरा, राउमावि. रामनेर ढाणी, अजमेर

कंचन,
राउमावि. बाडेट, झुंझुनूं

पूजा वैष्णव,
राउमावि. बिराटियाँ खुर्द, ब्यावर

ज्योति एवं रविना,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

राधा,
राउप्रावि. बैनिवालो की ढाणी, बाड़मेर

निर्मला,
राउमावि. कांसेडा नावां, डीडवाना-कुचामन

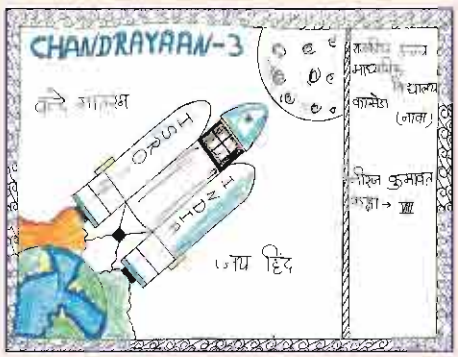

नीरज कुमावत,
राउमावि. कांसेड़ा नावां, डीडवाना-कुचामन

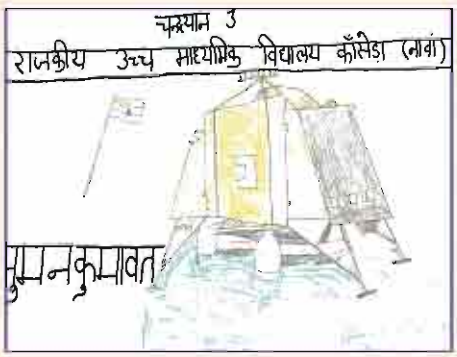

सुमन कुमावत,
राउमावि. कांसेड़ा नावां, डीडवाना-कुचामन

घनश्याम,
राउमावि. कांसेडा नावां, डीडवाना-कुचामन

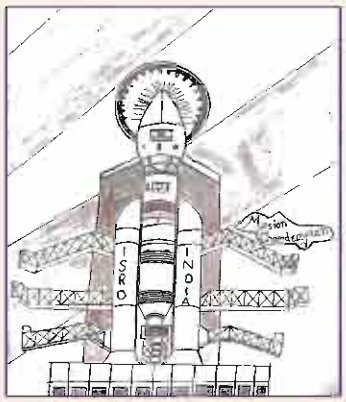

साक्षी, राउमावि. कांसेडा नावां,
डीडवाना-कुचामन

सूरज, राउमावि. कांसेडा नावां,
डीडवाना-कुचामन

अंकित, राउमावि. कांसेडा नावां,
डीडवाना-कुचामन

मीनाक्षी कंवर,
राउमावि. मोतीगढ़, अनूपगढ़

बिड़ला सभागार जयपुर में आयोजित 27वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2023 कार्यक्रम की झलकियाँ

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2023 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2023 के कार्यक्रम की झलकियाँ

कार्यक्रम स्थल : बिड़ला सभागार, जयपुर